राष्ट्रीय दैनिक

प्रात·किरण

पटना एवं दिल्ली से प्रकाशित

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

हर खबर पर पकड़

11 डब्ल्यूएफआई से सस्पेंड होने के बाद...

रिपब्लिकन पार्टी का बाइडन पर... 12

वर्ष : 11 | अंक : 259 | पटना, गुरुवार, 01 फरवरी, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

अधिकतम तापमान 16°C

न्यूनतम तापमान 10°C

बाजार

सोना 64,690

चांदी 79,800

सेंसेक्स 71,752

निफ्टी 21,725

संक्षिप्त खबरें

सभापति ने राज्यसभा के 11 सदस्यों का निलंबन किया रद्द

नई दिल्ली। संसद के बजट सत्र शुरू होने के साथ ही सदन में 11 सदस्यों के निलंबन को लेकर विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट बुधवार को पेश की गयी जिनमें इनको दोषी बताया गया है, लेकिन सभापति जगदीप धनखड़ ने अपने अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए इसके निलंबन को रद्द कर दिया। सदन की कार्यवाही शुरू होने पर विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट पेश की गयी जिसमें इन सदस्यों को विशेषाधिकार के हनन और सदन की अवमानना का दोषी बताया गया है। सभापति ने समिति की सिफारिश के बाद नियम 202 और 266 के तहत अपने अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए सभी 11 सदस्यों का निलंबन रद्द कर दिया और उन्हें सदन की कार्यवाही में शामिल होने की अनुमति दे दी।

तेजस्वी से जेड प्लस श्रेणी की सुरक्षा वापस ली गई

पटना। नई सरकार के गठन के बाद भाजपा के प्रमुख नेताओं की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। वहीं, राजद नेता एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव की सुरक्षा घटा दी गई है। तेजस्वी यादव को उपमुख्यमंत्री रहते गृह विभाग ने जेड प्लस श्रेणी की सुरक्षा दी थी जिसे हटा दिया गया है। अब इसकी जगह तेजस्वी को मंत्रीगण को दी जाने वाली सुरक्षा दी जाएगी। गृह विभाग की विशेष शाखा ने इससे जुड़ा आदेश बुधवार को जारी कर दिया। राज्य के विशिष्ट व्यक्तियों के सुरक्षा वर्गीकरण को लेकर हुई राज्य सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। इसमें सारण के सांसद राजीव प्रताप रुडी को भी राज्य सरकार के स्तर से जेड श्रेणी की सुरक्षा देने का निर्णय लिया गया है। इसके पूर्व सांसद को केंद्र सरकार के स्तर से जेड श्रेणी की सुरक्षा मिली हुई थी। इसमें केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की भी प्रतिनियुक्ति होती है। इसके अलावा, राज्य दोनों नए उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा की सुरक्षा भी जेड प्लस कर दी गई है। गृह विभाग ने नेताओं को मिलने वाली धमकी एवं अन्य रिपोर्ट के आधार पर जेड प्लस श्रेणी की सुरक्षा देने का निर्णय लिया है।

बारामूला में एक वाहन खाई में गिरा, सात की मौत

बारामूला। जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले में बुधवार को एक वाहन के सड़क से फिसलकर गहरी खाई में गिर जाने से सात यात्रियों की मौत हो गयी। पुलिस ने यह जानकारी दी। उसने बताया कि उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले में उरी के बोनियार इलाके में एक यात्री वाहन सड़क से फिसलकर गहरी खाई में जा गिरा। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (यातायात ग्रामीण-कश्मीर) रवींद्र पॉल सिंह ने बताया कि इस हादसे में सात लोगों की जान चली गयी जबकि सात अन्य घायल हो गये।

केरल जनपक्षम सेकुलर का भाजपा में विलय

नई दिल्ली। केरल के एक प्रतिष्ठित राजनीतिक दल केरल जनपक्षम सेकुलर ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी में विलय कर लिया। भाजपा के केंद्रीय कार्यालय में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव राधामोहन अग्रवाल, केरल के प्रभारी प्रकाश जावड़ेकर और केंद्रीय मंत्री वी मुरलीधरन एवं राजीव चंद्रशेखर ने केरल जनपक्षम के अध्यक्ष पी सी जॉर्ज, पार्टी सचिव जॉर्ज जोसेफ और कोट्टायम जिला पंचायत के सदस्य शौन जॉर्ज के औपचारिक रूप से भाजपा में शामिल होने पर उनका स्वागत किया।

सदियों के इंतजार के बाद अयोध्या में राम मंदिर का सपना सच हुआ : मुर्मू

राष्ट्रपति ने बजट सत्र के पहले दिन संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को किया संबोधित

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को कहा कि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की आकांक्षा सदियों से थी जो अब पूरी हुई है। उन्होंने बजट सत्र के पहले दिन संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए राम मंदिर के निर्माण का उल्लेख किया। मुर्मू ने कहा, ह्यह्यराम मंदिर की अकांक्षा सदियों से थी, आज सच हुई है। उनकी इस टिप्पणी पर सदस्यों ने मेजें थपथपाईं। राम मंदिर में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह गत 22 जनवरी को संपन्न हुआ। मुर्मू ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी किए जाने, औपनिवेशिक आपराधिक कानूनों के स्थान पर नए कानून बनाए जाए, नारी वंदन अधिनियम और सरकार के कई अन्य कदमों का उल्लेख किया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि दुनिया भर में गंभीर संकटों के बीच भारत सबसे तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था है और लगातार पिछली दो तिमाही में देश की विकास दर साढ़े प्रतिशत रही। लोकसभा एवं राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं को आरक्षण देने के प्रावधान वाला कानून पारित होने का उल्लेख करते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार

को घोषणा की कि सरकार परीक्षा में होने वाली गड़बड़ी को लेकर युवाओं की चिंताओं से अवगत है और इसे रोकने के लिए एक कानून बनाएगी। राष्ट्रपति ने बजट सत्र के पहले दिन लोकसभा एवं राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए यह बात कही।

उन्होंने नए संसद भवन में पहला संबोधन देते हुए कहा कि यहां एक भारत, श्रेष्ठ भारत की महक है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में गंभीर संकटों के बीच भारत सबसे तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था है और लगातार पिछली दो तिमाही में देश की विकास दर साढ़े प्रतिशत रही। उन्होंने कहा कि भारत को पहले पांच सबसे कमजोर अर्थव्यवस्थाओं में शामिल किया जाता था जो अब दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। राष्ट्रपति ने सरकार की प्राथमिकताओं का जिक्र करते हुए कहा कि रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म को सरकार ने लगातार जारी रखा है। उन्होंने महिला आरक्षण कानून पारित होने का उल्लेख करते हुए कहा मैं नारी शक्ति वंदन अधिनियम को पारित करने के लिए सदस्यों का अभिवादन करती हूं, यह मेरी सरकार के महिला नीत विकास के संकल्प को मजबूत करता है। इससे पहले लोकसभा एवं राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करने के लिए राष्ट्रपति जब नए संसद भवन में पहुंचीं तो उनके आगे सेंगोल को लेकर चला जा रहा था। उनके पीछे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चल रहे थे।

मुख्यमंत्री ने आधुनिक सुविधाओं से लैश राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र का किया उद्घाटन

सूबे के विकास के लिए रात-दिन कर रहे हैं काम : सीएम नीतीश

● बोलें- बहाली व जातीय गणना पर बेकार में कोई ले रहा क्रेडिट

प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोग पूरे बिहार के विकास के लिए रात-दिन काम कर रहे हैं। आपलोगों से आग्रह है कि बिहार में हो रहे विकास कार्यों को प्रचारित-प्रसारित करिए। मुख्यमंत्री बुधवार को आधुनिक सुविधाओं से लैश राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र का उद्घाटन करने के बाद पत्रकारों से बातचीत की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने बहाली का काम भी किया है। यह सब सात निश्चय 2 में हुआ है। पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव कह रहे हैं कि हमारे 17 महीने की सरकार उनके 17 साल की सरकार पर भारी है, इसपर मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सब बेकार की बातें हैं। पहले कितने लोगों को रोजगार मिलता था ? पहले पढ़ाई का स्तर क्या था ? वर्ष 2005 से पहले के हालात को आपलोग भूल गए, इनलोगों का राज जब था तो क्या होता था, शाम के वक्त घर से कोई निकलता था ? पहले यहां कोई विकास कार्य नहीं होता था जब हम आए तभी अच्छे और बड़े भवनों का निर्माण कार्य शुरू करवाया। लोगों को इलाज के लिए सारी व्यवस्थाएं की गई। अच्छी सड़कों और पुल-पुलियों का निर्माण कार्य शुरू हुआ। जब हम सांसद थे और केंद्र में मंत्री थे तब 12-12 घंटे अपने इलाके में घूमते थे लेकिन सड़कें खराब रहने के कारण पैदल चलना पड़ता था लेकिन अब यह स्थिति नहीं है। अब लोग गाड़ियों पर बैठकर सुविधापूर्वक आवागमन कर रहे हैं। हमलोगों ने गांवों में पक्की गली और नाली का निर्माण करवाया। सब काम मेरा करवाया हुआ है। कुछ

लोगों को केवल पब्लिसिटी चाहिए। पहले कहीं कोई बहाली होती थी।

गठबंधन में मेरी बात नहीं मानी गई : इंडिया गठबंधन से संबंधित पत्रकारों के सवाल पर कहा कि हम तो नाम भी कुछ दूसरा कह रहे थे लेकिन मेरी बात नहीं मानी गई। वे लोग अपने मन से नाम रख दिए। गठबंधन में मेरे कहने पर कोई काम नहीं हो रहा था। आपलोगों को उसकी हालत पता ही है। आज तक उस गठबंधन में सीटों को लेकर फैसला नहीं हो पाया। कौन कहां से चुनाव लड़ेगा इन सब पर कोई चर्चा नहीं। तब हमने गठबंधन छोड़ने का फैसला लिया। जिनके साथ हम पहले थे अब फिर से वहां आ गए हैं। अब सब दिन हम इधर ही रहेंगे। हम केवल विकास के काम में लगे रहते हैं और आगे भी लगे रहेंगे।

9 पार्टियों की बैठक में जातीय गणना पर निर्णय : कांग्रेस नेता राहुल गांधी के कहने पर जाति आधारित गणना करवाई, इसपर मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सब फालतू की बात है। हमने 9 पार्टियों की सामूहिक बैठक में यह निर्णय लिया था। वर्ष 2019 और वर्ष 2020 में हमने बिहार विधानसभा और बिहार विधान परिषद् में भी जाति आधारित गणना की बात कही थी। इसके बाद वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने गए थे। बाद में अपने स्तर पर हमने इसे करवाया। यह सबकुछ मेरा किया हुआ है, बेकार में इसका क्रेडिट कोई ले रहा है।

12 फरवरी से बजट सत्र : 10 फरवरी को सदन में राज्यपाल का अभिभाषण होगा और उसी दिन बहुमत सिद्ध किया जाएगा फिर 12 फरवरी से बजट सत्र चलेगा। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर ईडी का शिकंजा कसने के पत्रकारों के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि उनपर चार्जेज तो बहुत दिन पहले से है, इसपर जांच स्वाभाविक है।

ये रहें मौजूद : इस अवसर पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ उदयकांत, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव आमिर सुबहानी, पुलिस महानिदेशक आरएस भट्टी, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य पीएन राय, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य कौशल किशोर मिश्र, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य मनीष कुमार वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव सह गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, आपदा प्रबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, अपर पुलिस महानिदेशक (मुख्यालय) जे एस गंगवार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, मुख्यमंत्री सचिवालय के विशेष सचिव चंद्रशेखर सिंह सहित अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

आपदा कार्यों का अब और बेहतर ढंग से होगा निष्पादन

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बुधवार को सरदार पटेल भवन में आधुनिक सुविधाओं से लैस राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र का शिलापट्ट अनावरण कर उद्घाटन किया तथा निर्णय समर्थन प्रणाली का रिमोट के माध्यम से शुभारंभ किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि आज इस व्यवस्था की शुरूआत होने से मुझे काफी खुशी हुई है। अब आपदा कार्यों का और बेहतर ढंग से समन्वय के साथ निष्पादन किया जा सकेगा। इसके बाद मुख्यमंत्री बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कार्यालय गए और वहां की व्यवस्थाओं का भी निरीक्षण किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कार्यों की समीक्षा की।

समीक्षा के दौरान बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ उदयकांत ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अद्यतन कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आईआईटी पटना के सहयोग से एक अलर्टिंग डिवाइस विकसित किया गया है, जो दुनिया में अनूठा है।

इसके माध्यम से खेत में कार्य करनेवाले मजदूरों एवं बाहर निकलनेवाले व्यक्ति इस डिवाइस को अपने शरीर पर धारण करेंगे तो 30 मिनट पहले ही उन्हें आपदा की सूचना मिलने लगेगी, जिससे वे सतर्क हो जाएंगे। यह डिवाइस शरीर की ऊर्जा से ही चार्ज हो सकेगा। बिहार मौसम सेवा केन्द्र के सहयोग से सिर्फ वज्रपात ही नहीं अपितु बाढ़, अत्यधिक गर्मी यानी लू और शीतलहर जैसे आपदाओं भी यह पूर्व आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने पेंडेंट की शक्ल के इस डिवाइस का नाम नीत, तीव्र एवं शक्तिशाली जीवन सुरक्षा कवच (नीतीश) होगा। समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और आपदा प्रबंधन विभाग आपदा कार्यों का बेहतर ढंग से निष्पादन कर रहा है। दोनों आपसी समन्वय बनाकर कार्य करते रहें। जो भी नवीनतम कार्य किए जा रहे हैं उसे आपस में साझा करें ताकि दोनों को इसका लाभ मिल सके। जो भी नये-नये डिवाइस और तकनीक का प्रयोग हो रहा है उसके संबंध में लोगों को जागरूक करते रहें। उन्होंने कहा कि केंद्र में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में जब हम केंद्रीय कृषि मंत्री थे उस दौरान आपदा प्रबंधन के कार्यों की शुरूआत कराई थी। राज्य में जनता ने जब सेवा करने का मौका दिया तब से यहां आपदा प्रबंधन को लेकर कई बेहतर और जरूरी कार्य किए गए हैं। आपदा के दौरान एक-एक कार्यों की बेहतर ढंग से निगरानी करते रहें।

इससे पहले आपदा प्रबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने मुख्यमंत्री को बताया कि इस आधुनिकीकृत व्यवस्था से सभी जिला आपातकालीन संचालन केंद्र से एक साथ त्वरित सूचना का आदान-प्रदान हो सकेगा। निर्णय समर्थन प्रणाली की शुरूआत होने से आपदा की स्थिति में अंतर्विभागीय समन्वय और बेहतर होगा, संसाधनों का पूर्वानुमान लगाकर आपदा कार्यों का बेहतर ढंग से निष्पादन हो सकेगा।

बजट सत्र का लाभ उठाकर सकारात्मक फुटप्रिंट छोड़ें सांसद : पीएम मोदी

पीएम ने संसद भवन में पत्रकारों से की बातचीत

● पीएम बोलें- नई सरकार का पूर्ण बजट हम ही लेकर आएंगे

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को परंपरागत तौर पर संसद के सत्र के प्रारंभ के पूर्व दिए जाने वाले अपने वक्तव्य में सभी सांसदों से बजट सत्र के इस अवसर का लाभ उठाकर सकारात्मक फुटप्रिंट छोड़ने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह समय पश्चाताप का है। संसद भवन प्रांगण में पत्रकारों से बातचीत में बजट सत्र शुरू होने से पूर्व प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जिन लोगों को हंगामा करने और संवैधानिक मूल्यों को गिराने की आदत है, उन सभी सांसदों को इस आखिरी सत्र में आत्मचिंतन करना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि चुनाव के पहले अंतरिम बजट पेश करने की परंपरा रही है। इसलिए हम भी परंपरा का निर्वहन करेंगे। उन्होंने कहा कि नई सरकार बनने के बाद पूर्ण बजट भी हम ही लेकर आएंगे। अपने संबोधन की शुरूआत और समापन प्रधानमंत्री ने राम-राम से की। उन्होंने कहा कि जब चुनाव का समय निकट होता है तो आम तौर पर पूर्ण बजट नहीं रखा जाता है। उन्होंने विश्वास जताया कि नई सरकार बनने के बाद उनके नेतृत्व में सरकार पूर्ण बजट लेकर आएगी। आगामी संसदीय चुनावों से पहले यह वर्तमान लोकसभा का आखिरी सत्र है। इस सत्र की शुरूआत संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक से होगी, जिसे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू संबोधित करेंगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि नए संसद भवन में जो पहला सत्र हुआ था उसके आखिर में नारी शक्ति वंदन विधेयक पारित हुआ तथा उसके बाद 26 जनवरी को भी देश ने कर्तव्य पथ पर नारी शक्ति के सामर्थ्य, शौर्य और संकल्पशक्ति को अनुभव किया। उन्होंने कहा कि आज बजट सत्र आरंभ हो रहा है जिसमें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का मार्गदर्शन मिलेगा और बृहस्पतिवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा अंतरिम बजट पेश किया जाएगा। उन्होंने कहा कि एक प्रकार से यह नारी शक्ति के साक्षात्कार का पर्व है। प्रधानमंत्री ने कहा कि गत 10 वर्षों में जिसको जो रास्ता सूझा, उस आधार पर सबने संसद में अपना-अपना कार्य किया। उन्होंने कहा, लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा कि जिनका आदतन हुड़दंग करने का स्वभाव बन गया है, जो आदतन लोकतांत्रिक मूल्यों का चीरहरण करते हैं, ऐसे सभी सांसद आज जब आखिरी सत्र में मिल रहे हैं तो यह आत्मनिरीक्षण जरूर करें कि 10 साल में उन्होंने जो किया, वह उनके संसदीय क्षेत्र में भी किसी को याद नहीं होगा कि उन्होंने इतना हुड़दंग मचाया। मोदी ने कहा कि जिन्होंने उत्तम विचारों से सदन को लाभान्वित किया होगा, उनको बहुत बड़ा वर्ग आज भी याद करता होगा। उन्होंने कहा, आने वाले दिनों में भी जब सदन की चचाएं कोई देखेगा, तो उनका एक एक शब्द इतिहास की तारीख बनकर उजागर होगा।

फैसला वाराणसी जिला अदालत का फैसला हिन्दू पक्ष में खुशी का माहौल

ज्ञानवापी केस में बड़ा फैसला, हिंदू पक्ष को मिला पूजा का अधिकार

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। ज्ञानवापी केस में बड़ा फैसला आया है। यह फैसला हिंदू पक्ष में सुनाया गया है। हिंदू पक्ष को ज्ञानवापी परिसर स्थित व्यासजी के तहखाना में पूजा का अधिकार मिल गया है। वाराणसी कोर्ट ने यह फैसला सुनाया। ज्ञानवापी स्थित व्यासजी के तहखाने में पूजा किए संबंधी आवेदन पर वाराणसी के जिला जज डॉ अजय कृष्ण विश्वेश की अदालत में मंगलवार को हिन्दू और मुस्लिम दोनों पक्ष की तरफ से बहस पूरी कर ली गई थी। अदालत ने इस प्रकरण में बुधवार को अपना आदेश सुनाया। तहखाने में पूजा करने की अनुमति मिल गई है। जिला जज ने अपने आदेश में कहा है कि विश्वनाथ मंदिर के पुजारियों से पूजा कराई जाए बैरिकेडिंग हटाने की व्यवस्था की जाए। याचिका की सोमनाथ व्यास जी के नाती शैलेन्द्र पाठक ने तहखाने में पूजा पाठ की इजाजत मांगी थी। 17 जनवरी को व्यास जी के तहखाने को जिला प्रशासन ने कोर्ट

के आदेश से अपने नियंत्रण में ले लिया था। एएसआई सर्वे कार्रवाई के दौरान तहखाने की साफ-सफाई हुई थी। वाराणसी की जिला अदालत के जज ने कहा है कि जो व्यास जी का तहखाना है, अब उसके कस्टोडियन वाराणसी के जिला मजिस्ट्रेट हो गए हैं, इसीलिए विश्वनाथ मंदिर के जो पुजारी हैं वह उस तहखाना के साफ-सफाई करवाएंगे। वहां जो बैरिकेडिंग लगी हुई है, उस बैरिकेडिंग को हटाएंगे और फिर वाराणसी मंदिर के पुजारी ब्यास तहखाने के अंदर नियमित रूप से पूजा करेंगे। वाराणसी कोर्ट ने हिंदू पक्ष और मस्जिद पक्ष की तरफ से इंतजामिया कमेटी की बहस पहले ही सुन ली थी। बुधवार को दोपहर बाद जैसे ही कोर्ट बैठी, सबसे पहले उन्होंने फैसला सुनाया कि 1993 तक जो पूजा हो रही थी ज्ञानवापी परिसर में व्यास जी के तहखाना कि उसमें पूजा करने का जो अधिकार मांगा गया था, उस अधिकार को उन्होंने हिंदू पक्ष को दे दिया है। वाराणसी कोर्ट ने यह फैसला सुनाया है कि वह पूजा का अधिकार सोमनाथ व्यास के परिवार को देते हैं। सोमनाथ के नाती शैलेंद्र पाठक ने इस मामले में अपील की थी और इसी पर फैसला सुना दिया गया है यानी पूजा का अधिकार व्यास परिवार को मिल गया है। व्यास जी का जो परिवार है, वह 1551 से सेवाएं दे रहा था। 1992 में जब उत्तर प्रदेश में बाबरी मस्जिद का विध्वंस हुआ, उसके बाद वहां की राज्य सरकार ने मौखिक आदेश एक जारी करते हुए व्यास जी के दक्षिणी तहखाने पर रोक लगा दी थी। हाल ही में उन्होंने जो याचिका दाखिल की उसमें सीधे तौर पर उन्होंने पूजा अर्चना की मांग की थी। अंजुमन इंतजामिया कमेटी की तरफ से वकील ने कहा कि हमने इसका विरोध किया था।

हेमंत सोरेन को ईडी ने किया गिरफ्तार, दिया इस्तीफा

● पत्नी चंपई सोरेन होगी झारखंड के नए मुख्यमंत्री

प्रात : किरण/एजेंसी

रांची। मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच के तहत प्रवर्तन निदेशालय ने रांची में प्रदेश के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को हिरासत में ले लिया है। इससे पहले ईडी ने सोरेन से घंटों तक पूछताछ की। करीब सात घंटे तक पूछताछ के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इससे पहले झारखंड में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस्तीफा दे दिया है। वहीं, चंपई सोरेन अब झारखंड के नए मुख्यमंत्री होंगे। वहीं, इससे पहले मंगलवार को इस केस में तब नाटकीय मोड़ देखने को मिला जब हेमंत सोरेन अचानक से अंडरग्राउंड हो गए थे। इसके बाद फिर उनकी तलाशी शुरू हो गई थी। लेकिन शाम होते-होते उन्हें रांची में अपने विधायकों के साथ बैठक करते देखा गया था। भाजपा के एक नेता ने तो उनके लिए गुमशुदा का पोस्टर तक लगा दिया था। ईडी की कार्रवाई के खिलाफ मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की याचिका पर हाईकोर्ट में एक फरवरी

को सुनवाई होगी। हाई कोर्ट की ओर से सुनवाई के लिए नोटिस जारी कर दिया गया है। इधर, राजभवन से निकलते ही ईडी के अधिकारी हेमंत सोरेन को लेकर अपने कार्यालय की ओर निकले। राज्यपाल को 47 विधायकों का समर्थन पत्र सौंपा : मंत्री आलमगीर आलम ने राजभवन से निकलने के बाद कहा कि झारखंड के राज्यपाल को 43 विधायकों का समर्थन पत्र सौंपा गया है। नई सरकार के गठन का दावा पेश किया गया। चंपई सोरेन हमारे मुख्यमंत्री होंगे। राज्यपाल से जल्द शपथ ग्रहण का समय मांगा गया है। राज्यपाल ने इस पर विचार करने का आश्वासन दिया है। झारखंड में सियासी बदलाव के बीच सांसद महुआ माजी ने कहा है कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ईडी की हिरासत में हैं।

सीतारमण आज अपना पहला अंतरिम बजट करेंगी पेश

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण गुरुवार को यानी आज अपना पहला अंतरिम बजट पेश करेंगी। इससे पहले साल 2019 में वित्त मंत्री अरुण जेटली की अस्वस्थता के कारण उस समय वित्त मंत्री के प्रभार में रहे पीयूष गोयल ने अंतरिम बजट पेश किया था। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को लगातार छठा बजट पेश करेंगी। इसके साथ ही उनके नाम कई रिकॉर्ड दर्ज होंगे। वह लगातार पांच पूर्ण बजट और एक अंतरिम बजट पेश कर पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के क्लब में शामिल हो जाएंगी। सीतारमण पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री हैं, जो जुलाई 2019 से अब तक पांच पूर्ण बजट पेश कर चुकी हैं। पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने सर्वाधिक 10 बार बजट पेश किए थे। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण अप्रैल-मई में होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले एक फरवरी को अंतरिम बजट पेश करेंगी। नई सरकार कार्यभार संभालने के बाद पूर्ण बजट पेश करेगी। इस सत्र का समापन नौ फरवरी को होना प्रस्तावित

है। बता दें कि ये मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का आखिरी बजट होगा। गुरुवार की सुबह 8 बजकर 15 मिनट पर वित्त मंत्री सबसे पहले बजट 2024 तैयार करने वाली अपनी टीम के साथ फोटो सेशन में हिस्सा लेंगी।

सुबह 8 बजकर 45 मिनट पर वित्त मंत्री महामहिम राष्ट्रपति से मुलाकात कर बजट की मंजूरी लेंगी। गुरुवार की सुबह 9 बजकर 15 मिनट पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण संसद पहुंचेंगी। सुबह 10 बजे कैबिनेट की बैठक होगी जिसमें बजट को मंजूरी दी जाएगी। सुबह 11 बजे वित्त मंत्री संसद में वर्ष 2024 का अंतरिम बजट पेश करेंगी। इस वर्ष आम चुनाव होने हैं। आम चुनाव की प्रक्रिया पूरी होने के बाद नई सरकार संभवतः जुलाई महीने में पूर्ण बजट पेश करेगी।

संक्षिप्त खबरें

ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत

दानापुर खगौल रेल थाना के अंतर्गत सदीसोपुर रेलवे स्टेशन से पूरब पॉल संख्या 564/15 अप एवं 564 /16 के पास डाउन लाइन के बगल में एक अज्ञात व्यक्ति उम्र लगभग 45 वर्ष पुरुष यह किसी चलती ट्रेन से धक्का लगने से गंभीर रूप से जख्मी हो जाने के कारण मृत्यु हो गई रेल थाना शव को अपने कब्जे में करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है पोस्टमार्टम करने के बाद शव को सुरक्षित रख दिया जायेगा या व्यक्ति फुल शर्ट उजाला रंग का, फुल पैंट ब्लू रंग का, काला टोपी, पहने हुए जीआरपी थाना प्रभारी रणधीर कुमार ने बताया की सूचना मिलेगी सादिशोपुर स्टेशन के पूरब एक व्यक्ति किसी चलती ट्रेन से टकराने के कारण उसकी मृत्यु हो गई है पहचान अभी तक नहीं हुई है पोस्टमार्टम कराने के बाद उसके शव को सुरक्षित रख दिया गया है।

13 केंद्रों पर इंटर की परीक्षा देंगे परीक्षार्थी

पटना सिटी। अनुमंडल में इंटरमीडिएट साइंस, कॉमर्स और आर्ट की परीक्षा गुरुवार से शुरू होगी। कदामारमुक्त परीक्षा के लिए पुलिस प्रशासन की ओर से तैयारी कर ली गई है। एसडीओ सह परीक्षा नियंत्रक गुंजन सिंह ने बताया कि सभी परीक्षा केंद्र पर मजिस्ट्रेट व पुलिस पदाधिकारी तैनात रहेंगे। उड़नदस्ता और गश्ती दल का भी गठन किया गया है। अनुमंडल में 13 परीक्षा केंद्र बनाया गया है। इसमें बीएनआर ट्रेनिंग कॉलेज, एफएनएस एकेडमी, ओरिएंटल कॉलेज, एमएए हाई स्कूल, कुशवाहा बालिका उच्च विद्यालय, राजकीय बालिका उच्चतर विद्यालय, डीवीआरके जालान उच्च विद्यालय, एसजीजीएस कॉलेज, गांधी आर्यकन्या विद्यालय, एसजीजीएस गर्ल्स हाई स्कूल, नारायणी कन्या उच्च विद्यालय, मारवाड़ी उच्च विद्यालय और राजकीय बालक उच्च विद्यालय शामिल है। इस दौरान वीक्षकों को परीक्षा से संबंधित जानकारी बुधवार को दी गई। एक फरवरी से शुरू होने वाली इंटरमीडिएट की परीक्षा में लगाए गए वीक्षकों ने प्रतिनियुक्त सेंटर पर योगदान दिया। उन सबों को परीक्षा से संबंधित जानकारी दी गई।एसजीजीएस गर्ल्स हाई स्कूल में प्रतिनियुक्त वीक्षकों को प्राचार्य प्रेम कुमार ने महत्वपूर्ण जानकारी दी। ओएमआर सीट किस तरह से परीक्षार्थियों से भरवाया जाए। साथ ही परीक्षा की टाइमिंग की जानकारी दी गयी। वीक्षक को समय से परीक्षा सेंटर पर पहुंचने को कहा गया।वीक्षकों ने भी परीक्षा से संबंधित अनेक सवाल पूछे, जिसका जवाब प्राचार्य प्रेम ने दिया। परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों को बैठने की व्यवस्था की गई।

हंगामा व पथराव मामले में 1500 अज्ञात पर मामला दर्ज

पटना सिटी। रेल अभ्यर्थियों के द्वारा पिछले दो दिनों धरना, प्रदर्शन और हंगामा किया गया था। इसे लेकर बहादुरपुर थाना की पुलिस ने 1500 अज्ञात छात्रों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इसमें सरकारी संपत्ति को नुकसान, सरकारी कामकाज में बाधा, पथराव करना सहित अन्य आरोप लगाए गए हैं। मिली जानकारी के अनुसार बहादुरपुर थाना की पुलिस ने दर्ज कराए गए प्राथमिक में कहा है कि 29 जनवरी की सुबह करीब 10 बजे सैदपुर छात्रावास मुसहरी के पास बड़ी संख्या में छात्र विभिन्न मांगों को लेकर गुस्से में दिखे। वह सब धरना व प्रदर्शन करते हुए सरकार और प्रशासन के खिलाफ नाराबाजी कर रहे थे। सड़क जाम किए जाने से आम लोगों, छात्रों, स्कूली वाहन, एंबुलेंस को भी आगे जाने व आने का रास्ता नहीं मिल पा रहा था। पुलिस प्रशासन केवरीय अधिकारियों के द्वारा आक्रोशित छात्रों को लगातार समझाने की कोशिश की जा रही थी, मगर वह सब उन सबों की सुनने को तैयार नहीं थे। इस बीच आक्रोशित भीड़ ने तोड़फोड़ करते हुए हंगामा करने लगे। इसके बाद रोड़ेबाजी भी करने लगे।

सम्मानित हुए समाज सेवी अरुण कुमार

पटना। भजन एवं गजल गायक अनूप जलोटा का रंगारंग कार्यक्रम नरकटियागंज में आयोजित हुआ। उक्त कार्यक्रम में उन्होंने एक से बढ़कर एक भजन गायन कर लोगों का मन मुग्ध कर दिया। ध्यातव्य है कि भजन और गजल के लिए प्रसिद्ध भजन सम्राट अनूप जलोटा को वर्ष 2012 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरुस्कार से सम्मानित किया गया था। लब्ध प्रतिष्ठित समाजसेवी अरुण कुमार को विधायक रश्मि वर्मा ने अनुप जलोटा के उपस्थिति में उत्कृष्ट समाज सेवा के लिए सम्मानित किया। सम्मानित करने के बाद विधायक रश्मि वर्मा ने कहा कि अरुण कुमार की समाज सेवा अतुलनीय है मैं इनके हौसले को और बुलंदी तक पहुंचे इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करता हूं। उन्होंने उपस्थित लोगों को कहा कि जो लोग समाज सेवा में शामिल हैं वे लोग अरुण कुमार के किए गए समाज सेवा का अनुकरण कर सकते हैं।

प्रमुख के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव बैठक टला

हाईकोर्ट ने लगाया रोक, इस बीच फतुहा प्रखंड कार्यालय पर गहमा-गहमी रही

प्रात : किरण संवाददाता

फतुहा। बुधवार को प्रखंड प्रमुख के विरुद्ध 31 जनवरी को होने वाली अविश्वास प्रस्ताव टल गई है। जानकारी अनुसार हाई कोर्ट ने रोक लगा दी है। अब यह बैठक 7 फरवरी के बाद निर्धारित की जाएगी। प्रखंड प्रमुख के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव को लेकर डीएम के आदेश पर बुधवार को प्रखंड के सभागार भवन में अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा होनी थी लेकिन इसके पहले प्रखंड प्रमुख श्रुति श्री ने हाईकोर्ट की शरण ली और हाईकोर्ट ने उसे अगले 7 दिन तक के स्टे आर्डर लगा दिया हालांकि अविश्वास प्रस्ताव को लेकर होने वाली बैठक में डीएम के आदेश पर प्रवेक्षक के तौर पर पहुंचे वरीय अपर समाहर्ता फतुहा पहुंचे और अपने देखरेख में दोनों पक्षों के पंचायत समिति सदस्यों का हाजिरी लिया। इसके बाद उन्होंने बताया कि हाईकोर्ट के आदेशानुसार 7 फरवरी के बाद ही कोई डेट फिर से निर्धारित की जाएगी। जैसा कि हाईकोर्ट आदेश देगा। यह खबर आते ही बैठक में शामिल होने के लिए प्रखंड कार्यालय में पहुंचे विपक्षी खेमे में मायुसी छा गयी। अविश्वास प्रस्ताव का नेतृत्व कर रहे उप प्रमुख रजनीश कुमार ने कहा कि बहुमत उनके पास है। इसके बावजूद प्रखंड प्रमुख जानबूझकर कर कोर्ट को बरगला रही है। उप प्रमुख ने इसे लेकर कोर्ट जाने की बात कही है। इसके पहले बता दे कि बीते मंगलवार को हाईकोर्ट के सिनियर अधिवक्ता मृगांक मौली, अपूर्व हर्ष व सुजीत कुमार ने प्रखंड प्रमुख श्रुति श्री का पक्ष रखा तथा हाईकोर्ट ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 31 जनवरी यानी बुधवार को होने वाली बैठक पर रोक लगा दी। हालांकि इस बैठक को लेकर प्रखंड कार्यालय पर पक्ष व विपक्ष के सभी सदस्य पहुंच चुके थे। यंहा तक कि पर्यवेक्षक के तौर पर पटना के वरीय अपर समाहर्ता सह एडिशनल एसडीओ पटना सदर भी फतुहा प्रखंड कार्यालय पहुंच चुके थे। अतिरिक्त पुलिस बल की भी तैनाती कर दी गयी थी। विदित हो कि बीते दो जनवरी को प्रखंड उपप्रमुख रजनीश कुमार के द्वारा तेरह पंचायत समिति सदस्यों की समर्थन की दावा करते हुए प्रखंड प्रमुख के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया गया था। इसके आलोक में बीडीओ द्वारा बीते 19 जनवरी को बैठक बुलायी गयी थी। लेकिन इस बैठक के विरुद्ध भी प्रखंड प्रमुख श्रुति श्री ने हाईकोर्ट का शरण लेकर बैठक पर रोक लगवा दिया था। उस समय हाईकोर्ट ने डीएम के सरंक्षण में इस अविश्वास प्रस्ताव पर निर्णय लेने का निर्देश दिया था। बीते 22 जनवरी को पटना में सभी पंचायत समिति सदस्यों की परेड भी करायी गयी थी। इसके बाद बीडीओ द्वारा बैठक के लिए 31 जनवरी की तिथि निर्धारित की गयी थी। लेकिन यह बैठक पर भी हाईकोर्ट ने रोक लगा दी। अब देखना होगा कि हाईकोर्ट के आदेश के मुताबिक प्रखंड प्रमुख किसी तिथि को बैठक बुलाती है। जो भी हो, बुधवार को इस अविश्वास प्रस्ताव के बैठक को लेकर प्रखंड कार्यालय पर दिनभर हलचल बनी रही।

उपमुख्य मंत्री विजय कुमार सिन्हा से मिलकर दी बधाई

प्रात : किरण संवाददाता

दानापुर खगौल नगर के अंतर्गत नगर परिषद के मुख्य पार्षद सुजीत कुमार उपमुख्य मंत्री विजय कुमार सिन्हा से मिल कर दी बधाई गुरूवार को मुख्य पार्षद बधाई देने उपमुख्य मंत्री विजय कुमार सिन्हा के आवास पहुंचे। सुजीत कुमार ने कहा कि उपमुख्यमंत्री को पुष्पगुच्छ देकर बधाई एवं शुभकामनाऐ दी। साथ ही खगौल नगर परिषद क्षेत्र के विकास को लेकर बाते की। इस दौरान पूर्व उपाध्यक्ष सुनील कुमार भी उपमुख्यमंत्री से मिलकर बधाई दी।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम विश्व कैंसर दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम हुआ आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। एम्स-पटना के रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विभाग ने ओपीडी में नुक्कड़ नाटक के माध्यम विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। नर्सिंग छात्राओं ने कार्यक्रम में भाग लिया और गरवास्प ग्रीवा कैंसर पर नुक्कड़ नाटक की बेहतरीन प्रस्तुति दी। एम्स-पटना के मुख्य कार्यकारी निदेशक डॉ. जीके पाल, उप निदेशक नीलोत्पल बाल, डॉ. प्रेम कुमार (डीन अकादमिक) कार्यक्रम में उपस्तिहत थे । अन्य विभाग के सदस्य, डॉ. संजीव कुमार (सीटीवीएस विभाग), डॉ. वीणा कुमारी (बर्न एंड प्लास्टिक सर्जरी विभाग) और डॉ. कमलेश झा (फिजियोलॉजी विभाग) इस अवसर पर उपस्तिहत थे। रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विभाग की विभाग प्रमुख डॉ. प्रीतांजलि सिंह ने विश्व कैंसर दिवस की थीम के बारे में बताया। डॉ. हरिकेश बहादुर सिंह ने भारत में आम कैंसर और इसकी शीघ्र पहचान और रोकथाम के बारे में जानकारी दी। डॉ. नीलेश मणि ने कैंसर के लक्षण और एम्स-पटना में सुविधा के बारे में बताया।सीनियर रेजिडेंट्स, जूनियर रेजिडेंट्स और विभाग के कर्मचारियों ने कार्यक्रम के संचालन में मदद की।

गांव चलो अभियान को लेकर भाजपा का कार्यक्रम आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

पालीगंज विधान सभा क्षेत्र के नुरचक गाँव में भाजपा पूर्वी मंडल के तत्वावधान में भाजपा की गांव चलो अभियान कार्यशाला आयोजित हुई। जिसकी अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष नारायण कुमार ने किया इस दौरान कार्यक्रम के मौके पर मुख्य अतिथि पालीगंज विधानसभा के विस्तार राम बाबू मेहता ने कहा कि 4 फरवरी से 11 फरवरी तक हर बूथ पर यह कार्यक्रम आयोजित करना है। अभियान का उद्देश्य बूथ पर जाकर पार्टी के जनाधार को मजबूत करना है। इससे संबंधित जरूरी टिप्स भाजपा नेताओं व कार्यकताओं को दिए गए इस कार्यशाला में भाजपा नेता वीरेंद्र शर्मा मंडल उपाध्यक्ष मसूदन कुमार महामंत्री राज कुमार रविकांत कुमार रविंद्र कुमार रविशंकर कुमार लवकुश कुमार जयराम प्रसाद राजकिशोर मुन्ना सहित अन्य लोग शामिल हुए।

एसडीओ ने लगाया निषेधाज्ञा, धरना-प्रदर्शन व रोड जाम पर प्रतिबंध

- वैवाहिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, धार्मिक अनुष्ठान व विधि-व्यवस्था के संधारण रहेगा मुक्त

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अनुमंडल प्रशासन ने छात्र एवं युवा संगठनों के द्वारा रेलवे भर्ती परीक्षा को लेकर पिछले दो दिनों से राजधानी में प्रदर्शन किया जा रहा है। विभिन्न टेलीग्राम एवं व्हाट्सएप ग्रुप के द्वारा अनेक स्थानों पर हिंसक एवं उग्र प्रदर्शन के लिए भीड़ को जुटाना, रेल परिचालन रोकने, सरकारी एवं निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने और आगजनी करने हेतु छात्र-युवाओं की भीड़ जुटाना का संदेश प्रचारित किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में जान-माल की क्षति एवं आम जनजीवन अस्त-व्यस्त होने की पूरी संभावना है ऐसे में सार्वजनिक स्थान चौक-चौराहा एवं रेल स्टेशन पर किसी भी प्रकार के अनावश्यक जमावड़ा और प्रदर्शन को प्रतिबंधित करने की जरूरत है। एसडीओ गुंजन सिंह ने इसी को लेकर दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 का प्रयोग करते हुए पटना सिटी अनुमंडल में निषेधाज्ञा जारी की है। इसमें कहा गया है कि रेल और सड़क यातायात को किसी भी तरह से बाधित करना दंडनीय होगा। धरना, प्रदर्शन, जुलूस आदि प्रतिबंधित रहेगा। किसी प्रकार का भड़काऊ संदेश प्रसारित करना, लाउडस्पीकर से भड़काऊ भाषण पर प्रतिबंध रहेगा। अस्त्र-शस्त्र लेकर चलना और प्रदर्शन करना भी टंडनीय होगा। सरकारी एवं निजी संपत्ति को क्षति पहुंचाना विशेष रूप से दंडनीय होगा। पांच या उससे अधिक व्यक्तियों का एक जगह पर इकट्ठा होना भी प्रतिबंधित है। यह आदेश 31 जनवरी से अगले आदेश तक प्रभावी होगा। यह आदेश किसी भी प्रकार के वैवाहिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक कार्यक्रम एवं धार्मिक अनुष्ठान तथा विधि-व्यवस्था के संधारण में प्रतिनियुक्ति पदाधिकारी, कर्मचारी और पुलिस बल पर लागू नहीं होगा।

वार्ड 53 का विकास उनकी प्रतिबद्धता सेवा करूंगी: किरण मेहता

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना नगर निगम के वार्ड 53 के अंतर्गत पार्षद विकास निधि कोष से नाला निर्माण कार्य का उद्घाटन किया गया। इसके तहत हुरारी मथनी में भरत मेहता के मकान से आलमगंज शक्का टोली मस्जिद तक आरसीसी नाला निर्माण कार्य का विधिवत उद्घाटन वार्ड पार्षद श्रीमती किरण मेहता के द्वारा किया गया। आरसीसी नाला निर्माण कार्य का कुल लागत लगभग 12 लाख रुपया है। इसके बन जाने से इस रास्ते से आने -जाने वाले लोगों को सहूलियत होगी। इस अवसर पर अयोध्या मेहता, मुकेश कुमार मंटू, अशोक कुमार मेहता, गुंजन कुमार, धीरज मेहता, सफाई निरीक्षक गौतम कुमार, रौशन कुमार, विकास मित्र प्रमोद कुमार चौधरी, पटेल महतो, फूलन देवी, हीरामणि देवी, बेबी देवी, सर्बिला देवी, शीला देवी, किरण देवी, गीता देवी, प्रीतम अभिषेक, मो आबिद हुसैन, आलोक राज, सोनू कुमार, शिव कुमार, मो प्रिंस, सुरेश मेहता, चुनचुन कुमार, टिंकू मेहता आदि उपस्थित थे।

जनता के सहयोग बिना विधि-व्यवस्था संधारण असंभव

- शांति समिति के सदस्यों ने अगमकुआं, आलमगंज व खाजेकलां थानाध्यक्ष को दी विदाई

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अनुमंडल के शहरी क्षेत्र के तीन थाना के थानाध्यक्ष के स्थानांतरण होने पर अनुमंडलीय शांति समिति के सदस्यों ने विदाई समारोह का आयोजन किया। जल्ला रोड व महाराजगंज के लिंक रोड स्थित माल्य महादेव स्थित सामुदायिक भवन में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता दिव्य सुंदर और संचालन चुन्नू चंद्रवंशी ने किया। इस दौरान अगमकुआं थाना के थानाध्यक्ष रहे सुधीर कुमार, आलमगंज थाना के थानाध्यक्ष अभिजीत कुमार और खाजेकलां थानाध्यक्ष राहुल कुमार ठाकुर का अभिनंदन किया गया। तीनों थानाध्यक्ष ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन सबों के कार्यकाल के दौरान हर तबके के लोगों का सहयोग मिलता रहा। बिना जनता के सहयोग से विधि-व्यवस्था बनाए रखना चुनौती पूर्ण कार्य है। विधि-व्यवस्था की समस्या जब भी बनी है, यहां के लोगों ने पुलिस को पूरा सहयोग करने का काम किया है। स्वाभाविक है कभी-कभी वर्दी पहना हुआ व्यक्ति को थोड़ा सख्त होना पड़ता है। ना चाहते हुए भी किसी की बात को नहीं मानना परेशानी का कारण भी बनता है। ऐसे में थाना क्षेत्र के अधिकांश जनता खुश, तो एक-दो नाखुश भी होते हैं। मगर इसी में विधि-व्यवस्था को कायम रखना उन सबों के लिए पहली जिम्मेदारी होती है। जिस तरीके से आप सबों का और जनता का सहयोग मिला है, उसके प्रति हम सभी आभार जताते हैं और यह भी आशा करते हैं कि इन तीनों थाना क्षेत्र में आने वाले थानाध्यक्ष, पुलिस पदाधिकारी एवं बल को इसी तरीके से अपना समर्थन आप सब देते रहेंगे। यहां जो प्यार पुलिस प्रशासन के अधिकारियों और पदाधिकारियों को मिलता है, वह अविस्मरणीय होता है और यह स्थिति उन तीनों के साथ भी है। इस अवसर पर दिव्य सुंदर, संतोष कुमार शर्मा, पार्षद प्रतिनिधि राजू गुप्ता, पूर्व पार्षद विनोद कुमार गुप्ता, संजय कुमार अलबेला, अभय यादव, पवन मेहता, मो बाबर, बाबू भाई, मिथिलेश कुमार शर्मा, संजय कुमार चंद्रवंशी, शाहिद अंसारी, पवन मेहता आदि शांति समिति के सदस्य मौजूद रहे।

रेडक्रॉस सोसाइटी के वोटर लिस्ट का प्रकाशन, चुनाव 15 को

पटना सिटी। अनुमंडल पदाधिकारी सह उपाध्यक्ष इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी, पटना सिटी के कार्यालय कक्ष में चेयरमैन गोविन्द कानोडिया एवं अन्य सदस्यों के साथ प्रबंध समिति के निर्वाचन हेतु बैठक आहूत की गई। मंगलवार को आयोजित बैठक में उप जिला शाखा के चेयरमैन गोविन्द कानोडिया के द्वारा राज्यपाल के प्रधान सचिव के द्वारा निर्गत पत्र के आलोक में एजीएम एवं चुनाव की प्रक्रिया पर चर्चा हुई। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि मतदाता सूची पर दावा और आपत्ति करने की अंतिम तिथि 23 जनवरी को अपराह्न तीन बजे तक रखी गई थी। मतदाता सूची पर कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने के कारण 30 जनवरी को मतदाता सूची में दर्ज वोटरों की सूची का अंतिम रूप से प्रकाशन कर दिया गया। इसका प्रकाशन अनुमंडल कार्यालय और मातृ शिशु कल्याण केंद्र, मंगल तालाब दो जगहों पर किया गया था। इसके तहत 15 फरवरी को पूर्वाह्न 11 बजे इंडियन रेडक्रॉस सोसायटी की उप शाखा, पटना सिटी की एजीएम पटना सिटी अनुमंडल कार्यालय में रखा गया है।

3 को श्री अकाल तक साहिब में पेश होंगे तख्तश्री कमेटी के दो पदा. व अधीक्षक

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू 18 अक्टूबर को पहुंची थीं। तब बिना प्रशासन की अनुमति प्राप्त किसी को भी दरबार साहिब में या परिसर में जाने की अनुमति नहीं थी। राष्ट्रपति के आने के तीन-चार घंटे पहले ही दरबार साहिब से संगतों को बाहर जाने का निर्देश दिया गया। वहां मौजूद संगत एक तरफ बैठने को तैयार थी, मगर उन सबों को तेज आवाज में बोलकर जबरन दरबार साहिब से निकाला गया। इस मामले में संगतों के द्वारा की गई शिकायत पर श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघुवीर सिंह के द्वारा तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष, महासचिव और अधीक्षक से स्पष्टीकरण मांगा गया था। इन तीनों के द्वारा जवाब दिए जाने के साथ ही संगतों और श्री अकाल तख्त साहिब से भी क्षमा याचना की गई थी। इसके बाद भी बीच में तिथि निर्धारित कर श्री अकाल तक साहिब अमृतसर बुलाया गया था। उस वक्त कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह ने परिवार में रिश्तेदार के हुए निधन, महासचिव इंद्रजीत सिंह ने तख्तश्री परिसर में गिरने के बाद हाथ में आई चोट एवं अधीक्षक ने अन्य कारण बताते हुए क्षमा याचना किया था और ऐसा नहीं होने पर बाद में तिथि निर्धारित किए जाने पर आने की बात कही थी। इसके बाद एक बार फिर तीन फरवरी की तिथि निर्धारित की गई है। इसे लेकर सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही और अधीक्षक दलजीत सिंह बुधवार को रेल मार्ग से वहां पर पेश होने के लिए प्रस्थान कर गए हैं। दोनों पटना से दिल्ली जाएंगे। फिर वहां से सड़क या रेल मार्ग से अमृतसर पहुंचकर वहां पेश होंगे। महासचिव इंद्रजीत सिंह चूंकि अपने गृह नगर जमशेदपुर में थे। इस कारण से उनके उधर से ही अमृतसर जाने की सूचना मिल पाई है। विदित हो कि गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा, गोविंद नगर चितकोहरा के पदाधिकारी और संगतों के द्वारा एवं पटना साहिब एवं अन्य शहर से पहुंची संगतों के द्वारा श्री अकाल तख्त साहिब में शिकायत दर्ज कराई गई थी। इसमें कहा गया था कि दरबार साहिब में संगतों के बैठने की जगह पर एक आसन विशेष रूप से राष्ट्रपति के बैठने के लिए लगाया गया था। साथ ही संगतो को दरबार साहिब से जबरन और ऊंची आवाज में बोलकर निकाला गया। यही नहीं, संगतों को परिसर में जाने से भी रोका गया और सभी प्रवेश द्वार को बंद कर दिया गया।

25 हजार का इनामी टॉप 10 कुख्यात अपराधी विकास उर्फ विकटिया गिरफ्तार

- लूट, डकैती, हत्या आदि अनेक कांड है दर्ज, था वांछित, बाइक बरामद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

जिला के इनाम घोषित टॉप 10 कुख्यात शातिर अपराधी विकास उर्फ बिकटिया को आलमगंज थाना की पुलिस ने गिरफ्तार किया है। उस पर 25 हजार का इनाम घोषित था। उसके खिलाफ लूट, डकैती, हत्या आदि गंभीर शीर्ष के अनेक कांड दर्ज हैं। वह अनेक कांडों में वांछित है। उसे इसी थाना क्षेत्र के मीना बाजार से चोरी या लूटी गई मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार किया गया है। यह जानकारी संवाददाता सम्मेलन के दौरान एएसपी सरद आरएस ने बुधवार को अपने कार्यालय कक्ष में दी। उन्होंने बताया कि फिलहाल उसके खिलाफ खाजेकलां थाना में चार, आलमगंज थाना में दो, दीघा, राजीव नगर व रामकृष्ण नगर थाना में एक-एक मामला दर्ज है। इसके अलावा अन्य थाना में भी इसके विरुद्ध अनेक कांड दर्ज होने की सूचना है। इस संबंध में जानकारी प्राप्त की जा रही है। इस संबंध में एएसपी ने बताया कि आलमगंज थानांतर्गत मीना बाजार से चोरी या लूटी गई मोटरसाइकिल के साथ उसे गिरफ्तार किया गया है। उक्त अपराधकर्मी पटना जिला सहित आसपास के जिला में आतंक का पर्याय बना हुआ था। आए दिन कुछ न कुछ बड़ी घटना को यह अंजाम दिया करता था। इसे पुलिस की सक्रियता एवं तत्परता के कारण गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार अपराधी विकास उर्फ विकटिया पिता स्व रामदयाल पासवान खाजेकलां थाना क्षेत्र के नीम घाट झोपड़पट्टी का रहने वाला है। पुलिस इसकी गिरफ्तारी को बड़ी सफलता मान रही है।

पटना में नेहरू युवा केंद्र संगठन के युवा उत्सव में लगा अभी मैं जिन्दा हूं गौरैया फोटो प्रदर्शनी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार की इकाई नेहरू युवा केंद्र संगठन, बिहार के तत्वाधान में पटना के रविन्द्र भवन में आयोजित राज्य स्तरीय युवा उत्सव का आयोजन (31 जनवरी, 2024) के दौरान बिहार एवं दिल्ली राज्य की राजकीय पक्षी और हमारे घर आँगन से विलुप्त होती गौरैया के संरक्षण को लेकर लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से ह्यअभी मैं जिन्दा हूं गौरैया, फोटो प्रदर्शनी हमारी गौरैया और इन्वायरमेंटल वारियर्स पटना के द्वारा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पटना के सहयोग से आयोजित की गयी। गौरैया संरक्षण में वर्षों से सक्रिय संजय कुमार द्वारा खींची गई गौरैया की विभिन्न अदाओं को प्रदर्शित जीवंत तस्वीरें लोगों के बीच आकर्षण का केंद्र बना रहा। गौरैया फोटो प्रदेशनी के उद्देश्य की चर्चा करते हुए संजय कुमार ने गौरैया का संरक्षण क्यों के बारे में लोगों को बताया। उन्होंने बताया कि गौरैया और इंसान के बीच 8 लाख साल पुराना सम्बन्ध हैं। आज इंसानों कि वजह से ही घर आँगन की गौरैया गायब यानि विलुप्त हो चली है। गौरैया की संख्या में कमी के पीछे के कारणों में बढ़ता आवासीय संकट, आहार की कमी, खेतों में कीटनाशक का व्यापक प्रयोग, जीवनशैली में बदलाव, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, शिकार, बीमारी आदि शामिल है,ऐसे में हमें कोशिश करनी होगी और गौरैया की घर वापसी करवानी होगी। उन्होंने बताया कि हर ओर गौरैया को बचाने की पहल हो रही है। श्री कुमार ने बताया कि तस्वीर के मद्धयम से गौरैया की घर वापसी के लिए लोगों से अपील करते हैं कि घर आँगन, बालकोनी, छत और खुले में दाना-पानी रखना है और घोंसला व पेड़ भी लगाना चाहिये। उन्होंने बताया कि यह फोटो प्रदर्शनी एक सन्देश है कि अपनी घर आँगन कि रूठी घरेलू गौरैया को बुलाने के लिये पहल करें।

लोक सभा और विधान सभा चुनाव में एनडीए की होगी बड़ी जीत : सम्राट

उपमुख्यमंत्री का मुंगेर एयरपोर्ट पर कार्यकर्ताओं ने किया जोरदार स्वागत

● कहा-लालू प्रसाद के इस हाल के लिए राहुल जिम्मेदार

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा है कि 2024 में लोकसभा और 2025 में विधान सभा का चुनाव भी एनडीए जीतेगी। श्री चौधरी बुधवार को मुंगेर पहुंचे। जहां सफियासराय एयरपोर्ट पर कार्यकताओं एवं समर्थको ने उनका भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस दौरान पत्रकारों से चर्चा करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि आज लालू प्रसाद की जो हालत है उसके जिम्मेदार सिर्फ राहुल गांधी है। उन्होंने कहा कि आज लालू प्रसाद मुखिया का भी चुनाव नहीं लड़ सकते हैं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि 1997 में जनतादल की सरकार थी और उसी समय लालू यादव के खिलाफ सीबीआई ने जांच शुरू की थी और चार्जशीट दाखिल किया था। इसके बाद राहुल गांधी ने अध्यादेश की कापी फाड़कर लालू को जेल में सड़ाने का काम किया। उन्होंने कहा कि आज जो बिहार में डबल इंजन की एनडीए की सरकार है उसका एक ही एजेंडा है, विकास, विकास और केवल विकास । उन्होंने साफ लहजे में कहा कि 2020 में बिहार की जनता एनडीए को बहुमत दी थी और उस समय देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि बिहार में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री होगें। उसी कमिटमेंट के तहत हम चल रहे है ।

ब्रह्मानंद मंडल गरीबों के सच्चे हितैषी थे : डिप्टी सीएम

उपमुख्यमंत्री ने पूर्व सांसद के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित किया

पटना। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पूर्व सांसद ब्रह्मानंद मंडल के के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें नमन किया। उन्होंने दिवंगत सांसद ब्रह्मानंद मंडल के पुत्र नचिकेता से बात की और उन्हें व परिजनों को इस दुख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की । उपमुख्यमंत्री स्व ब्रह्मानंद मंडल की शवयात्रा में भी शामिल हुए। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि ब्रह्मानंद मंडल इलाके के काफी लोकप्रिय नेता थे तथा गरीबों के सच्चे दिल से हितैषी थे। वह काफी कर्मठ एवं जुझारू नेता थे। उनके नाम पर संस्था के नामकरण तथा सरकारी स्तर पर उनकी प्रतिमा स्थापित करने का काम किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा उनके परिवार के साथ खड़ी है। उपमुख्यमंत्री सह भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने यह भी कहा कि ब्रह्मानंद मंडल निचले वर्ग और दबे-कुचले लोगों की आवाज थे। वे तीन बार मुंगेर लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। उनके लिए लोग चंदा तक देते थे। उन्हें गरीब-गुरबे आर्थिक ही नहीं, अनाज से भी मदद करते थे। उन्होंने कहा कि मुंगेर पुल उनके द्वारा किए गए संघर्ष और विकास का प्रतीक है ।

जातीय गणना पर श्रेय लेने की कोशिश कांग्रेस की ओछी मानसिकता : उमेश

● कहा-कांग्रेस और राजद ने समाजवाद के नाम पर परिवारवाद को प्राथमिकता दिया

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कांग्रेस और राजद को जमकर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय की बात करने वाली कांग्रेस पार्टी को पहले इस बात का जवाब देना चाहिए कि उन्होंने अपने शासनकाल में सामाजिक न्याय के पुरोधा जननायक कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न क्यों नहीं दिया था? और राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव तत्कालीन यूपीए की सरकार में कद्दावर मंत्री की भूमिका निभा रहे थे, तब लालू प्रसाद यादव की ओर से जननायक को भारत रत्न दिलाने के लिए क्या पहल किए गए थे? श्री कुशवाहा ने कहा कि जननायक के प्रति अगर कॉंग्रेस पार्टी की मंशा साफ होती तो उन्हें बहुत पहले ही भारत रत्न मिल चुका होता लेकिन कॉंग्रेस पार्टी कभी भी अपने परिवार से आगे कुछ सोचती ही नहीं है। समाजवाद के नाम पर कॉंग्रेस और राजद ने परिवारवाद को प्राथमिकता देने का काम किया है। सत्ता में रहते हुए दोनों दलों ने सिर्फ अपने परिवार का भला किया और गैरकानूनी तरीके से अकूत संपत्ति बनाई है। साथ ही उन्होंने कहा कि राहुल गांधी द्वारा जातीय गणना पर श्रेय लेने की कोशिश उनकी दूषित और ओछी मानसिकता को दशार्ता है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रयास से जातीय गणना राष्ट्रीय मुद्दा बना और उनकी प्रतिबद्धता के कारण बिहार में जातीय गणना का कठिन काम समय पर संपन्न भी हुआ। श्री कुशवाहा ने पूछा कि वर्तमान में भी कई राज्यों में कॉंग्रेस पार्टी की सरकार है तो राहुल गांधी अपने मुख्यमंत्री पर जातीय गणना करवाने का दबाव क्यों नहीं बनाते हैं? असल में उनकी दिलचस्पी केवल भाषणबाजी में है। उन्हें ना तो जातीय गणना के विषय में कोई जानकारी है और ना ही उन्हें सामाजिक न्याय की बुनियादी समझ है।

नौकरी और रोजगार देने का काम बाधित न हो : मनोज झा

● स्वास्थ्य विभाग में नौकरी देने की प्रक्रिया को शीघ्र पूरा किया जाये

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता प्रो मनोज कुमार झा ने कहा कि कि किस तरह से रोजगार और नौकरी देने वाले सरकार को समाप्त करने के दिशा में साजिश की गई। किस दबाव, डर, खौफ और प्रभाव से आप निकल गये ये सब जानते हैं। राजनीतिक लड़ाई लड़े लेकिन रोजगार और नौकरी को बाधित न करे। श्री झा ने कहा कि बिहार में 9 अगस्त को महागठबंधन की सरकार बनने से पहले तेजस्वी की शर्त थी कि बिहार में नौकरी और रोजगार का जो संकल्प है और राष्ट्रीय जनता दल की घोषणा पत्र में जो बातें हैं उसे हमें पूरा करना है और उस दिशा में सरकार पहल करेगी। आज उसी का परिणाम है कि बिहार की चर्चा इस बात पर हो रही है कि तेजस्वी जी संकल्प के अनुसार लाखों नौजवानों को नौकरी दी गई और जो काम 17 वर्षों में एनडीए की सरकार ने नहीं किया उसे 17 महीने में तेजस्वी प्रसाद यादव ने अपने संकल्पो और कार्यों से पूरा किया। श्री झा ने आगे कहा कि बिहार में स्वास्थ्य विभाग के द्वारा एक लाख पैंतीस हजार को नौकरी देने की प्रक्रिया स्वास्थ्य मंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव ने अपने स्तर से पूरी कर ली थी। जिसे दो महीने के अन्दर में पूरा किया जाये। साथ ही एक लाख और शिक्षकों की नियुक्ति को 30 से 40 दिनों के अन्दर पूरा करने के साथ-साथ गृह विभाग, सहकारिता विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग सहित अन्य विभागों के लिए जो रिक्तियां चिन्हित की गई थी उन सभी को ससमय पूरा किया जाय।

कहा कि आशा और ममता के मानदेय बढ़ाने का प्रस्ताव दो कैबिनेट की बैठक में रोक दिया गया जबकि स्वास्थ्य मंत्री के रूप में तेजस्वी ने इस पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। ममता और आशा के मानदेय को जल्द से जल्द लागू किया जाये। उन्होंने कहा कि बिहार में खेल को बढ़ावा देने के लिए मोइनुलहक स्टेडियम सहित अन्य जिलों में स्टेडियम सहित खिलाड़ियों के लिए प्रोत्साहन योजना चलायी गई है उसे शीघ्र पूरा किया जाये। कहा कि तेजस्वी जी के संकल्प के मुताबिक बिहार में जातीय गणना हुई, हमने आंकड़ों को लोगों के सामने लाया और उसी आधार पर आरक्षण का दायरा बढ़ाकर 75 प्रतिशत किया गया है । जातिगत जनगणना के लिए लालू जी और तेजस्वी जी ने जो पहल की उसे राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस और डीएमके ने भी समर्थन देकर इसे आगे बढ़ाया। इस अवसर पर संवाददाता सम्मेलन में राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक, प्रदेश के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ करूणा सागर, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, डॉ अजय कुमार सिंह, चितरंजन गगन एवं प्रदेश महासचिव अरूण कुमार यादव भी उपस्थित थे।

नीतीश का समाजवाद जरूरी, विपक्ष का परिवारवाद नहीं : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि बिहार का राजनीतिक इतिहास गवाह है कि परिवारवादी दलों ने हमेशा ही राज्य और जनता का शोषण किया है। नीतीश के समाजवादी शासन से पहले बिहार में कैसी अंधेरनगरी थी उसे लोग भूले नहीं हैं। परिवारवादीयों के राज में जहां सिर्फ एक खास परिवार और उनकी पालकी ढ़ोने वालों का विकास हुआ वहीं नीतीश राज में पहली बार आम जनता के दरवाजे पर विकास की पहुंच हुई। उन्होंने कहा कि यह नीतीश राज का समाजवादी मॉडल ही है जिसके कारण आज बिहार की 10.98 की विकास दर, देश के विकास दर से भी अधिक है। वहीं परिवारवादी शासन में बीमारू कहा जाने वाला यह राज्य आज देश के तेजी से बढ़ने वाले राज्यों में आज तीसरे नंबर पर पहुंच चुका है। तेजी से हुए विकास के कारण तब के मुकाबले आज बिहार का बजट 10 गुणा अधिक हो चुका है। इस विकास की खासियत यह है कि इससे किसी खास परिवार के बजाए आम बिहारवासियों के जीवनस्तर में सुधार हुआ है। आज उन्हें बिजली, पानी, सड़क, रसोई गैस, शौचालय जैसी मुलभुत सुविधाएं मिल रही हैं वहीं उनकी आमदनी भी भी लगातार बढ़ रही है। पिछले 16 साल में स्वास्थ्य के क्षेत्र में बिहार ने 11 गुना और शिक्षा के क्षेत्र में 8 गुना खर्च की वृद्धि की है। उन्होंने कहा कि यह नीतीश कुमार जी के समाजवादी शासन का ही परिणाम है कि आज बिहार की महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में कामयाबी के झंडे गाड़ रहीं हैं। वहीं जीविका से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं। यह सफलताएं दिखाती हैं कि बिहार का कल्याण मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के समाजवाद से ही संभव है, विपक्ष के परिवारवाद से नहीं।

देश में महंगाई और बेरोजगारी चरम पर है: भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने कहा कि ने कहा कि देश में महंगाई और बेरोजगारी चरम पर है। भाजपा सरकार महंगाई रोकने में पूरी तरह विफल रही। पिछले दस साल में महंगाई कई गुना बढ़ गयी है। डीजल, पेट्रोल, गैस सिलेण्डर, खेती-किसानी के सामान, खाद-बीज, दवाई, पढ़ाई, सब कुछ महंगा हो गया है। भाकपा राज्य सचिव ने बयान जारी कर कहा कि महंगाई से आम जनता त्रस्त है। महंगे सिलेण्डर के कारण परिवारों के लिए खाना-पीना बनाना दूभर हो गया है। भाजपा सरकार में महंगाई इस कदर बढ़ गई है कि गरीब परिवार रसोई गैस, सिलेण्डर, रिफिल नहीं करवा पा रहे हैं। माताएं, बहनें लकड़ियां तोड़कर चूल्हा जलाने पर मजबूर है। लोगों के लिए जीवनयापन का संकट है। एक तरफ बढ़ती महंगाई का कहर है। दूसरी तरफ सरकार लोगों को नौकरी रोजगार नहीं दे रही है। बेरोजगारी लगातार बढ़ रही है। गांवो में 90 फीसदी नौजवान बेरोजगार है।हालात यह है कि रोजी-रोटी की तलाश में युवा युद्धग्रस्त देश जाने पर मजबूर है। केन्द्र में भाजपा की सरकार आम जनता से झूठे वादे करती रही, लेकिन वादो को पूरा नहीं किया। भाजपा सरकार में बढ़ती महंगाई बेरोजगारी ने जनता की कमर तोड़ दी है। जनता 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को सबक सिखाएगी।

आधुनिक बिहार के प्रणेता थे श्री बाबू : डा अखिलेश

● सदाकत आश्रम में प्रथम मुख्यमंत्री को दी गई श्रद्धांजलि

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

विकास का जो माडल बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डा श्रीकृष्ण सिंह ने बिहार में लागू की थी उसका अनुसरण भी कल्पना से बाहर है। जिस तरह उन्होंने बिहार जैसे पिछड़े राज्य में उद्योगों का जाल बिछाया उसका कोई मिशाल नहीं है। बोकारो स्टील प्लांट, पतरातू राँची में हैवी इंजिनियरिंग कारपोशन, बरौनी तेल एवं बिजली कारखाना के अलावा मोकामा के राजेन्द्र सेतु एवं पूसा कृषि विश्वविद्यालय के अलावा अनगिनत विकास के कार्य किये। ये बातें बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने श्रीबाबू की 63 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर भेजे अपने संदेश में कहीं। उन्होंने कहा कि बिहार केसरी के रूप में विख्यात श्रीबाबू समाजिक स्तर पर भी कई ऐतिहासिक कार्य किये, जिसमें जमींदारी प्रथा उन्मूलन के अलावा देवघर में दलित समुदाय के लोगों का मंदिर में प्रवेश कराये। सच तो यह है कि आधुनिक बिहार के निर्माण में श्रीबाबू के योगदान का सही आकलन भी मुश्किल है। दरअसल में वे आधुनिक बिहार के प्रणेता थे। उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर पार्टी मुख्यालय, सदाकत आश्रम में बिहार कांग्रेस के नेताओं ने उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। बुधवार को ही बिहार कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष स्व विद्याकर कवि की 38 वीं जयंती भी सदाकत आश्रम में मनायी गयी। डा श्रीकृष्ण सिंह एवं स्व विद्याकर कवि के तैल चित्र पर माल्यार्पण किया गया। इस मौके पर पूर्व विधायक डा हरखू झा, लाल बाबू लाल, ब्रजेश प्रसाद मुनन, डा विनोद शर्मा,वैद्यनाथ शर्मा, सुमन कुमार मल्लिक, निरंजन कुमार, मृणाल अनामय, रमा शंकर पाण्डेय, जितेन्द्र पासवान,विकास कुमार, धर्मवीर कुमार, संतोष उपाध्याय उपस्थित थे।

जगदेव प्रसाद की जयंती समारोह में जुटेंगे भाजपा के दिग्गज

पटना। बिहार भाजपा 2 फरवरी को शहीद जगदेव प्रसाद जयंती भव्य तरीके से मनाने जा रही है। पटना के रविंद्र भवन में आयोजित शहीद जगदेव प्रसाद जयंती समारोह में भाजपा के बड़े नेता भी शिरकत करेंगे। इस आयोजन को लेकर बुधवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में एक बैठक आयोजित की गई जिसमे समारोह की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। इस बैठक में तैयारी को लेकर चर्चा की गई । बैठक में बताया गया कि समारोह में प्रदेश के सभी जिले से लोग भाग लेने आएंगे। इस समारोह में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, मंत्री प्रेम कुमार, केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय, अश्विनी चौबे, सांसद रविशंकर प्रसाद शामिल होंगे। इस बैठक में कार्यों का विभाजन किया गया तथा अधिक से अधिक संख्या में लोगों के आने का आह्वान किया।

ज्ञानवापी पर आये फैसले का पूर्व मंत्री ने किया स्वागत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने ज्ञानवापी मंदिर पर आये वाराणसी जिला अदालत के फैसले का स्वागत किया है। श्री पांडेय ने कहा कि यह मामला पिछले कई वर्षों से चला आ रहा था। हिन्दू पक्ष ने हमेशा से दावा किया है कि ज्ञानवापी मस्जिद के नीचे मंदिर है, जिसकी पुष्टि एएसआई (भारतीय पुरातत्व विभाग) ने करते हुए अपने रिर्पोट में लिखा है कि इस मस्जिद के तहखाना में हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां भी हैं। एएसआई सर्वे में इसमें कई अहम हिंदू मंदिर होने के सबूत मिले हैं। अदालत ने बड़ा फैसला सुनाते हुए ज्ञानवापी के व्यास तहखाने में हिंदू पक्ष को पूजा करने का अधिकार देकर करोड़ों लोगों की आस्था का सम्मान किया। साथ ही अदालत ने प्रशासन को सात दिन के अंदर बैरीकेडिंग की व्यवस्था करने का आदेश देकर हिन्दू पक्षकारों के बीच न्याय किया है।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, पटना।

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–02 वर्ष 2023–24

स्थानीय अभिकर्ता श्रेणी (iv) में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मो/निबंधित दुकानदारों से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना, एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 10.02.2024 के अपराहन 12:30 अपराहन बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 1:30 बजे अपराहन में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कार्य का विवरणी :–

क0	सामग्री का नाम एवं विशिष्टयॉं	मात्रा	इकाई	उद्वत की जानेवाली दर
1	Supplying of Key Lock for Different building at Gardanibagh , Patna for the year 23-24			
	Supplying of key lock (55 No. with 3 key) standard make like link/Godrej etc. as per Specification & direction of E/I.	1200 Nos	Each	

➢ कार्य समाप्ति की अवधि : 15 दिन

➢ विशेष जानकारी हेतु बेबसाईट बेबसाईट www.state.bihar.gov.in/.prdbihar.gov.in देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।

PR- 16351 (B C D) 2023-24

कार्यपालक अभियंता,
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भ0नि0वि0, पटना

बिहार में शराब का व्यापार, बिक्री एवं सेवन अवैध है।
संबंधित शिकायत इस नंबर पर दर्ज करायें आपकी जानकारी गुप्त रखी जाएगी।
टॉल फ्री नं– 15545 या 1800 345 6268

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, पटना।

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–05 वर्ष 2023–24

स्थानीय अभिकर्ता श्रेणी (iv) में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मो/निबंधित दुकानदारों से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना, एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 15.02.2024 के अपराहन 12:30 अपराहन बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 1:30 बजे अपराहन में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कार्य का विवरणी :–

क0	सामग्री का नाम एवं विशिष्टयॉं
1.	Name of Work – Supply of printed forms, office Stationary and Computer accessories to Office of The Executive Engineer, Gardanibagh Building Division, Patna for the year 2023-24

➢ कार्य समाप्ति की अवधि : 15 दिन

➢ विशेष जानकारी हेतु बेबसाईट बेबसाईट www.state.bihar.gov.in/prdbihar देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।

PR- 16352 (B C D) 2023-24

नशे से बनानी दूरी है, क्योंकि परिवार जरूरी है

कार्यपालक अभियंता,
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भ0नि0वि0, पटना

बिहार संग्रहालय में पुनरावलोकन प्रदर्शनी का होगा शुभारंभ

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार संग्रहालय में गुरूवार यानी आज से दो पुनरावलोकन प्रदर्शनियों को शुभारंभ हो रहा है जिसके माध्यम से बिहार की जनता को कई तरह की महत्वपूर्ण जानकारियां मिलेगी। उक्त जानकारी बिहार संग्रहालय के महानिदेशक अंजनी कुमार सिंह ने बुधवार को प्रेस वार्ता के दौरान दी। उन्होंने कहा कि इनमे पहली प्रदर्शनी रज्नाबली कांत की है जिसकी कलाकृतियां की पहचान देश के बाहर भी है। वहीं दूसरी फोटो गणेश खेतड़ीवाल की है जो एक के व्यावसायी होने के साथ साथ एक अनूठे फोटोग्राफर भी है। जिनकी फोटोग्राफी लोगों को जीवंतता का बोध कराती है। इस मौके बिहार संग्रहालय के अपर निदेशक अशोक कुमार सिन्हा ने बताया कि दोनों प्रदर्शनी का उद्घाटन बिहार संग्रहालय के महानिदेशक अंजनी कुमार सिंह करेंगे। इस मौके पर गणेश खेतरीवाल ने बताया कि छात्र जीवन से ही फोटोग्राफी का शौक था और अब तक कई मौकों पर अपने कैमरा के माध्यम से प्रकृति की खूबसूरती व मानव जीवन को जीवंतता का बोध करानेवाली फोटोग्राफी करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा इस प्रदर्शनी में शीर्षक बताओं इनाम पाओ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया है। जिसके माध्यम से बुद्धिजीवि लोग फोटो प्रदर्शनी का शीर्षक बताकर इनाम पा सकते हैं। वही समकालीन कलाकार रत्न ावली ने बताया कि उन्होंने मूर्तिकला के क्षेत्र में देशस्तर पर अमिट छाप छोड़ी है जिसका लोहा लगाग मानते हैं उन्हें कई स्त्र पर सम्मानित भी किया गया है।

राजद कार्यालय में मनाई गई श्रीकृष्ण सिंह की पुण्यतिथि

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल के राज्य कार्यालय में पूर्व मुख्यमंत्री बिहार केशरी श्रीकृष्ण सिंह की पुण्यतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष वृषिण पटेल की अध्यक्षता में मनायी गयी। इस अवसर पर उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर नेताओं ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा की। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि श्रीकृष्ण सिंह अपने काम और किरदार से लंबी रेखा खींची। इन्होंने अपने साथ दलितों को लेकर मंदिर में प्रवेश किया जिसके कारण इन्हें विरोध का सामना करना पड़ा उसके बावजूद भी ये समाज में बेहतर वातावरण के निर्माण में लगे रहे। इनके शासनकाल में विकास के बहुत सारे काम हुये। इस अवसर पर राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता प्रो मनोज कुमार झा, राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक, भोला यादव, बीनू यादव, राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ करूणा सागर, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ तनवीर हसन, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, चितरंजन गगन, डॉ अजय कुमार सिंह, पूर्व विधायक डॉ राजेश कुमार, मुख्यालय प्रभारी मुकुंद सिंह, प्रदेश महासचिव संजय यादव, प्रमोद कुमार राम, अभिषेक सिंह, अरूण कुमार यादव, महेन्द्र प्रसाद विद्यार्थी, गोपाल प्रसाद गुप्ता, कुमर राय, शाहिद जमाल, चन्देश्वर प्रसाद सिंह, राकेश रंजन, हरेन्द्र कुमार, कुशवाहा, उपेन्द्र चन्द्रवंशी, पी के मिश्रा, ओमप्रकाश चैटाला, अमित पटेल, शहनवाज आलम, नागेन्द्र कुमार सिंह सहित अन्य गणमान्य नेताओं ने उनके तैलचित्र पर मार्ल्यापण कर श्रद्धासुमन अर्पित की।

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-आक्शन सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबन्धक, पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ के द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई–आक्शन से सम्बन्धित सूचना।

एडमिन यूनिट/जोनः लखनऊ–पू.उ.रे.–मण्डल–वाणिज्य/पू.उ.रे., नीलामी सूची सं./लॉट सं.: LJN-MISC-03-24, नीलामी सूची प्रकाशन तिथिः 29-01-2024 समय 15:12 बजे, नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट): 15-02-2024 समय 13:00 बजे, नीलामी बन्द करने की तिथि व समयः 15-02-2024 समय 13:50 बजे, नीलामी का प्रकारः Close Ended, वेबसाइट विवरण जहाँ पंजीकृत बोलीदाताओं द्वारा नीलामी का पूरा विवरण देखा जा सकता हैः E-Auction Module of *www.ireps.gov.in*

वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक,
मुजाधि/वाणिज्य–257 लखनऊ

गाड़ियों की छतों व पावदान पर कदापि यात्रा न करें।

पूर्व मध्य रेल

खुली निविदा सूचना

खुली निविदा आमंत्रण सूचना संख्या : 19/टी.आर.डी./दानापुर/ओ.टी./23–24 मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, दानापुर भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु खुली निविदा आमंत्रित करते हैं।

निविदा सं०. : टीआरडी/दानापुर/ओ.टी./21/2023–24

1. कार्य का नाम : पूर्व मध्य रेल के दानापुर मंडल में 8–व्हीलर टावर वैगन के 12 अदद इंजन एवं 04– व्हीलर टावर वैगन के 06 अदद इंजन के ('बी', 'सी' एवं 'डी' चेक) का 03 वर्षों के लिए मरम्मत/वार्षिक अनुरक्षण ठेका का कार्य। **2. अनुमानित लागत** : रु. 5,17,57,647/–, **3. अग्रधन राशि** : रु. 4,08,800/–, **4. निविदा बिक्री, जमा करने एवं खुलने की तिथि एवं समय** : निविदा ऑनलाइन **www.ireps.gov.in** पर प्रस्तुत की जानी है। निविदादाताओं द्वारा निर्धारित तिथि 26.02.2024 को 12.00 बजे तक निविदा प्रस्तुत कर दिया जाय एवं उसी दिन 12.30 बजे निविदा खोली जायेगी।, **5. वेबसाईट विवरण, सूचना पट्ट लोकेशन जहाँ निविदा का पूर्ण विवरण देखा जा सकता है तथा कार्यालय का पता जहाँ से निविदा कागजात खरीदा जा सकता है** : निविदा सूचना, पात्रता मानदंड तथा निविदा प्रलेख क्रिस वेबसाईट **http://www.ireps.gov.in** पर देखा जा सकता है, एवं सूचना की पूर्ण जानकारी के लिये वरीय मंडल विद्युत अभियंता/टीआरडी/पूर्व मध्य रेल/दानापुर के कार्यालय के नोटिस बोर्ड में देखें। यदि जरूरी हो शुद्धि पत्र वेबसाईट पर अपलोड होगा।

मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, दानापुर

पीआर/02197/डीएनआर/ईटीआरडी/टी/23–24/48

युवाओं के परिश्रम और प्रतिभा से भारत विकसित बनेगा : राज्यपाल

आर्लेकर ने राज्य स्तरीय युवा उत्सव समारोह को किया संबोधित

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

युवाओं के परिश्रम, ऊर्जा और प्रतिभा से ही वर्ष 2047 तक भारत विकसित बनेगा। आनेवाला कल हमारे युवाओं पर ही निर्भर है। वे देश का वर्तमान भी बना रहे हैं और भविष्य भी बनायेंगे। यह बातें राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने रवीन्द्र भवनमें नेहरू युवा केन्द्र संगठन द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय युवा उत्सव के उद्घाटन के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि भारत को विकसित बनने के लिए इसे आत्मनिर्भर बनना होगा। इसके लिए हमारी अर्थव्यवस्था एवं मुद्रा मजबूत होनी चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि अनेक देशों के साथ हमारे देश का व्यापार यहाँ की मुद्रा रूपया में हो रहा है और हमारी मुद्रा मजबूत हो रही है। आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारत को विकसित एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 अत्यन्त उपयोगी है। इसे अपनाकर हम गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल सकेंगे। यह नीति युवाओं को रोजगार प्रदाता बनाने में भी सहायक है। राज्यपाल ने कहा कि विगत कुछ वर्षों से नेहरू युवा केन्द्र की गतिविधियाँ बढ़ी हैं। उन्होंने राज्य स्तरीय युवा उत्सव के प्रतिभागियों से कहा कि वे इस कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लें। उनकी सहभागिता से ही उनकी कला, प्रतिभा और कौशल आदि सामने आयेंगे। राज्यपाल ने हमारा संकल्प विकसित भारत से संबंधित फोटो प्रदर्शनी-सह- जागरूकता कार्यक्रम का भी उद्घाटन किया। कार्यक्रम को केन्द्रीय संचार ब्यूरो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के अपर महानिदेशक एस के मालवीय एवं राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो हिना रानी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर नेहरू युवा केन्द्र संगठन, बिहार के राज्य निदेशक अंशुमान प्रसाद दास एवं विभिन्न पदाधिकारीगण, राज्य स्तरीय युवा उत्सव के प्रतिभागीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, पटना
अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–06 वर्ष 2023–24

स्थानीय अभिकर्ता श्रेणी (iv) में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मो/निबंधित दुकानदारों से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना, एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 15.02.2024 के अपराहन 12:30 अपराहन बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 1:30 बजे अपराहन में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कार्य का विवरणी :–

क0	सामग्री का नाम एवं विशिष्टयॉं	मात्रा	इकाई	उद्वत की जानेवाली दर
3	Supply of (ISO mark) Photo copier machine for Office of The Executive Engineer, Gardanibagh Building Division, Patna for the year 2023 -24			
	(i) Photo copier machine cum Scanner etc. fitting and fixing etc. included all accessories as per direction of E/I.	01 Nos	Each	

➢ कार्य समाप्ति की अवधि : 15 दिन

➢ विशेष जानकारी हेतु बेबसाईट बेबसाईट www.state.bihar.gov.in/prdbihar देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।

कार्यपालक अभियंता
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भ0नि0वि0, पटना

PR- 016365 (BCD) 2023-24

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार

संक्षिप्त खबरें

निजी बैंक कर्मी से पिस्टल के बल पर 73 हजार की लूट

बोचहा । बाइक सवार अपराधियों का तांडव जारी है।बेखौफ बदमाशों ने पुलिस को चुनौती देते हुए लूट की घटना को अंजाम दिया है। ताजा मामला बोचहां थाना क्षेत्र के मुजफ्फरपुर दरभंगा फोर लाइन आदि गोपालपुर चौक के समीप का है। जहां मंगलवार को फील्ड से कलेक्शन कर लौट रहे कलेक्शन कर्मी से बाइक सवार तीन बदमाशों ने पिस्टल सटाकर बैग लूट लिया। बैग में 73400 रुपये व टैब था। इसके बाद अपराधी कलेक्शन कर्मी के बाइक की चाबी निकाल लिया और शर्कुद्दीनपुर की ओर फरार हो गए। पीड़ित कर्मी सीतामढ़ी के पुपरी थाना के आवापुर गांव निवासी प्रमोद कुमार ने पुलिस को बताया कि वह मंगलवार सुबह कलेक्शन कर शफुद्दीनपुर स्थित ऑफिस लौट रहा था। इसी बीच आदिगोपालपुर के पास बाइक सवार तीन बदमाशों ने घेर लिया और पिस्टल सटा रुपये व टैब रखा बैग लूट लिया। थानाध्यक्ष राकेश कुमार यादव ने बताया कि छानबीन की जा रही है।

अवैध मादक पदार्थ के साथ अभियुक्त गिरफ्तार...

मुजफ्फरपुर। पुलिस ने 50ग्राम स्मैक के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। यह जानकारी देते हुए एसएसपी राकेश कुमार ने बताया कि विशेष जाप मारी के दौरान सिकंदरपुर ओपी पुलिस की टीम ने बजरंगी कुमार उर्फ बजरंगी ठाकुर को मुहल्ला अखाडाघाट ,कपूरी नगर से 50ग्राम स्मैक के साथ रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अपराधकर्मी का पूर्व में आपराधिक इतिहास रहा है। इस सम्बंध में सिकंदरपुर ओपी (नगर थाना)में मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

मनरेगा पीओ ने किया योजनाओं का निरीक्षण

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर प्रखंड क्षेत्र के वासुदेवपुर पंचायत के वासुदेवपुर सीवान से अकबरपुर सिवान तक बनने वाली मिट्टीकरण सह ईट करण से बनने वाली सड़क का निरीक्षण बुधवार को किया। निरीक्षण के दौरान कार्य में गुणवत्ता पूर्ण नहीं होने पर उन्होंने कर्मियों को गुणवत्तापूर्ण कार्य करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि कार्य में किसी तरह की लापरवाही होने पर संबंधित कर्मी पर कार्रवाई की जाएगी।

शिक्षिका के सेवानिवृत होने पर विदाई समारोह का हुआ आयोजन

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत प्लस टू हाई स्कूल कल्याणपुर के परिसर में विद्यालय के शिक्षिका उषा कुमारी सेवानिवृत्ति के अवसर पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाध्यापक अजय नाथ झा ने किया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार की ओर से शिक्षिका को पाक चादर, माला व अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। उनके द्वारा विद्यालय के प्रति किए गए कार्यों पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया। मौके पर पूर्व प्रधानाध्यापिका उषा कुमारी, धीरज कुमार, राजेश कुमार, सुनील कुमार, किरण कुमारी शिक्षक एवं शिक्षिका मौजूद थे।

श्री बाबू की पुण्यतिथि पर उठी भारत रत्न देने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। भूमिहार ब्राह्मण सामाजिक फ्रंट एवं टीम अजीत कुमार ने संयुक्त रूप से बुधवार को बिहार केसरी डॉ श्रीकृष्ण सिंह के 63 वीं पुण्यतिथि पर पर स्थानीय बीबीगंज स्थित पूर्व मंत्री के वासीय परिसर में समारोह आयोजित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया। जयंती समारोह की अध्यक्षता टीम के अध्यक्ष मुखिया इंद्र मोहन झा तथा संचालन पूर्व मुखिया अशोक पासवान ने किया।कार्यक्रम का शुभारंभ समाज के आदर्श श्री कृष्ण सिंह के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित एवं दीप प्रज्वलित कर टीम के संरक्षक, भाजपा के बरिष्ठ नेता पूर्व मंत्री अजीत कुमार व स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने कहा की श्री बाबू समकालीन भारतीय राजनीति के दिव्यमान राजनेता थे। वे संघर्षशील, जुझारू और दूरदर्शी सोच के व्यक्ति थे । श्री बाबू सामाजिक न्याय व संप्रदायिक सद्भाव के प्रणेता थे । उन्होंने समाज के सभी वर्गों के संतुलित विकास पर ध्यान देते हुए बिहार और इस देश को बहुत कुछ दिया था । श्री बाबू स्वामी सहजानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर इस देश में पहली बार बिहार से जमीनदारी प्रथा का उन्मूलन प्रारंभ किया था । उन्होंने बिहार में उद्योग, कृषि , सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, कला व सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करते हुए कल कारखाना, शैक्षणिक संस्थान खुलवा कर बिहार को प्रगति की ओर अग्रसर कराया था। उनके द्वारा रिफाइनरी, खाद कारखाना, भारी उद्योग , देश का सबसे बड़ा स्टील प्लांट, एशिया का सबसे बड़ा रेल यार्ड, गंगोत्री से गंगासागर के बीच प्रथम रेल सह- सड़क पुल , राजेंद्र पुल, कोसी प्रोजेक्ट, पूसा और सबौर में एग्रीकल्चर कॉलेज, बिहार, भागलपुर , रांची विश्वविद्यालय स्थापित कर बिहार को नया स्वरूप प्रदान किया था । श्री कुमार ने कहा कि आज भले श्री बाबू हम सबके बीच नहीं हैं लेकिन उनका कृति अमर है, अमर रहेगा ।

उन्होंने कहा कि श्री बाबू दलित समाज के लोगों को मंदिर में प्रवेश दिला कर सामाजिक समरसता का मिसाल कायम किया था। श्री कुमार ने आजादी के 75 वर्ष बाद भी श्री बाबू को भारत रत्न की उपाधि नहीं दिए जाने पर चिंता व्यक्त करते हुए सरकार से शीघ्र उन्हें भारत रत्न के सम्मान से सम्मानित करने की मांग की। उन्होंने कहा कि श्री बाबू आजीवन अपराजय और 1937 से अपने जीवन के अंतिम समय तक मुख्यमंत्री रहे । उन्होंने कहा कि सरकार उनके जीवनी को एनसीआरटी और बिहार के पाठ्यक्रमों में शामिल करें। श्री कुमार ने सरकार से पटना विश्वविद्यालय का नाम श्री बाबू के नाम पर रखने का भी मांग किया। इस अवसर पर श्री बाबू को श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में मोहम्मद समीम ,उपेंद्र शाह ,मंकू पाठक , निखिल कुमार, हिमांशु कुमार, मोहम्मद फिरोज ,पंकज कुमार ,संतोष सिंह, विवेक कुमार ,अनिल पंडित, संजय शाह ,देवानंद महतो ,मोहम्मद सगिर, लखेंदर पासवान ,संजय पासवान, रवि कुमार ,राकेश कुमार श्रीवास्तव , नित्यानंद कुमार, संजय शाह, शत्रुघ्न सिंह ,अरुण कुमार ,आकाश कुमार, संजय पासवान ,अजय कुमार ,चंदन कुमार ,मोहम्मद सगिर ,उदय कुमार आदि प्रमुख थे।

थानाध्यक्ष को दी गई भावभीनी विदाई

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट थाना पर निवर्तमान थाना अध्यक्ष मोनू कुमार का सैंकड़ों लोगों ने अश्रुपूर्ण आंखों से विदा किया। जैसे ही वे जाने के लिए तैयार हुए थाना के अन्य पदाधिकारी पुलिस कर्मी रोने लगे। मौजूद लोगों को देखकर निवर्तमान थाना अध्यक्ष मोनू कुमार भी भावुक हो गए।थाना क्षेत्र के विभिन्न जगहों से पहुंचे बुद्धिजीवियों एवं जन प्रतिनिधियों ने अंगवस्त्र एवं अन्य उपहार देकर उन्हे सम्मानित किया। स्थानीय लोगों के द्वारा आर्केस्ट्रा ट्रॉली के गीत संगीत के बीच केक काटकर विदाई दी। बता दें की निवर्तमान थाना अध्यक्ष बीते वर्ष 14 मार्च को थानाध्यक्ष के रूप में पदभार संभाले थे। उन्हें गायघाट से पारू थाना का अध्यक्ष बनाया गया है। इससे पूर्व गायघाट थाने में ही दो साल तक एएलटीएफ पदाधिकारी के रूप में कार्यरत रहे। इनके कार्यकाल में थाना क्षेत्र में शराब कारोबार हद तक कंट्रोल था। इसके साथ ही एनएच पार बढ़ रही छिनतई झपटमार की घटना लगभग खत्म जो चुकी थी। इसके साथ ही ने क्राइम भी नियंत्रण में था। क्षेत्र के लोगों ने बताया की निवर्तमान थाना अध्यक्ष मोनू कुमार बिना भेदभाव के आपसी सौहार्दपूर्ण माहौल बनाकर क्षेत्र में रखते हुए थे। क्षेत्र के रामनगर में हुई दो संप्रदाय के बीच हुई तनाव में इनका अहम योगदान रहा। इन्होंने ने विवाद उत्पन्न करने वाले दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए कई को न्यायिक हिरासत में भेजे थे। इस मौके पर एसआई नजरे आलम,उमाकांत मिश्रा, पवन कुमार, श्रीकांत चौरसिया, अभिलाषा कुमारी, शालिनी कुमारी, एवं क्षेत्र के जन प्रतिनिधि समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

ट्रक से भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद,चालक व कारोबारी फरार

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट थाना क्षेत्र के बरुआरी गांव से पुलिस ने ट्रक पर लदे भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद किया गया है। ट्रक पर शराब की पेटियां मवेशियों के दवा के कार्टून के नीचे छुपाकर कर रखी गई थी। वहीं मौके से ट्रक चालक व कारोबारी भागने में कामयाब रहा। प्रभारी थानाध्यक्ष नजरे आलम ने बताया कि बरुआरी पीएनबी बैंक के समीप सड़क किनारे ट्रक फंसे हुए हालत में बरामद किया गया है। आशंका जताई जा रही है कि

स्थानीय शराब कारोबारियों के द्वारा यह बड़ी खेप मंगाई गई थीं उन्होंने बताया कि बरामद की गई विदेशी शराब पंजाब से मंगाई गई थी। इसका खुलासा तब हुआ जब ट्रक गांव में घुसने के दौरान सड़क किनारे फंस गई और चालक और कारोबारी मौके से फरार हो गया।मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने शंका के आधार पर ट्रक को जेसीबी और क्रेन से खिचवाकर थाना , लायी। जिसके बाद जब्त ट्रक का तिरपाल खोलकर देखा तो ऊपर से मवेशियों की विभिन्न प्रकार की दवाओं की पेटियां रखी हुई थी, वही उसके नीचे भारी मात्रा में विदेशी शराब छिपा कर रखी गई थी। हालाकि अबतक शराब की मात्रा का अनुमान नहीं लगाया गया है लेकिन जब्त ट्रक पर लोड सामान को देखते हुए भारी मात्रा में विदेशी शराब होने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

सच्चे राजनेता और सांस्कृतिक व्यक्तित्व के धनी थे श्री बाबू संजय पंकज

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। स्थानीय आमगओलआ स्थित शुभानंदी परिसर में बिहार केसरी डॉ श्रीकृष्ण सिंह की पुण्यतिथि पर आयोजित ह्यसांस्कृतिक व्यक्तित्व श्रीकृष्ण सिंहह्न विषयक विमर्श में बोलते हुए साहित्यकार डॉ संजय पंकज ने कहा कि श्रीकृष्ण सिंह केवल सफल राजनेता और बिहार के निमार्ता मुख्यमंत्री ही नहीं थे, वे एक अध्येता, चिंतक और सांस्कृतिक व्यक्तित्व भी थे। वे समरस समाज के हिमायती, अनेक रूढ़ियों के भंजक तथा सकारात्मक सोच के ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने पूरी निष्ठा से बिहार के समग्र विकास के लिए काम किया। उन्होंने औद्योगिक जाल बिछा दिया। डॉ श्रीकृष्ण सिंह विभिन्न विषयों के ज्ञाता सच्चे अर्थों में मूल्य और मनुष्यता के सहयात्री थी। उन्हें अब तक भारत रत्न से सरकार ने सम्मानित नहीं किया है यह दुख की बात है। उनकी जीवनी को प्रारंभिक वर्ग से लेकर उच्च वर्गों तक में पढ़ाया जाना चाहिए ताकि उनके कार्यों से पीढ़ियां परिचित हो सके। अविनाश तिरंगा उर्फ ऑक्सीजन बाबा ने कहा कि श्रीबाबू विकास पुरुष थे। उनकी तुलना बिहार के किसी मुख्यमंत्री से नहीं की जा सकती है। उनके किए हुए कार्यों को अगर सरकार बचा लेती यही बिहार के लिए उपलब्धि होती। सेंट्रल बैंक के अवकाश प्राप्त पदाधिकारी प्रणय कुमार ने कहा क श्रीबाबू सबका सम्मान करते थे। उनकी विचारधारा राष्ट्र निर्माण की थी। वे एक स्वतंत्रता सेनानी, त्यागी और संत पुरुष थे। डॉ श्री कृष्ण के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद उद्गार व्यक्त करने वालों में सर्वश्री संजीव साहु, अखिलेश राय, सुगंध कुमार, सुधांशु राज, राकेश कुमार सिंह, प्रेमभूषण चैतन्य चेतन आदि थे।

सड़क दुर्घटना में पत्रकार की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । ज़िले के गायघाट थाना अन्तर्गत बेनीबाद ओपी क्षेत्र के पिरौंछा चौक के समीप सड़क दुर्घटना में एक वरिष्ठ पत्रकार की मौत हो गई। मृतक की पहचान दरभंगा शहर के लालबाग इलाके के निवासी विनय पंकज बताया गया है। वे एक दैनिक समाचार पत्र के डेस्क प्रभारी के पद पर कार्यरत थे। बताया जा रहा है मुजफ्फरपुर कार्यालय से कार्य समाप्त कर रात के दो बजे में वापस अपने घर दरभंगा बाईक से लौट रहे थे। बेनीबाद ओपी अध्यक्ष अभिषेक कुमार ने बताया कि सुबह करीब चार बजे में पिरौंछा चौक के समीप एनएच 57 पर किनारे में एक शव पड़ा हुआ मिला। इसके बाद जीवित होने की आस में उन्हें तुरंत गायघाट सीएचसी लाया गया जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। आशंका जताई जा रही है कि कोहरे की वजह उनका बाईक अनियंत्रित होकर एनएच के रेलिंग से टकराने के कारण यह हादसा हुआ है। उन्होने बताया कि शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु एसकेएमसीएच भेज दिया गया है। इसके साथ ही इस घटना की सूचना उनके परिजनों को दे दी गई है।

शिक्षा संगोष्ठी एवं विदाई सह सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत उत्क्रमित मध्य विद्यालय मिश्रौलिया के प्रांगण में शिक्षा संगोष्ठी एवं विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्षता सेवानिवृत प्रधानाध्यापक बालेश्वर सिंह एवं संचालन डॉ राजकुमार सिंह राजेश कर रहे थे। मुख्य अतिथि के रूप में जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना कुमार सत्यम एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी कृष्णदेव महतो उपस्थित हुए। स्वागत गीत वर्ग चतुर्थ की छात्रा स्मिता सुमन एवं स्वागत भाषण रामनारायण सिंह ने प्रस्तुत किया। समारोह के माध्यम से सेवानिवृत्त शिक्षिका मंजू कुमारी को डायरी कलम फूल माला चादर आदि भेंट कर विदाई एवं आगत अतिथियों को सम्मानित किया गया। विदाई गीत मधु भारती एवं प्रीति कुमारी ने प्रस्तुत की। वहीं संगीत एवं कविता पाठ स्मिता सुमन, शकुंतला कुमारी, अभिलाषा कुमारी के द्वारा प्रस्तुत किया गया। मौके पर विद्यालय के वरीय शिक्षिका प्रमिला कुमारी, शिक्षक सुरेंद्र कुमार सिंह सहित विद्यालय के सभी शिक्षक एवं सैकड़ों की संख्या में गणमान्य लोग, अभिभावक एवं छात्र-छात्रा उपस्थित थे।

शादी कर लौट रहे दूल्हे व उसके साले को पुलिस ने किया गिरफ्तार, एक देशी कट्टा एवं तीन कारतूस बरामद

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के दलसिंहसराय थाना की गश्ती दल के द्वारा दो युवकों को एक देशी कट्टा एवं तीन कारतूस के साथ गिरफ्तार किया गया है। दलसिंहसराय डीएसपी नजीब अनवर ने प्रेसवार्ता के दौरान बताया कि सत्यम कुमार विद्यापतिनगर में शादी करने जा रहा था तथा उसके द्वारा शादी में जाने के क्रम में दलसिंहसराय के बिस्कोमान रोड में एक कोचिंग सेंटर में आर्म्स को छुपा कर रख दिया गया था। शादी करके लौटने के क्रम में छुपाये गये हथियार को लेकर कोंचिग से बाहर निकल रहा था। उसी दौरान रात्रि गश्ती की टीम के द्वारा सत्यम कुमार और उसके साला शिवम कुमार को हथियार के साथ पकड़कर हथियार बरामद किया गया तथा दोनों को विधिवत गिरफ्तार किया गया। उक्त दोनों युवकों के पास से दो मोबाईल भी बरामद किया गया है। इस संबंध में दलसिंहसराय थानाध्यक्ष के द्वारा प्राथमिकी दर्ज कर दोनों को न्यायिक अभिरक्षा में भेजा जा रहा है। डीएसपी ने बताया कि एक देशी कट्टा और तीन कारतूस व दो मोबाईल बरामद किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त सत्यम कुमार हसनपुर थाना के सकरपूरा का है, जबकि शिवम कुमार मंसूरचक बेगूसराय के आशापुर का रहने वाला है। छापामारी दल में दलसिंहसराय थाना के अपर थानाध्यक्ष शम्भूनाथ सिंह, पीटीसी संजय कुमार राय, गृहरक्षक उमेश प्रसाद सिन्हा, गृहरक्षक सरोज कुमार, गृहरक्षक अमरजीत कुमार आदि शामिल थे।

समस्तीपुर सदर डीएसपी की रिपोर्ट पर एसपी ने मुफस्सिल थानाध्यक्ष को हटाने की अनुशंसा की

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर मुफस्सिल थानाध्यक्ष सुरेंद्र प्रसाद सिंह पर बड़ी कार्रवाई की गई है। उन्हें मुफस्सिल थाना अध्यक्ष के पद से हटाते हुए अन्यत्र दूसरा जिला भेज दिया गया है। बताया गया है कि उनको मधुबनी जिला भेजा गया है। मुफस्सिल थानाध्यक्ष पर की गई कार्रवाई से चर्चा का बाजार गर्म है। जानकारी के अनुसार सदर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी संजय पांडे की रिपोर्ट पर पुलिस अधीक्षक विनय तिवारी ने उनको समस्तीपुर से हटाने के लिए डीआईजी को अनुशंसा की थी। इसके बाद डीआईजी बाबूराम ने इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रसाद सिंह को समस्तीपुर जिला से मधुबनी जिला भेज दिया है। सदर डीएसपी की रिपोर्ट के अनुसार इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रसाद सिंह मुफस्सिल थानाध्यक्ष के पद पर पदस्थापन की अवधि में घटित अपराधिक घटनाओं का सफल उद्देदन एवं गिरफ्तारी संतोषजनक नहीं कर पाए। वहीं घटित घटनाओं की सूचना उनके द्वारा वरीय पदाधिकारी को समय पर नहीं दी गई, अगर दी भी गई तो काफी विलंब से दी गई। सदर डीएसपी ने रिपोर्ट में लिखा है की मुफस्सिल थाना में पदस्थापित पदाधिकारी व कर्मियों पर इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रसाद सिंह का नियंत्रण एवं अपराध नियंत्रण में आसूचना संकलन प्रभावकारी नहीं पाया गया। सदर डीएसपी ने रिपोर्ट में यह भी लिखा है की इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रसाद सिंह के द्वारा अपने गृह जिले बिहारशरीफ के इस्लामपुर प्रखंड प्रमुख के खिलाफ लगे अविश्वास प्रस्ताव के क्रम में पंचायत समिति सदस्यों को समस्तीपुर जिला मुख्यालय क्षेत्र में ठहराया गया।

प्रवासी मजदूर का शव पहुंचते ही गांव में मचा कोहराम, भाई ने दी मुखाग्नि

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड के भुसवर गांव में प्रवासी मजदूर लालो कुमार का पार्थिव शरीर हिमाचल प्रदेश से गांव पहुंचते ही कोहराम मच गया। बता दें कि विगत 27 जनवरी को सड़क हादसा के कारण गहरी खाई में गिरने से लालो कुमार का इलाज के दौरान अगले दिन मौत हो गया था। जब बुधवार को सुबह सुबह लालो का शव भुसवर पहुंचा तो पिता श्याम कुमार महतो, मां मीरा देवी, बहन पूजा कुमारी, भाई सोनू कुमार, संजीव कुमार सहित सभी परिजन की चीख व चित्कार से लोगों की आंखें नम हो गई। अंतिम दर्शन के लिए गांव के सैकड़ों लोग उमड़ पड़े। उसके बाद सभी लोग शव यात्रा में शामिल हुए। अंतिम संस्कार गांव के ही बुढ़ी गंडक नदी के किनारे में भाई राकेश कुमार ने मुखाग्नि देकर किया। इस शव यात्रा में कमलेश्वर महतो, विश्वनाथ महतो, अवनीश कुमार, वीरेंद्र कुमार, अमरेश कुमार, उपेंद्र मालाकार, बैद्यनाथ कुमार, सूरज कुमार, संजय कुमार, श्याम कुमार, राजेश कुमार, विजय कुमार, टीपू कुमार सहित सैकड़ों समाजसेवी व ग्रामीण शामिल थे।

रामनाथ महतो के शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि संकल्प सभा का हुआ आयोजन

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

शहीद रामनाथ महतो के 22वें शहादत दिवस के अवसर पर सीपीएम विभूतिपुर लोकल कमेटी दक्षिण की ओर से श्रद्धांजलि संकल्प सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम शहीद रामनाथ के नवनिर्मित सौंदर्य कृत स्मारक स्थल का उद्घाटन विधायक अजय कुमार तथा अन्य पार्टी नेताओं के द्वारा किया गया। तत्पश्चात उनके प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता नवीन सिंह कर रहे थे। सभा को संबोधित करते हुए विधायक अजय कुमार ने कहा की रामनाथ ने मार्क्सवादी सिद्धांतों पर चलते हुए इलाके के अंदर कायम सामंती जुल्म के खिलाफ सीपीएम के संघर्ष को आगे बढ़ते हुए लोगों के मान सम्मान और उनके हक अधिकार की लड़ाई को एक ऊंचाई प्रदान किया। सबको न्याय दिलाने के लिए आगे बढ़ते रहे और उनकी शहादत हुई। हम सभी उनकी शहादत को सलाम करते हैं और उनके बताए हुए रास्ते पर आगे बढ़ने का संकल्प लेते हैं। सभा को

- विधायक अजय कुमार ने नवनिर्मित सौंदर्यकृत स्मारक स्थल को किया उद्घाटन

सीपीएम के जिला मंत्री रामाश्रय महतो, राज्य कमेटी सदस्य रामदयाल भारती, जिला सचिव मंडल सदस्य महेश कुमार, सत्यनारायण सिंह, विश्वनाथ महतो, मिथिलेश सिंह, श्याम किशोर कमल, सिया प्रसाद यादव, पवन सिंह, जगदीश महतो, शशिकांत झा, राम नारायण पासवान, राजगीर यादव आदि ने संबोधित करते हुए रामनाथ जी के विचारों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

बहेड़ी में सील बंद नर्सिंग होम व जांच घर भी संचालित

कुकुरमुते की तरह चल रही है अवैध नर्सिंग होम एवं जांच घर दरभंगा कार्यालय जिले के बहेरी प्रखंड क्षेत्र में बार-बार अवैध नर्सिंग होम व जाच घर पर स्वास्थ्य विभाग के द्वारा खाना पूर्ति के लिए छापामारी की जाती है और सील भी कर दिए जाते है परन्तु वहीं सील नर्सिंग होम एवम जाच घर कुछ दिनों के बाद स्वास्थ्य विभाग के अनुमति के पुनः खुल जाते है बताया जाता है कि इस प्रखंड में लगभग ढाई दर्जन नर्सिंग होम एवं तीन दर्जन अवैध जांच घर संचालित है परंतु स्वास्थ्य विभाग से लेकर जिला प्रशासन तक इन अवैध रूप से संचालित नर्सिंग होम एवं जाच घर को पूर्णत बंद करने एवं उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने की हिम्मत जुटा नहीं पा रहे हैं बताया जाता है कि इस प्रखंड में मात्र चार नर्सिंग होम एवं सात जाच घर को विभाग के द्वारा लाइसेंस जारी की गई है परंतु इन नर्सिंग होम एवं जांच घर अ में न- तो अनुभवी चिकित्सक ,न हीं स्वास्थ्य कर्मी तथा टेक्नीशियन कार्यरत है बताया जाता है कि इन नर्सिंग होम में भोले भाले गरीब मरीज का आर्थिक शोषण के साथ-साथ अवैध इलाज भी किए जाते हैं बताया जाता है

एचएम किरण सिंह के अध्यक्षता में विदाई समारोह कार्यक्रम आयोजित

मधुबनी

खजौली प्रखंड़ क्षेत्र के महुआ एकडारा पंचायत के राजकृत मध्य विद्यालय एकडारा के प्रांगण में विद्यालय के एचएम किरण सिंह के अध्यक्षता में विदाई समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया.इस विदाई कार्यक्रम का मंच संचालन शिक्षक डा. वीरेंद्र प्रसाद सिंह द्वारा किया गया. इस विदाई समारोह के दौरान राजकृत मध्य विद्यालय एकडारा विद्यालय के सेवा निवृत्त शिक्षक एचएम वीरेंद्र नारायण साह को विद्यालय के मुख्य अतिथि प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा बीईओ योगेंद्र चौधरी एचएम किरण सिंह शिक्षक वीरेंद्र प्रसाद सिंह एचएम सज्जन लाल पासवान, शिक्षक सुरेश कुमार यादव,ललन कु मार सिंह,अवधेश कु मार यादव,धैर्य नाथ चौधरी,सियाशरण पासवान सहित अन्य शिक्षकों द्वारा पाग,दोपता, पुष्पमाला, अंग वस्त्र, छाता, छड़ी,गीता पुस्तक सहित अन्य समान देकर सम्मानित कर विदाई दी गयी. इस विदाई कार्यक्रम के दौरान प्रखंड़ कुमारी उषा ने कहा कि जो व्यक्ति नौकरी में आता है वह व्यक्ति को एक निश्चित समय सेवा निवृत होना तय है. सेवा निवृत्त एचएम वीरेंद्र नारायण साह मृदु भाषी शिक्षक थे. वे डीडीओ पद रहते हुए भी किसी शिक्षक को वेतन को लेकर किसी भी शिक्षक को कठिनाई नही हुई.प्रमुख ने सेवा निवृत शिक्षक को सेवा निवृत होने पर अपने परिवार के साथ खुशी पूर्वक जीवन निर्वाह करने की नसीहत दी.

वही बीईओ योगेंद्र चौधरी ने कहा कि प्रखंड़ डीडीओ व एचएम वीरेंद्र नारायण साह अपने कार्य काल मे कार्य करते हुए सेवा निवृत हो जाना इससे खुशी क्या हो सकता है.उनके कार्यकाल मे विद्यालय में अच्छे कार्य,चरित्र बनाये रखते हुए अपने छवि को बरकरार रखकर विद्यालय की विकास में उनकी अहम भूमिका रही है.वही शिक्षक सुरेश कुमार यादव ने कहा कि सेवा निवृत्त एचएम प्रखंड़ डीडीओ के पद पर रहते हुए भी अपने विद्यालय में बच्चों को पठन पाठन से लेकर विद्यालय की विकास में लगे रहते थे.वे अपने कार्यकाल में किसी भी शिक्षक को कोई भी विद्यालय मध्य की कार्य हो या शिक्षक के वेतन मध्य की राशि निश्चित समय पर भेजने का काम किये है.वही इस विदाई समारोह कार्यक्रम के दौरान शिक्षक ललन कुमार, सिंह, साधुशरण पासवान,राम उदगार यादव सहित अन्य शिक्षकों ने सेवा निवृत्त एचएम शिक्षक वीरेंद्र नारायण साह की कार्यशैली पर अनुकरण की. इस विदाई समारोह के मौके पर शिक्षक सुरेश कुमार यादव,ललन कुमैर सिंह, शिक्षक राम उदगार यादव, विजय कुमार सिंह,शिक्षिका सुजीता कुमारी,राजेश कुमार,राजनीला कुमारी,सुनीता कुमारी,वेवी कुमारी,वीणा कुमारी, राजीव कुमार सिंह,वीरेंद्र प्रसाद नवीन,विजय पासवान,उमेश यादव सहित विद्यालय के सभी छात्र,छात्राएं एव अभीभावक लोग उपस्थित थे.

निर्माण कार्य का उद्घघाटन करने क्षेत्र संख्या 24 पहुंचे एमएलसी,जीप अध्यक्ष बिंदु गुलाब यादव

मधुबनी

मधुबनी मुख्यालय से सटे रहिका प्रखंड के वसौली पंचायत के साथ क्षेत्र संख्या 24 के विभिन्न पंचायतों में यात्री सेड सड़क नाला घाट का निर्माण कार्य का उद्घाटन करने पहुंचे एमएलसी अंबिका गुलाब यादव जिप अध्यक्ष बिंदु गुलाब यादव साथ जिप सदस्य 24सविता देवी ने संयुक्त रूप से फीता काट कर उद्घाटन किया। बताते चले की बलाट गांव में पक्की नाला व पीसीसी सड़क साथ ककरौल दक्षिणी चौधरी टोल डुमरी में यात्री सेड एवम पीसीसी सड़क ककरौल दक्षिणी के फुहरी गांव में यात्री सेड कमलपुर गांव में पक्की नाला साथ पीसीसी रोड़, पोखर में घाट का निर्माण कार्य का उद्घाटन संयुक्त रूप से किया गया।एमएलसी अंबिका गुलाब यादव जीप अध्यक्ष बिंदु गुलाब यादव ने कहे की गांव के लोगों का वर्षो से इंतजार था वह कार्य जिला परिषद सदस्य क्षेत्र संख्या 24 सविता देवी के सौजन्य से बनने वाले मुख्य सड़क का आज उद्घाटन किया जा रहा है। यह कार्य विशिष्ट अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता मधु राय की उपस्थिति में किया गया। बताते चलें कि यह विभिन्न योजना अन्तर्गत जिला परिषद क्षेत्र संख्या 24 सबिता देवी के कर कमलों द्वारा अनुशंसित यात्री शेड व सड़क का उद्घाटन करने पहुंचे एमएलसी अंबिका गुलाब यादव साथ जिप अध्यक्ष बिंदु गुलाब यादव को मिथिला रीति रिवाज के अनुसार पाग डोपटा से सम्मानित किया गया।तथा संयुक्त रूप से फीता काट कर उद्घाटन किया गया।उद्घघाटन में उपस्थित विशिस्ट अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता मधु राय,जिला परिषद क्षेत्र संख्या 23 उमर अंसारी मदन यादव अजब लाल यादव पूर्व प्रमुख रहिका रामसागर शर्मा मुरारी झा पिंटू यादव सोनधारी यादव छत्तू यादव रामधारी यादव दीपक यादव चंदन एवम सैकड़ों कार्यकर्ता गण उपस्थित थे।

आइसा ने केंद्र सरकार से की रेलवे में सभी रिक्त पदों पर अविलंब भर्ती करने की मांग

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

आइसा के राष्ट्रीय अभियान के तहत मोदी सरकार के 10 साल, यंग इंडिया के 10 सवाल को लेकर समस्तीपुर के बीआरबी कॉलेज और समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर में बुधवार को छात्र छात्राओं के बीच सिग्नेचर कैंपेन चलाया गया। जिसमें सैकड़ों छात्र छात्राओं ने मोदी सरकार के छात्र विरोधी नीति एनईपी 2020, बेरोजगारी के साथ-साथ आम जन विरोधी नीति के खिलाफ सिग्नेचर कैंपेन में भाग लिया और 2024 के लोकसभा चुनाव में मोदी सरकार के खिलाफ वोट करने का संकल्प लिया। वहीं सिग्नेचर अभियान का नेतृत्व आइसा बीआरबी कॉलेज में इकाई अध्यक्ष विशाल कुमार ने किया और समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर में इकाई सचिव संजीव कुमार गोलू ने किया। आगे अभियान में छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए आइसा जिला उपाध्यक्ष दीपक यदुवंशी ने कहा।

संक्षिप्त खबरें

धूमधाम से की जा रही है सरस्वती मेला की तैयारी

प्रात : किरण संवाददाता पुरैनी मधेपुरा

पुरैनी ग्राम पंचायत अंतर्गत वार्ड नंबर 6 सिधियाभित्ता कालेश्वर टोला (पश्चिम) में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अंग एसोसिएशन सरस्वती मेला कमिटी सिंधियाभित्ता कालेश्वर टोला पुरैनी द्वारा सरस्वती मेला का भव्य आयोजन किया जा रहा है जिसकी तैयारी की जा रही है। मेला कमेटी के अध्यक्ष परशुराम मंडल ने कहा कि दिनांक 14.2.2024 (बुधवार) को दिन के 10:00 बजे पूजा अर्चना एवं प्रसाद वितरण किया जाएगा तथा रात्रि में मैया जागरण का कार्यक्रम मशहूर कलाकार पूजा बसुंधरा एवं राजु राज के द्वारा किया जाएगा तथा 15.2.2024 (गुरुवार) को रात्रि में प्रसिद्ध कलाकार रिया सोनी एवं संगीता राज का प्रोग्राम सुनिश्चित है मौके पर मुखिया विनोद काम्बली निषाद, परशुराम सिंह अध्यक्ष, उदय कुमार मंडल उपाध्यक्ष, इंजीनियर शैलेंद्र कुमार मंडल सचिव, कोषाध्यक्ष विकास कुमार सिंह, लालो साहनी कपिलदेव सिंह, सुबोध सिंह, दीपक कुमार सिंह, बुचो सिंह, दीपो मुखिया, घोलट मुखिया, अखिलेश मुखिया, बालो मुखिया, अरुण मंडल, विकास कुमार मंडल, रामप्रवेश मंडल, बबुजन मंडल, वीरेंद्र मुनि उर्फ हापुस मुनि, मंटू सिंह वार्ड सदस्य, डॉक्टर सचिन कुमार सिंह, धर्मदास सहनी, बबलू मंडल, मितेश मुखिया, सुनील मुखिया चुल्हो मंडल, मुकेश मंडल आदि दर्जनों लोग बैठक में मौजूद थे।

इंटरमीडिएट वार्षिक परीक्षा को लेकर बैठक आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

सहरसा।इंटरमीडिएट वार्षिक सैद्धांतिक परीक्षा,2024 को कदाचार मुक्त एवं शांतिपूर्वक संचालन कराने हेतु सभी केन्द्राधीक्षक,सभी दण्डाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी के साथ विकास भवन,सहरसा में जिला पदाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में बैठक की गई। इंटरमीडिएट वार्षिक सैद्धांतिक परीक्षा, 2024,दिनांक 01.02.2024 से प्रारंभ होकर दिनांक 12.02.2024 तक सहरसा,सदर अनुमंडल के 19 एवं सिमरी बख्तियारपुर अनुमंडल के 03,कुल-22 परीक्षा केंद्रों पर संचालित होनी है। यह परीक्षा प्रथम पाली में 9:30 बजे पूर्वाह्न से 12:45 बजे अपराह्न तक तथा द्वितीय पाली में 2:00 बजे अपराह्न से 5:15 अपराह्न तक होनी है। परीक्षा परीक्षा को सर्वथा कदाचार मुक्त एवं शांति पूर्वक संचालन कराने के उद्देश्य से प्रशासनिक व्यवस्था की गई है। सभी परीक्षा केंद्र पर दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है शांतिपूर्ण एवं कदाचार मुक्त परीक्षा संचालित कराना प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी का कर्तव्य होगा। परीक्षा तिथि को केंद्र पर प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी की सहमति से केंद्र अधीक्षक यह सुनिश्चित करेंगे कि कौन वीक्षक किस कमरे में प्रति नियोजित होंगे ? किसी भी परिस्थिति में गैर शिक्षक एवं अन्य किसी कर्मचारी को वीक्षण कार्य में नहीं लगाया जाएगा। शिक्षकेतर कर्मचारी के मामले में अगल- बगल के महाविद्यालय/विद्यालय से ही शिक्षकेतर कर्मचारी को नियुक्त किए जाएं, किसी भी परिस्थिति में बाहरी व्यक्तियों की नियुक्ति नहीं किया जाएगा ताकि परीक्षा की पवित्रता प्रभावित न हो सके।

यदि किसी केंद्र पर सामूहिक नकल होते पाया जाएगा तो संबंधित केंद्र अधीक्षक और वीक्षक विशेष रूप से जिम्मेदार माने जाएंगे। परीक्षा प्रारंभ होने से 30 मिनट पूर्व गेट खोला जाएगा तथा गेट पर ही प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी छात्र एवं शिक्षकों की पूर्व जांच कर तथा उचित पहचान पर ही परीक्षा केंद्र परिसर में प्रवेश की अनुमति देंगे। किसी भी परिस्थिति में अन्य किसी व्यक्ति को जो परीक्षा कार्य हेतु अधिकृत नहीं है, परीक्षा केंद्र परिसर में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। परीक्षा कक्ष में कोई भी परीक्षार्थी एवं वीक्षक मोबाइल फोन लेकर नहीं जाएंगे, इसका अनुपालन दृढ़ता से सुनिश्चित किया जाएगा। प्रत्येक परीक्षा केंद्र के परीक्षा कक्ष में किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण यथा- मोबाइल, ब्लूटूथ आदि रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व परीक्षा केंद्र के बाहर निरोधात्मक सूचना लगाई जाए कि कोई भी परीक्षार्थी नकल करने वाले उपकरण के साथ परीक्षा केंद्र के भीतर प्रवेश न करें। परीक्षा केंद्र परिसर में परीक्षा अवधि में मीडिया कर्मी का प्रवेश पूर्णतः वर्जित रहेगा। केंद्राधीक्षक/प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी सुनिश्चित करेंगे कि इंटरमीडिएट वार्षिक परीक्षा,2024 में सम्मिलित होने वाले सभी परीक्षार्थियों के लिए, जूता-मौजा पहन कर परीक्षा केंद्र में प्रवेश की अनुमति नहीं है। सभी केंद्र अधीक्षक कि यह जिम्मेदारी होगी कि वे छात्राओं की फ्रिस्किंग हेतु परीक्षा केंद्र पर प्रवेश द्वार के बगल में एक कंपार्टमेंट बनाएंगे,जिसमें बाल विकास परियोजना पदाधिकारी या महिला पर्यवेक्षक द्वारा छात्राओं का फ्रिस्किंग किया जाएगा।

छात्राओं की फ्रिस्किंग महिला द्वारा ही किया जाएगा, किसी भी परिस्थिति में फ्रिस्किंग खुले में नहीं किया जाएगा। प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर एक एक वरीय स्टैटिक दंडाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है।जिला स्कूल सहरसा/6101,जिला गर्ल्स स्कूल सहरसा/6102,अनुग्रह नारायण सिंह स्मारक उच्च विद्यालय सहरसा/6103, रमेश झा महिला कॉलेज सहरसा/6104, मनोहर उच्च विद्यालय सहरसा/6105,रूपवती कन्या उच्च विद्यालय सहरसा/6106, आर.एम. मिश्रा एम लॉ कॉलेज सहरसा/6107,एम.एल.टी कॉलेज सहरसा/6108, पी.जी सेंटर सहरसा/6109, आरएम कॉलेज सहरसा/6110,इवनिंग कॉलेज सहरसा/6111, बी.एस.इंटर कॉलेज सिमराहा सहरसा/6112,एस.एन.एस. आर.के.एस कॉलेज सहरसा/6113, प्रेमलता अमरेंद्र मिश्र इंटर कॉलेज सहरसा/6114,परीक्षा भवन-सह-क्षेत्रीय कार्यालय,सहरसा/प्रथम तल 6115,द्वितीय तल/6116,तृतीय तल 6117,चतुर्थ तल/6118,मनोहर उच्च विद्यालय बैजनाथपुर सहरसा/6119,इसी तरह सिमरी बख्तियारपुर अनुमंडल में प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल सिमरी बख्तियारपुर/6120,डीसी इंटर कॉलेज सिमरी बख्तियारपुर/6121,हाई स्कूल सिमरी बख्तियारपुर/6122, बनाये गये है। परीक्षा केन्द्र से 200 गज की दूरी में रहने/घूमने/भीड़ इकट्ठा होने की अनुमति नहीं दी जाएगी, धारा 144 लागू रहेगा। परीक्षा केंद्र के आसपास फोटोस्टेट की दुकानें बंद रहेगी।

एनएसयूआई, एआईएसएफ और आइसा ने संयुक्त रूप से सौंपा मांग पत्र

मधेपुरा । प्रात : किरण संवाददाता

एनएसयूआई, एआईएसएफ और आइसा के संयुक्त प्रतिनिधिमंडल ने बीएनएमयू कुलपति से मुलाकात कर छात्रहितों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर वार्ता किया एवं नौ सूत्री मांग पत्र सौंपा। कुलपति से वार्ता में एनएसयूआई जिलाध्यक्ष निशांत यादव ने कहा की बीएनएमयू में स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर 2023-25 में हजार से अधिक सीट बचे रहने के बावजूद विश्वविद्यालय द्वारा नामांकन पर रोक लगाया जाना दुःखद है। यह छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। उन्होंने कहा की यह कोसी जैसे पिछड़े इलाके के बच्चों को उच्च शिक्षा से वंचित करने की साजिश है जिसे कभी कामयाब नही होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा की बीएनएमयू में स्नातकोत्तर में सीट की कमी होने के कारण हजारों छात्र पीजी करने से हर वर्ष वंचित रह जाते है। लेकिन इस बार सीटों को खाली छोड़ना छात्र विरोधी फैसला है। जिसका हमलोग पुरजोर विरोध करते है। जिलाध्यक्ष निशांत यादव ने कहा की बीएनएमयू अंतर्गत महाविद्यालयों में अतिथि शिक्षकों एवं कर्मचारियों की बहाली किया जाय। पैट 2021 के कोर्स वर्क का समय पूरा हो जाने के बावजूद कोर्स वर्क का परीक्षा फॉर्म अभी तक नहीं भरवाया गया है। बीएनएमयू कुलपति लगातार सत्र नियमित करने की बात दोहराते रहते है लेकिन कथनी और करनी में भारी अंतर दिख रहा है। वही एआईएसएफ जिलाध्यक्ष वसीमुद्दीन उर्फ नन्हे ने कहा की बीएनएमयू में एकेडमिक कैलेंडर लागू किया जाए। यूजी एवं पीजी के परीक्षा परिणाम में बड़े पैमाने पर हो रहे पेंडिंग की समस्याओं का साधन किया जाय। उन्होंने कहा की पीजी के सभी सेमेस्टर के परीक्षा केंद्र पूर्व निर्धारित नॉर्थ कैंपस स्थित परीक्षा भवन किया जाय। बीएनएमयू परिसर में शौचालय एवं पेयजल की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित की जाय। वही आइसा जिला सचिव पावेल कुमार ने कहा की बीएनएमयू परिसर में छात्र - छात्राओं के बैठने के सुविधाओं का अभाव है। छात्र परिसर में यहां वहां भटकते रहते है इसलिए वीवी प्रशासन अविलंब पहल कर छात्रों के लिए बैठने की सुविधा की जाय। प्रतिनिधिमंडल में मुख्य रूप से एनएसयूआई जिला महासचिव नवीन कुमार, जिला सचिव सोनू कुमार, प्रखंड संयोजक आशीष कुमार, जयकिशन कुमार, अंशु पासवान, नीरज कुमार, ज्योतिष कुमार एवं एआईएसएफ नेता प्रभात रंजन आदि मौजूद थे।

मठाही के 21 भूमिहीन परिवारों को मिलेगा जमीन का पर्चा

मधेपुरा प्रात : किरण

सदर प्रखंड के मठाही पंचायत के 21 भूमिहीन महादलित परिवार के लोगों को जमीन का पर्चा दिया जाएगा। इसको लेकर सभी प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। यह जानकारी मठाही पंचायत के मुखिया नवीन कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि 21 भूमिहीनों महादलित परिवार के लोगों को तीन-तीन डिसमिल का पर्चा दिलाया जाएगा। मालूम हो कि मुखिया नवीन कुमार ने पंचायत के भूमिहीन परिवारों को जमीन का पर्चा दिलाने को लेकर लगातार पहल कर रहे थे। मुखिया की पहल पर प्रशासन की ओर से अभी 21 भूमिहीन परिवारों को जमीन का पर्चा देने की स्वीकृति दी है। मुखिया ने बताया कि चिन्हित किए गए सभी भूमिहीन परिवार वार्ड तीन के रहने वाले हैं। वहीं अन्य वार्ड में भी भूमिहीन परिवारों को चिन्हित कर जमीन का पर्चा दिलाने का पहल किया जाएगा। मुखिया ने बताया कि अभी प्रारंभिक तौर मठाही पंचायत के वार्ड तीन के भूमिहीन महादलित राम प्रसाद सदा,उर्मिला देवी, नंदन सदा, अमरेंद्र सदा,विनोद सदा,सुमित सदा सहित अन्य को जमीन का पर्चा दिया जाएगा। इसको लेकर सभी प्रशासनिक प्रक्रिया पूरी कर ली गई है।

भूपेंद्र नारायण मंडल जन्मोत्सव आज

मधेपुरा प्रात : किरण

बीएनएमयू में 01 फरवरी, 2024 (गुरुवार) को पूर्वाह्न 11 बजे से सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता महामना भूपेन्द्र नारायण मंडल की 121 वां जन्मोत्सव मनाया जाएगा। इस अवसर पर सर्वप्रथम भूपेंद्र नारायण मंडल की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि की जाएगी। तदुपरांत दीक्षा स्थल पर कुलपति प्रो. बी. एस. झा की अध्यक्षता में भूपेंद्र नारायण मंडल के जीवन एवं दर्शन पर परिचर्चा का आयोजन किया जाएगा। उपकुलसचिव (स्थापना) डॉ. सुधांशु शेखर ने बताया कि कार्यक्रम की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। भूपेंद्र प्रतिमा स्थल एवं कार्यक्रम स्थल (दीक्षा स्थल) को आकर्षक ढंग से सजाया गया है और सभी महत्वपूर्ण जगहों पर लाइटिंग की गई है।

पूर्व शिक्षा मंत्री सह विधायक की पुण्यतिथि मनाई गई

कन्हैया महाराज आलमनगर मधेपुरा

स्वर्गीय विद्याकर कवि के निज आवास पर बिहार प्रदेश कांग्रेस समिति के पूर्व अध्यक्ष पूर्व शिक्षा मंत्री सहायता एवं सांस्कृतिक के महान साधक ओजस्वी वक्ता स्वर्गीय विद्या कर कवि कि 38 वी पुण्यतिथि विद्याकर कवि साहित्य संस्कृति स्मृति विचार मंच के संयोजक वीरेंद्र प्रसाद सिंह द्वारा आयोजन किया गया इस दौरान उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष प्रमोद कुमार सिंह उर्फ पन्ना जी ने कहा कि स्वर्गीय कवि सही मायने में गरीब शोषित दलितों की आवाज थे उनके चले जाने के बाद से राजनीतिक क्षेत्र में कार्यकताओं को जो सम्मान मिलता था वह धीरे धीरे करके घटता गया है जिस समय में स्वर्गीय कवि बिहार सरकार के मंत्री हुआ करते थे एवं कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हुआ करते थे उस समय में वहीं लोग राजनीति में आते थे जिन्हें सही मायने में शोषित दलित पिछड़ों गरीबों की आवाज उठाने और उसे उसका हक दिलाने के लिए कटिबद्ध रहता था परंतु आज के समय में राजनीतिक क्षेत्र में वैसे कार्यकर्ता मिलना दुश्वार हो गया है सही मायने में अगर उनको श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम उनके दिखाए गए मार्ग और उनकी सोच के मुताबिक जन समस्याओं को दूर करें और बेजुबान ओं की जुबान बनकर उसे उसका हक दिलाएं तभी सच्ची श्रद्धांजलि होगी वही इस दौरान मुकुंद यादव ने स्वर्गीय कवि के द्वारा शिक्षा जगत एवं क्षेत्र के विकास के लिए उठाए गए कदम को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि आज कई वर्ष बीत जाने के बाद भी उनके द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा क्षेत्रों में की जाती है जो आज के नेताओं के लिए मील के पत्थर के समान है वही इस दौरान कई कार्यकताओं ने उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से अपनी अपनी बात रखी वही इस दौरान सनत कवि ने कहा कि विद्याकर कवि राज्य स्तरीय विकास के साथ-साथ देश अस्तर के रचनात्मक कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान किए। भारत में सिक्किम राज्य विलय कमेटी सदस्य के रूप में विद्या कर कवि की महती भूमिका थी। मौके पर कामेश्वर पासवान, चंदेश्वरी राम, शिवेश मंडल, मुकुंद यादव वीरेंद्र सिंह प्रमोद कुमार सिंह, अनिरुद्ध राम, संजय शर्मा, नंदकिशोर सिंह, प्रदीप चौधरी ,सनत कवि संतोष पटेल कपिल देव राम, कांग्रेस के पूर्व प्रखंड अध्यक्ष महेश मोहन झा उर्फ अमर झा सहित कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

ई रिक्शा चालकों ने विभिन्न मांग को लेकर दिया एक दिवसीय धरना, जताया आक्रोश

सहरसा। ई रिक्शा चालक यूनियन जिला कमिटी सहरसा के नेतृत्व में सुपर मार्केट कला भवन से ई रिक्शा चालक के द्वारा निकाल गया प्रतिरोध मार्च निकालकर स्टेडियम में एक दिवसीय धरना दिया। धरना कि अध्यक्षा ई रिक्शा चालक यूनियन के संस्थापक एडवोकेट शिवविलाश मुखिया ने किया। वहीं धरना को संबोधित करते माकपा जिला सचिव रणधीर यादव ने कहा केन्द्र सरकार के द्वारा कहां गया कि भाजपा सरकार कहा था कि प्रति वर्ष दो करोड़ लोगों को रोजगार देंगे लेकिन दस वर्ष बीत जाने के बाद भी लोगों को रोजगार देने के बदले सभी सरकारी संस्थाओं से लगें लोगों का नाम छंटनी जारी है ई रिक्शा चालक के साथ पुलिस प्रशासन और असमाजिक तत्वों के द्वारा आए दिन छोटी से बड़ी घटनाएं कर रहे हैं ई रिक्शा चालकों के लिए सामुचित व्यवस्था किया जाए। वहीं सीटू के कोशी प्रमंडलीय नेता कामरेड विनोद कुमार ने कहा केन्द्र सरकार मजदूरों के अधिकार पर लागातार हमला कर रहे हैं मंहगाई बेरोजगारी के चलते देश में हाहाकार मचा हुआ है लेकिन भारतीय जनता पार्टी धर्म के नाम पर लोगों का मुलभुत समस्या से ध्यान को बांटना चाहते हैं रिक्शा चालक के लिए स्टेन की व्यवस्था किया जाए ताकि इन लोगों को सुविधा मिल सके बिहार राज्य निर्माण कामगार यूनियन के जिला सचिव नसीम उद्दीन,दुखी शर्मा नौजवान सभा जिला सचिव कुलानन्द यादव ने धरना को समर्थन किया। ई रिक्शा चालक संतोष कुमार साह,मो अनवर, मनोज कुमार मुन्ना, सुरेश पासवान,वावु साहब,छोटु दास मनोज राम, संजय साह राधे यादव,मो अकरम,कमल दास,छोटू पासवान आदि ई रिक्शा चालकों ने धरना पर बैठे रहे।

स्पेल बी के 13वें संस्करण के लिए अकादमिक प्रतिभा की घोषणा

मिर्ची के सहयोग से एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस ने पटना में स्पेल बी- स्पेलमास्टर्स ऑफ इंडिया के 13वें संस्करण के क्षेत्रीय समापन समारोह का आयोजन किया, जिसमें युवा दिमागों की असाधारण वर्तनी कौशल का प्रदर्शन किया गया। पहला चरण में अनीसाबाद स्थित इमैनुएल मिशन पब्लिक स्कूल की 14 वर्षीय प्रतिभाशाली कुमारी अंकिता विजयी हुई और फरवरी में होने वाले ग्रैंड फिनाले में स्थान अर्जित किया।

बता दें पटना के 10 स्कूलों के 4058 प्रतिभागियों में से चुने गए कुल 38 छात्र समापन समारोह में शब्दों की लड़ाई में लगे रहे। स्पेल बी पहल न केवल वर्तनी कौशल को बढ़ाने का प्रयास करती है, बल्कि 5वीं से 9वीं कक्षा के छात्रों को अमूल्य जीवन कौशल विकसित करने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। सुश्री जाहिदा परवीन खान, वीपी और क्षेत्रीय प्रमुख एलएंडडी, एसबीआई लाइफ ने विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में कुमारी अंकिता को सम्मान प्रदान किया। वहीं एसबीआई लाइफ के ब्रांड, कॉर्पोरेट कम्युनिकेशंस और सीएसआर प्रमुख रवींद्र शर्मा ने जोर देते हुए कहा कि हम युवा दिमागों को उनकी पूरी क्षमता को उजागर करने का अवसर प्रदान करके सशक्त बनाने की गहरी प्रतिबद्धता से प्रेरित हैं।

सर्वजन दवा सेवन को मिला कलाकारों का भी साथ

प्रात : किरण संवाददाता

- सालाना हजारों लोग हाथीपाँव से हो रहे अपाहिज
- आशा दीदी के सामने खानी होगी दवा
- स्वस्थ्य व्यक्तियों को भी खिलायी जाएगी दवा

सहरसा।जिले में 10 फरवरी से शुरू होने जा रहे सर्वजन दवा सेवन अभियान को अब कलाकारों का भी भरपूर सहयोग मिलने लगा है। हिन्दी, भोजपुरी सहित कई क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों एवं टीवी के कई महत्वपूर्ण धारवाहिकों में अपने अभिनय का लोहा मनवा चुके न्यू कॉलोनी, सहरसा के निवासी राहुल सिन्हा विडियो के माध्यम से सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम में हिस्सा लेकर फाइलेरिया रोधी दवा सेवन करने की अपील की है। राहुल सिन्हा ने कहा फाइलेरिया बीमारी मच्छरों के काटने से होता है, जिसका कोई इलाज नहीं है। इससे डरने की नहीं बचाव करने की आवश्यकता।

देश में सालाना हजारों लोगों हाथीपाँव से अपाहिज

राहुल सिन्हा ने अपने विडियो संदेश में कहा कि देश में सालाना हजारों लोग फाइलेरिया यानि हाथीपांव बीमारी से ग्रसित होकर जीवन भर के लिए अपाहिज हो जाते हैं। यह बीमारी मलेरिया की तरह मच्छरों के काटने से फैलता है। फाइलेरिया एक लाइलाज बीमारी है, जिसका कोई इलाज नहीं है। गांव-शहर, अमीर-गरीब, जात-धर्म के रेखा को पार करके यह बीमारी हाथीपांव किसी को भी जकड़ सकता है। उन्होंने कहा इससे डरे नहीं, इसका बचाव आसान है। साल में एक बार सरकार द्वारा मुफ्त में दी गई दवा खाकर आप इस बीमारी से अपने आपको और अपने परिवार को बचा सकते हैं।

आशा दीदी के सामने खानी होगी दवा

जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी डा. रविन्द्र कुमार ने बताया आगामी 10 फरवरी से जिले में शुरू होने वाले अभियान में आशा दीदी या अन्य स्वास्थ्य कर्मी घर-घर जाकर लोगों को अपने सामने दवा खिलाएंगी। लोगों को यह दवा उनके सामने ही खानी होगी। जिले के सभी दस प्रखंड़ों एवं शहरी क्षेत्र में फाइलेरिया रोग उन्मूलन कार्यक्रम के तहत सर्वजन दवा सेवन अभियान चलाया जाएगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अभिनेता द्वारा विडियो जारी कर संदेश दिया जाना काफी उत्साहवर्धक एवं प्रेरणादायक है। आशा करते हैं इसी प्रकार समाज के जनप्रतिनिधि, धार्मिक गुरूओं, सामाजिक कार्यकर्त्ता, जागरूक युवाओं द्वारा जिले में फाइलेरिया उन्मुलन के लिए लोगों को इसके प्रति जागरूक करते रहें,ताकि अधिक से अधिक लोगों तक यह संदेश पहुँचने पाये।

स्वस्थ्य व्यक्ति को भी खिलायी जाएगी दवा– डा. रविन्द्र कुमार ने बताया फाइलेरिया से ग्रसित व्यक्ति में फाइलेरिया के लक्षण 5 से 15 वर्षों में दिखाई देते हैं। तब तक फाइलेरिया के माइक्रो परजीवी उनके शरीर में जीवित रहते हैं। जिनके द्वारा अन्य लोगों में भी फाइलेरिया का विस्तार हो सकता है। इसके लिए जरूरी है कि एक साथ सभी लोगों को फाइलेरिया निरोधी दवा का सेवन कराया जाय तकि जो लक्षणहीन फाइलेरिया से ग्रसित हैं उनके शरीर में पल रहे परजीवी नष्ट हो जायें एवं स्वास्थ्य व्यक्ति जो फाइलेरिया से ग्रसित नहीं हैं, वे फाइलेरिया का नया शिकार न बनने पायें।

सबों को अपनी मातृभाषा की कद्र करनी चाहिए

मधेपुरा । प्रात : किरण संवाददाता

स्थानीय भूपेंद्र स्मृति कला भवन में बिहार सरकार के उर्दू निदेशालय एवं जिला प्रशासन के तत्वावधान में जिला स्तरीय फरोग-ए-उर्दू सेमिनार व कार्यशाला का एक दिवसीय भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह का उद्घाटन जिला पदाधिकारी विजय प्रकाश मीणा (आईएएस), बीएनएमयू के पूर्व परीक्षा नियंत्रक डॉ.भूपेन्द्र नारायण यादव मधेपुरी, समाजसेवी मोहम्मद शौकत अली, मोहम्मद इजहार, मोहम्मद मुर्तजा, डॉ.परवेज आलम एवं अन्य गणमान्यों द्वारा उर्दू पत्रिका का विमोचन कर किया गया। इस अवसर पर जिला पदाधिकारी विजय प्रकाश मीणा ने अपने संक्षिप्त संबोधन में कहा कि इस पत्रिका के माध्यम से उर्दू भाषा को फैलाव मिलेगा। सभी को अपनी मातृभाषा की कद्र करनी चाहिए। हम लोग भी अपने घर में राजस्थानी भाषा बोलते हैं। हिंदी उर्दू दोनों सगी बहनें हैं। दोनों फले-फुले और आगे बढ़े। मौके पर डॉ.भूपेन्द्र मधेपुरी ने उर्दू को 1980 में मुख्यमंत्री डॉ.जगन्नाथ मिश्र द्वारा द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिए जाने का स्मरण कराया। उर्दू को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने डॉ.मिश्र को नमन किया। मौजूद छात्र-छात्रा व शायरों ने करतल ध्वनि से डॉ.मिश्र के प्रति कृतज्ञता भी ज्ञापित की। अंत में डॉ.मधेपुरी ने अपनी गजल सुनाकर खूब तालियां बटोरी। मौके पर एडीएम मुकेश कुमार एवं डीईओ मधेपुरा ने विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही जिला उर्दू भाषा कोषांग के नोडल पदाधिकारी मोहम्मद मंसूर अंसारी ने अतिथियों व दर्शकों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

जनविरोधी सरकार को सत्ता से बाहर रखने का किया आह्वान :माकपा

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी सीपीएम के आह्वान पर सोनबरसा प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों से हजारों की संख्या में औरत - मर्द हाथों में लाल झंडा, बैनर, मांगों से संबंधित तख्ती लिये - भूमिहीनों को बास हेतु 5 डिसमिल जमीन देना होगा, पर्चा की जमीन पर पर्चा धारियों को दखल दिहानी दिलाना होगा, पर्चा की जमीन का जमाबंदी कायम कर लगान रसीद काटना पड़ेगा, सीलिंग भुदान गेरमजरुआ बिहार सरकार की शेष जमीन को गरीबों के बीच बांटना होगा, आकाश छूती महंगाई पर रोक लगाना होगा, धर्म संप्रदाय के नाम पर नफरत की राजनीति बंद करो, रसोईया ममता आशा कुरियर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहित सभी योजना कर्मी को सरकारी दर्जा देना होगा, वृद्धजनों को कम से कम तीन हजार पेंशन देना होगा, गलत बिजली बिल वापस लेना होगा, बिजली बिल 2022 एवं प्री-पेड स्मार्ट मीटर नहीं चलेगा, बैगर वैकल्पिक व्यवस्था के गरीबों का घर उजाड़ना बंद करो, किसानों को फसल का लाभकारी मूल्य के साथ एमएसपी की गारंटी करना होगा, गरीबों को आवास देना होगा, हिटलर शादी नहीं चली तो मोदी शाही नहीं चलेगी आदि गगनचुंबी नारा लगाते प्रखंड मुख्यालय परिसर पहुंचे। जहां लाल झंडे से पटा भरा जनसैलाब की भीड़ सभा में तब्दील हो गयी। वही कामरेड सुतीमलाल विश्वास द्वारा गाए गए जनगीत - लेनिन का वरदान हमारा प्यारा लाल निशान ने सभा में और चार चांद लगा दिया। पूर्व सरपंच का. माहेश्वर यादव की अध्यक्षता एवं का. रूपेश रंजन के संचालन में चलें सभा को संबोधित करते सीपीएम राज्य सचिव मंडल सदस्य विनोद कुमार ने कहा पूंजीवादी एवं बुजुर्वा दल का कोई राजनीति चरित्र एवं सिद्धांत नहीं होता। ये दल सत्ता और कुर्सी के लिए किसी भी हद को पार कर सकती है - बिहार इसका ताजा उदाहरण है। नीतीश कुमार अपनी राजनीतिक जमीर और जमीन दोनों बेच दिया। 17 साल एनडीए बनाम 17 माह महागठबंधन की सरकार की तुलना जनता कर रही है। विकास के साथ रोजगार की जो बड़ी लकीर महागठबंधन सरकार ने खींची जनता याद रखेगी। जनता के लिए काम करने वाली सरकार से पलटी मार साम्प्रदायिक शक्तियों एवं नफरतियों के साथ सरकार बनाने वाले को जनता माफ नहीं करेगी। उन्होंने आम जनों से अपील किया कि देश की धर्म निरपेक्षता, गंगा यमुनी संस्कृति, लोकतंत्र एवं संविधान बचाने के लिए महागठबंधन एवं इंडिया एलांयस को मजबूत बनावें। सभा को संबोधित करते पार्टी के जिला सचिव का. रणधीर यादव ने कहा देश की आमजनता की मुलभूत समस्या - भोजन वस्त्र आवास शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार खेती किसानी से केन्द्र की मोदी सरकार को कोई लेना देना नहीं है। सभी सम्पत्तियों को कौड़ी के भाव बेचा जा रहा है। रोजगार के साधन बंद है।

मंहगाई आसमान पर है। जीएसटी टैक्स खाने पीने, पढ़न पाढ़न की सामग्री यहां तक की मुर्दे के कफन पर भी लगा कर जनता को मार रही है। किसानों के साथ किये वादे, दो करोड़ प्रति बर्ष नौकरी, कालाधन की वापसी, गरीबों के जन-धन खाते में 15 लाख देने की बात मोदी जी का जुमला साबित हो गया। धर्म संप्रदाय हिन्दू मुस्लिम मंदिर मस्जिद के नाम पर नफरत फैला कर फिर से सत्ता में आना चाहती है देश की जनता जबाव देगी। सभा को संबोधित करते सीपीएम सहरसा जिला सचिव गणेश प्रसाद सुमन ने कहा बिहार सरकार की घोषणानुकूल भूमिहीनों को बास जमीन, पर्चा की जमीन पर पर्चा धारियों को दखल दिहानी ढाक के तीन पात वाली कहानी सावित हो रही है। गरीब गुरवा रोज व रोज प्रखंड से जिला कार्यालयों का चक्कर काटते रहता है परन्तु उसका काम नहीं होता। बिचौलियों का साम्राज्य कायम है। चारों तरफ लूट खसोट जारी है। भू सर्वे के नाम पर लोगों को लूटा जा रहा है। बाबू लोगों को शिकायत करने के बाद भी कोई कार्यवाही लूटने वालों पर नहीं हो पाता है। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी सीपीएम संघर्ष से समाधान पर उतारू है। आवश्यकता पड़ी तो गरीबों का काम नहीं तो कार्यालय में काम नहीं आन्दोलन करेगी। सभा को पार्टी जिला सचिव मंडल सदस्य कामरेड गणेश प्रसाद सुमन, कामरेड रामचंद्र महतो, किसान सभा के जिला सचिव मिथिलेश मस्तना, जिलाध्यक्ष कृष्ण दयाल यादव, पार्टी के अंचल सचिव गुरुदेव शर्मा, पार्टी नेता बद्रीनारायण मंडल, माखन साह, इन्द्रदेव प्रसाद इंदु, जनार्दन यादव, रमेश यादव, ब्यास प्रसाद यादव, जवाहर यादव, असफाक अंसारी, सुतीमलाल विश्वास, अशोक फौलादी, यशोधर मंडल सरपंच, अशोक केसरी, कारी मुखिया, विन्देश मुखिया, बिजय मंडल, उपेन्द्र महतो, मिथिलेश सादा, रायबहादुर सादा, सुरेन्द्र यादव, कमलेश्वरी साह, पांचू पासवान, रामानंद मंडल, बिष्णुदेव सादा,बुधन मुखिया, महिला नेत्री संजू देवी, ललिता देवी, अलख देवी, पूजा कुमारी, माया देवी, नौजवान सभा के जिला सचिव कुलानन्द कुमार, रत्रक्ष की नेत्री मधु प्रिया भारती, सुप्रिया भारती आदि नेताओं भी संबोधित किया। सभा के अंत में प्रखंड विकास पदाधिकारी सोनबरसा को एक प्रतिनिधिमंडल द्वारा 23 सुत्री मांगों का स्मार पत्र समर्पित कर आवश्यक कार्रवाई की मांग किया गया।

सेवानिवृत होने पर प्रधानाध्यापक को दी गई विदाई

प्रात : किरण संवाददाता

सौरबाजार/सहरसा- प्रखंड क्षेत्र के सहुरिया पश्चिमी पंचायत स्थित महावीर मध्य विद्यालय धमसैना में प्रधानाचार्य के रूप में सेवा दे रहे हरिनारायण राम के सेवानिवृत होने पर बुधवार को विद्यालय में विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता विद्यालय के पूर्व समाज सेवी सत्रुधन यादव ने की। मंच संचालन पुर्व प्रधानाचार्य प्रभारी अंगेश कुमार अमन ने की। मौके पर मुख्य अतिथि प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार एवं पुर्व मुखिया प्रतिनिधी अनिमेष कुमार उपस्थित हुए साथ ही बड़ी संख्या में सेवानिवृत शिक्षक, प्रधानाध्यापक, सहायक शिक्षक, विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्य गण एवं स्कूली बच्चें मौजूद होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। इस दौरान विद्यालय परिवार द्वारा सेवानिवृत प्रधानाध्यापक एवं अतिथियों का माल्यार्पण कर अंग वस्त्र, आभूषण, छाता, रामायण ,गीता से सम्मानित किया गया। इस दौरान प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार पूर्व प्रधानाचार्य प्रभारी अंगेश कुमार अमन ने समारोह को संबोधित करते हुए सेवानिवृत शिक्षक हरि नारायण राम के कार्यकाल की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए उनके दीघार्यु होने की ईश्वर से कामना की। वहीं पूर्व मुखिया प्रतिनिधि अनिमेष कुमार ने कहा कि सेवानिवृत्ति प्रधानाचार्य हरि नारायण राम को महावीर मध्य विद्यालय धमसैना का एक सप्ताह पूर्व शिक्षा विभाग के द्वारा प्रभार मिला ही था। और आज 31 जनवरी को विदाई समारोह हो रही हैं। सेवानिवृत्ति प्रधानाचार्य विद्यालय के बच्चों के साथ अभिभावक के रूप में व्यवहार करते थे। यह अपने कार्यों के प्रति कर्मठ, ईमानदार व सुयोग्य नागरिक जाने जाते रहे हैं। इन्होंने विद्यालय की सभी व्यवस्था व साफ सफाई पर हमेशा ध्यान रखा। इनके विद्यालय में रहने से बच्चे अनुशासित रहते थे। ये समाजसेवी के रूप में भी जाने जाते हैं। इनके लंबी उम्र और स्वस्थ रहने की कामना की। विदाई समारोह में भावुक होते हुए सेवानिवृत हुए उक्त प्रधानाचार्य ने कहा की अल्प समय में यहां के लोगों और सहयोगियों का जो स्नेह उनको मिला वे इसे कभी भूल ही नहीं पाएंगे। कहा की सेवानिवृत एक सरकारी प्रक्रिया है। जो सभी सरकारी कर्मी के साथ लागू होता है। पर जितने दिन हमने कार्य किया बहुत कुछ सीखने का ही मौका मिला। मौके पर चन्दौर पश्चिमी पंचायत के पूर्व मुखिया विन्देश्वरी मेहता,मुखिया प्रतिनिधी सह रालोजद जिलाध्यक्ष दिनेश कुशवाह,शंभू कुशवहा, सदानंद मेहता, पुर्व उप मुखिया चन्देशवरी मेहता,प्राचार्य सत्रुघन मेहता, सुनील रजक,राधेश्याम यादव, राम बल्लभ यादव, सालेश्वर कुमार, सालिका कुमारी,स्वेता कुमारी,दिलनशी मैडम,आशा कुमारी,अली गोहर,सुमन सिंह समेत अन्य गण्यमान्य लोग उपस्थित होकर सभा को संबोधित किया।

सम्पादकीय

इस बार प्रहसन में !

मतदाता भी बार-बार ठगे जाने के कारण ऐसी घटनाओं पर नाराज नहीं होते- बल्कि उनमें कौतुक और संबंधित घटनाओं से अपना मनोरंजन कर लेने का भाव जगता है। बिहार की ताजा घटना ने फिलहाल उनका पूरा मनोरंजन किया है।एक बहुचर्चित कथन है कि इतिहास अपने को दोहराता है, लेकिन पहली बार ट्रेजेडी में और दूसरी बार प्रहसन के रूप में। इसका अर्थ यह है कि इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं से जब लोग सबक नहीं लेते, तो उन्हें दोबारा वैसी ही त्रासदी का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद लोग सीख नहीं लेते, तो फिर वैसी घटनाएं प्रहसन के रूप में दोहराई जाती हैं, क्योंकि तब लोग सबक ना सीखने की अपनी भूल के कारण सहानुभूति के नहीं, बल्कि तरस के पात्र बन जाते हैं। बिहार के विभिन्न राजनीतिक दलों ने- जब खुद को छला गया महसूस किया, तब उन्होंने नीतीश कुमार को पलटू राम का नाम दिया। लेकिन जब नीतीश प्रतिद्वंद्वी दल को छल कर साथ आ मिलते हैं, तो उन्हें गले लगाने में वे पार्टियां पूरा उत्साह दिखाती रही हैं। इसलिए बिहार में हुए ताजा घटनाक्रम को एक प्रहसन के रूप में देखा जाएगा। इससे संभव है कि लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को अपना जातीय समीकरण बनाने में सहायता मिले, लेकिन जिस नेता के लिए सारे दरवाजे बंद हो गए थे, उसे फिर से राज्य में अपने गठबंधन का नेता मान कर पार्टी ने अपनी साख को क्षीण किया है।दरअसल, कहा जा सकता है कि वह भी इस प्रहसन का एक प्रमुख पात्र बन गई है। उधर राष्ट्रीय जनता दल और उसकी सहयोगी पार्टियां भी हास्य का पात्र बनी हैं। कुछ रोज पहले तक भाजपा का साथ छोड़ कर आए नीतीश कुमार को समाजवादी एकता और चाचा-भतीजा का पुनर्मिलन बताने वाले नेताओं के साथ आखिर आज किसे हमदर्दी होगी! यह सारा घटनाक्रम भारतीय राजनीति के किसी बड़े मकसद से दूर जाते हुए विशुद्ध रूप से जोड़-तोड़ में तब्दील हो जाने की शायद सबसे बेपर्द मिसाल है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि राजनीति के इस स्वरूप को बेनकाब कर कोई नई शुरूआत करने वाली शक्तियों का पूरा अभाव बना हुआ है। इसलिए मतदाता भी बार-बार ठगे जाने के कारण ऐसी घटनाओं पर नाराज नहीं होते- बल्कि उनमें कौतुक और संबंधित घटनाओं से अपना मनोरंजन कर लेने का भाव जगता है।

गठबंधन बिखरने का जिम्मेदार कौन ?

अजीत द्विवेदी

भाजपा की तरह तो नहीं लेकिन उससे मिलती जुलती एक साइबर आर्मी कांग्रेस के पास भी है। कांग्रेस के पास भी एक इकोसिस्टम है, जिसमें पारंपरिक रूप से भाजपा और संघ विरोधी लोगों की बड़ी संख्या है। ये सब लोग हर स्थिति में उसी तरह से कांग्रेस के बचाव या समर्थन में उतरते हैं, जैसे भाजपा के इकोसिस्टम के लोग भाजपा का समर्थन और बचाव करते रहते हैं। इन दोनों पार्टियों के मुकाबले अन्य पार्टियों के पास ऐसी कोई साइबर आर्मी या इकोसिस्टम नहीं है। आम आदमी पार्टी को एक अपवाद मान सकते हैं। तभी जब विपक्षी गठबंधन इंडियाइ में बिखराव शुरू हुआ तो केंद्रीय पार्टी कांग्रेस की भूमिका पर सवाल उठाने की बजाय सबने नीतीश कुमार और ममता बनर्जी को निशाना बनाना शुरू किया। कहीं कहीं आम आदमी पार्टी भी निशाने पर आई तो कहीं कम्युनिस्ट पार्टियों पर हमला हुआ। लेकिन सवाल है कि क्या विपक्षी गठबंधन नहीं बना या बनने से पहले ही बिखरता दिख रहा है तो उसके लिए प्रादेशिक पार्टियों के नेता ही जिम्मेदार हैं या कांग्रेस की भी कोई जिम्मेदारी बनती है ?बड़ा सवाल यह है कि गठबंधन की केंद्रीय पार्टी के तौर पर क्या कांग्रेस को पहल अपने हाथ में नहीं रखनी चाहिए थी? उसने क्यों गठबंधन की जिम्मेदारी आउटसोर्स की थी? पहले शरद पवार गठबंधन बनाने की कोशिश करते रहे। फिर ममता बनर्जी और के चंद्रशेखर राव ने इसका प्रयास किया। अरविंद केजरीवाल ने भी एक समय इसकी कोशिश की और अंत में नीतीश कुमार ने सफल प्रयास किया। नीतीश पिछले साल अप्रैल में इस सिलसिले में पहली बार मल्लिकार्जुन खडगे और राहुल गांधी से मिले थे। तब तक खबर थी कि राहुल के मन में नीतीश को लेकर नाराजगी है क्योंकि 2015 में गठबंधन के साथ लडे के बाद वे राजद और कांग्रेस को छोड़ कर भाजपा में चले गए थे। अब भी यह कहा जा रहा है कि कांग्रेस को नीतीश पर पहले से भरोसा नहीं था। खडगे ने तो यहां तक कि उनको पहले ही पता चल गया था कि नीतीश गठबंधन छोड़ेंगे। अब सवाल है कि जब पहले ही पता चल गया था या भरोसा नहीं था तो उनको साथ बैठा कर बात करने का क्या मतलब था ?नीतीश कुमार जब गठबंधन का प्रस्ताव लेकर दिल्ली पहुंचे थे और खडगे व राहुल से मिले थे तब दोनों ने उनके प्रयास का समर्थन किया था। कांग्रेस ने न सिर्फ उनके प्रयास का समर्थन किया, बल्कि उनके तय किए गए राजनीतिक एजेंडे को अपनाया था। जाति गणना और आरक्षण की सीमा बढ़ाना नीतीश कुमार का आइडिया था, जिस पर राहुल गांधी कर्नाटक का विधानसभा चुनाव लड़े। उन्होंने नीतीश के एजेंडे को आगे बढ़ाते हुए प्रेस कांफ्रेंस में पूछना शुरू किया कि इसमें कितने ओबीसी हैं या यह बताना शुरू किया कि देश के 90 सचिवों में सिर्फ तीन सचिव ओबीसी हैं या यह नारा दिया कि जितनी आबादी उतना हकइ। सोचें, जब नीतीश पर भरोसा नहीं था तब तो उनको गठबंधन बनाने की जिम्मेदारी दी गई, उनके राजनीतिक एजेंडे को चुनावी मुद्दा बनाया गया और उनकी पहल पर पटना में पहली बैठक हुई। इसका मतलब है कि भरोसा नहीं होने वाली बात बाद में जोड़ी गई है।बड़ी और गठबंधन की केंद्रीय पार्टी होने के नाते यह कांग्रेस की जिम्मेदारी बनती थी कि वह सभी पार्टियों को वैचारिक और राजनीतिक रूप से बांध कर रखे। इसके लिए जरूरी था कि पहली या दूसरी बैठक में ही संगठन का ढांचा बनता, संयोजक व अध्यक्ष नियुक्त किए जाते, न्यूनतम साझा कार्यक्रम तय होता और सबसे जरूरी सीटों का बंटवारा होता। ध्यान रहे नीतीश कुमार और ममता बनर्जी दोनों ने एक सितंबर को मुंबई में हुई बैठक में सीट बंटवारे पर जोर दिया था और 31 अक्टूबर तक की अघोषित समयसीमा भी तय की गई थी। नीतीश ने बैठक में कहा था कि गठबंधन में सबसे पेचीदा मामला सीट बंटवारे का है इसलिए पहले उसे निपटाया जाए। लेकिन कांग्रेस ने इस पर चुप्पी साध ली। कांग्रेस की रणनीति यह थी कि साल के अंत में होने वाले पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव तक इसे टाला जाए क्योंकि उसमें कांग्रेस को अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद थी। अगर वह तीन राज्यों में सरकार बना लेती तो मोलभाव की क्षमता बढ़ जाती। तब वह ज्यादा मजबूती से सीटों के लिए मोलभाव करती। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। कांग्रेस सिर्फ एक राज्य में जीत पाई।जब विधानसभा चुनाव के नतीजे आने लगे तब कांग्रेस के हाथ पैर फूले और सारे नतीजे आने से पहले ही कांग्रेस ने विपक्षी पार्टियों को बैठक का न्योता भेजना शुरू कर दिया, जिसे सबने ठुकरा दिया। जाहिर है सबने कांग्रेस की होशियारी भांप ली थी। इसलिए बाद में बैठक के लिए 19 दिसंबर की तारीख तय हुई। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। ममता बनर्जी ने अकेले लडे का मन बना लिया था तो नीतीश कुमार ने गठबंधन बदलने का फैसला कर लिया था। यह सबको पता है कि ज्यादातर प्रादेशिक पार्टियों के नेता इस उम्मीद में गठबंधन से जुड़े थे कि सब मिल कर लड़ेंगे तो भाजपा की सीटें कम कर देंगे और तब इधर या उधर के गठबंधन में बड़ी भूमिका मिल सकता है। त्रिशंकु लोकसभा की स्थिति में सर्वोच्च पद मिलने की भी उम्मीद कई नेता लगाए हुए थे। लेकिन हिंदी पट्टी के तीन राज्यों में भाजपा की जीत और कांग्रेस की हार ने उनका मनोबल तोड़ दिया। पहले गठबंधन फाइनल करने और सीट बंटवारे में हुई देरी से निराशा था और ऊपर से दिसंबर के पहले हफ्ते में आए चुनाव नतीजे ने नेताओं को और निराश किया। भाजपा को टक्कर देने की उम्मीद टूटी तो सब अपने अपने रास्ते तलाशने लगे।इसलिए किसी एक नेता या एक पार्टी को जिम्मेदार ठहरा कर उसके ऊपर ठीकरा फोडे से किसी को कुछ हासिल नहीं होने वाला है। यह सही है कि नीतीश कुमार का विपक्षी गठबंधन छोड़ कर भाजपा में जाना एक बड़ा झटका है। लेकिन कांग्रेस की भूमिका पर भी चर्चा होनी चाहिए, जिसने पहले दिन से गठबंधन को खुले दिल से नहीं अपनाया था। लेफ्ट पार्टियों की भी भूमिका की समीक्षा होनी चाहिए, जिनको भाजपा को हराने के लिए वैचारिक प्रतिबद्धता व समर्पण सबसे चाहिए लेकिन अपने असर वाले राज्य में किसी से समझौता मंजूर नहीं है और न किसी खास नेता के प्रति अपनी निजी खुन्नस छोडी है। ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल ने गठबंधन के अंदर रह कर जैसी राजनीति की उस पर भी बात होनी चाहिए। ममता ने बैठक में अचानक खडगे का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए क्यों सुझाया और क्यों केजरीवाल ने उसका समर्थन किया, इसकी व्याख्या होगी तब पता चलेगा कि कैसे गठबंधन के अंदर गठबंधन कैसे काम कर रहा था, जिसने एकजुट होकर भाजपा से लडे की संभावनाओं को कमजोर किया। सपा के साथ तो कांग्रेस ने कुछ मसला निपटाया है लेकिन शिव सेना के उद्धव ठाकरे गुट का मामला अब भी उलझा है।

है आपकी अदाओं से गिरगिट भी शर्मसार ...

नौ बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले नितीश कुमार अलग अलग अवसरों पर कभी यू पी ए समर्थित मुख्यमंत्री बने तो कभी भाजपा व एन डी ए समर्थित तो कभी कांग्रेस आर जे डी के साथ महागठबंधन बनाकर। दुर्भाग्यवश डॉ राजेंद्र प्रसाद,जय प्रकाश नारायण व कपूर्री ठाकुर की कर्मभूमि वाले इसी राज्य में सत्ता से चिपके रहने में महारत रखने वाले नेता राम विलास पासवान को भी राजनीति का मौसम वैज्ञानिक कहा जाता था। कहने को तो यह नेता स्वयं को धर्मनिरपेक्ष राजनीति का पैरोकार बताते हैं परन्तु महज सत्ता की मलाई खाने के लिये इन नेताओं ने साम्प्रदायिक शक्तियों से हाथ मिलाने में कभी परहेज नहीं किया। आज देश में दक्षिणपंथियों का जो विस्तार देखने को मिल रहा है उसमें देश के ऐसे तमाम गिरगिटों की भी अहम भूमिका है जिन्होंने सिर्फ और सिर्फ सत्ता की खातिर बार बार अपने जमीर का सौदा किया। परन्तु पिछले दिनों जिन परिस्थितियों में और जिस समय नितीश कुमार ने आर जे डी-कांग्रेस का साथ छोड़ एक बार फिर भाजपा के साथ मिलकर मुख्यमंत्री पद की शपथ नौवीं बार ली है, उनके इस अप्रत्याशित कदम ने उन्हें पूरी तरह बेनकाब कर दिया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि कहाँ तो नितीश कुमार के ही प्रथम प्रयास से कठ.ऊकअ गठबंधन वजूद में आया। नितीश की पहल पर ही 23 जून 2023 को 18 विपक्षी दलों की सबसे पहली बैठक पटना में ही हुई थी। यहाँ तक कि उन्हें कठ.ऊकअ गठबंधन का संयोजक तक बनाने की चर्चा चली परन्तु अचानक ऐसा क्या हुआ कि उन्हें राजनैतिक व वैचारिक धर्म परिवर्तन के लिये मजबूर होना पड़ा ? कहां तो अगस्त 2022 में एनडीए से अलग होने के बाद नीतीश कुमार यह कहते फिर रहे थे -कि वे मर जाना पसंद करेंगे लेकिन भाजपा के साथ लौटना पसंद नहीं करेंगे। उन्होंने एनडीए से अलग होते समय भाजपा पर जेडीयू को कमजोर करने का आरोप भी लगाया था। उधर भाजपा की तरफ से भी गृह मंत्री अमित शाह का उसी समय बयान आया था कि नीतीश कुमार के लिए एनडीए के दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो चुके हैं। परन्तु इन सभी ह्यकथनोंह्ण को दरकिनार करते हुये दोनों ने ही एक दूसरे से हाथ मिला लिया ?

निर्मल रानी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार हैं

नितीश कुमार बिहार की राजनीति के लिये कितना ही प्रासंगिक क्यों न रहे हों परन्तु उनके राजनैतिक जीवन का हासिल यही है कि उन्हें मीडिया ने पलटी मार या पल्टूराम का खिताब दे डाला है। नौ बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले नितीश कुमार अलग अलग अवसरों पर कभी यू पी ए समर्थित मुख्यमंत्री बने तो कभी भाजपा व एन डी ए समर्थित तो कभी कांग्रेस आर जे डी के साथ महागठबंधन बनाकर। दुर्भाग्यवश डॉ राजेंद्र प्रसाद,जय प्रकाश नारायण व कपूर्री ठाकुर की कर्मभूमि वाले इसी राज्य में सत्ता से चिपके रहने में महारत रखने वाले नेता राम विलास पासवान को भी राजनीति का मौसम वैज्ञानिक कहा जाता था। कहने को तो यह नेता स्वयं को धर्मनिरपेक्ष राजनीति का पैरोकार बताते हैं परन्तु महज सत्ता की मलाई खाने के लिये इन नेताओं ने साम्प्रदायिक शक्तियों से हाथ मिलाने में कभी परहेज नहीं किया। आज देश में दक्षिणपंथियों का जो विस्तार देखने को मिल रहा है उसमें देश के ऐसे तमाम गिरगिटों की भी अहम भूमिका है जिन्होंने सिर्फ और सिर्फ सत्ता की खातिर बार बार अपने जमीर का सौदा किया। परन्तु पिछले दिनों जिन परिस्थितियों में और जिस समय नितीश कुमार ने आर जे डी-कांग्रेस का साथ छोड़ एक बार फिर भाजपा के साथ मिलकर मुख्यमंत्री पद की शपथ नौवीं बार ली है, उनके इस अप्रत्याशित कदम ने उन्हें पूरी तरह बेनकाब कर दिया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि कहाँ तो नितीश कुमार के ही प्रथम प्रयास से कठ.ऊकअ गठबंधन वजूद में आया। नितीश की पहल पर ही 23 जून 2023 को 18 विपक्षी दलों की सबसे पहली बैठक पटना में ही हुई थी। यहाँ तक कि उन्हें कठ.ऊकअ गठबंधन का संयोजक तक बनाने की चर्चा चली परन्तु अचानक ऐसा क्या हुआ कि उन्हें राजनैतिक व वैचारिक धर्म परिवर्तन के लिये मजबूर होना पड़ा ? कहां तो अगस्त 2022 में एनडीए से अलग होने के बाद नीतीश कुमार यह कहते फिर रहे थे -कि वे मर जाना पसंद करेंगे लेकिन भाजपा के साथ लौटना पसंद नहीं करेंगे। उन्होंने एनडीए से अलग होते समय भाजपा पर जेडीयू को कमजोर करने का आरोप भी लगाया था। उधर भाजपा की तरफ से भी गृह मंत्री अमित शाह का उसी समय बयान आया था कि नीतीश कुमार के लिए एनडीए के दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो चुके हैं। परन्तु इन सभी ह्यकथनोंह्ण को दरकिनार करते हुये दोनों ने ही एक दूसरे से हाथ मिला लिया ?

हालांकि जे डी यू के कुछ नेताओं की तरफ से इस घटनाक्रम का दोष कांग्रेस पर मढ़ने की हास्यास्पद कोशिश की जा रही है। परन्तु दरअसल इस बार का पाला बदल नितीश कुमार पर बदनामी के साथ साथ अवसरवादिता की पराकाष्ठा की भी छाप छोड़ जायेगा। आर जे डी के वरिष्ठ नेता शिवानंद तिवारी तो यहाँ तक कहते हैं कि नीतीश के बारे में राजनैतिक विशेषज्ञ कुछ नहीं बता सकता बल्कि उनके बारे में तो मनोचिकित्सक ही बता सकता है। नीतीश ने तो स्वयं ही विपक्ष के लोकतंत्र बचाने के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए थे। उन्हें तो शर्म आनी चाहिए, यह धोखा देना है। यदि उन्हें कोई शिकायत थी तो वे बात कर सकते थे। जबकि कांग्रेस ने नीतीश कुमार पर धोखा देने और रंग बदलने का आरोप लगाया है। परन्तु कुछ राजनैतिक विश्लेषक इस पूरे नाटकीय घटनाक्रम के पीछे कुछ और ही वजह बता रहे हैं। कहा जा रहा है कि जेडीयू के नेताओं व उनके निकट सहयोगियों पर जांच एजेंसियों का कसता शिकंजा इसकी प्रमुख वजह है। मिसाल के तौर पर प्रवर्तन निदेशालय द्वारा गत वर्ष सितंबर में जेडीयू विधान पार्षद राधाचरण सेठ की मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में हुई गिरफ़्तारी। बाद में पिछले ही साल नीतीश कुमार के एक और निकट सहयोगी जेडीयू विधायक और मंत्री विजय चौधरी के साले अजय सिंह उर्फ कारू सिंह के आवास पर आयकर विभाग की छापेमारी,जेडीयू के करीबी माने जाने वाले एक और ठेकेदार गब्बू सिंह के ठिकानों पर आयकर विभाग द्वारा की गयी छापेमारी, बेगूसराय में बिल्डर कारू सिंह के आवास पर की गयी छापेमारी आदि केंद्र सरकार के ऐसे शिकंजे थे जिनके बाद यह संभावना बढ़ने लगी थी कि अब यह जांच नीतीश कुमार के कुछ करीबी अधिकारियों तक भी पहुँच सकती है। माना जा रहा है कि नीतीश के मन में भी यह डर जरूर रहा होगा कि कहीं इन्हीं मामलों में अब उनसे भी पूछताछ न शुरू हो जाए?

वैसे भी दुनिया देख रही है कि भाजपा से मुखालिफत की क्या कीमत लालू यादव व उनके परिवार के लोगों को चुकानी पड़ रही है। जबकि ठीक इसके विपरीत हिमन्त बिश्व शर्मा और अजित पवार जैसे लोग जोकि भाजपा विरोधी होने के समय कभी विपक्ष के भ्रष्ट नेताओं की सूची में सबसे ऊपर हुआ करते थे वही सत्ता के समक्ष दंडवत करने के बाद अब किस तरह सत्ता सुख भोग रहे हैं ? इसलिये नितीश कुमार के पाला बदल का ताजातरीन खेल किसी राजनैतिक मजबूरी या किसी सहयोगी विपक्षी दल से लगी ठेस के कारण नहीं बल्कि स्वयं को सत्ता में सुरक्षित बनाये रखने के मकसद से खेला गया है। यहां एक बार फिर कांग्रेस नेताओं की दूरदर्शिता को स्वीकार करना पड़ेगा कि उन्होंने नितीश की इच्छानुसार उन्हें कठ.ऊकअ गठबंधन का संयोजक नहीं बनने दिया। अन्यथा यही स्थित यदि नितीश के कठ.ऊकअ गठबंधन के संयोजक के रूप में सामने आती फिर तो शर्तिया तौर पर कठ.ऊकअ गठबंधन का जनाजा ही निकल गया होता? वैचारिक रूप से भी नितीश का इस समय भाजपा से गलबहियां करने का कोई औचित्य नहीं था। क्योंकि जाति जनगणना जैसे संवेदनशील विषय पर भाजपा जे डी यू आमने सामने थे। जबकि नितीश तो जाति जनगणना को लेकर इतने उतावले थे कि उन्होंने आनन फानन में बिहार में जाति जनगणना भी करा डाली। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिये जाने जैसी नितीश कुमार की महत्वपूर्ण मांग आजतक भाजपा ने पूरी नहीं की। ऐसे में यदि नितीश को जांच का भय नहीं था तो आखिर क्या वजह थी कि उन्होंने रंग बदलने के अपने ही कीर्तिमान को फिर से तोड़ दिया ? क्या ऐसे अवसरवादी,सिद्धांतविहीन,सत्ता चिपकू व स्वार्थी राजनीतिज्ञों को भारतीय राजनीति के आदर्श नेताओं में गिना जा सकता है ? या यह कहा जाये कि नितीश जी- है आपकी अदाओं से गिरगिट भी शर्मसार।

नीतीश के फैसले से जद (यू) का भविष्य अंधकारमय

भारतीय जनता पार्टी केवल लोकसभा चुनावों तक नीतीश का समर्थन कर सकती है और उसके बाद उनका समर्थन समाप्त हो सकता है। कुछ लोग सवाल करते हैं कि क्या गठबंधन 2025 के बिहार विधानसभा चुनावों तक जारी रहेगा? रविवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार में सत्तारूढ़ महागठबंधन को छोड़कर एनडीए में वापसी का बम फोड़ दिया। उन्होंने इंडिया विपक्षी गठबंधन भी छोड़ दिया, जिसे उन्होंने आठ महीने पहले बनाने की पहल की थी। इससे इंडिया गठबंधन को एक बड़ा महत्वपूर्ण झटका लगा है। राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया ब्लॉक ने भाजपा को आगामी लोकसभा चुनाव में हराने का एक मौका गंवा दिया लगता है। यह तलाशने लायक है कि बिहार की राजनीति राष्ट्रीय परिदृश्य को कैसे प्रभावित कर सकती है। कुमार के एन .डी .ए . में लौटने के निर्णय से भाजपा को राजनीतिक लाभ हो सकता है और इससे बिहार में राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) और कांग्रेस कमजोर भी हो सकती है। यह अंतत : राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी गुट को प्रभावित कर सकता है। यह भाजपा–जद(यू) साझेदारी भाजपा की चुनावी संभावनाओं में सुधार कर सकती है जिससे आगामी 2024 के आम चुनावों में भाजपा और एनडीए को अधिक सीटें मिल सकती हैं और मोदी को जीत की हैट्रिक हासिल करने में भी मदद मिल सकती है।

कल्याणी शंकर

स्वतंत्र लेखक

नीतीश और भाजपा की साझेदारी कितने समय तक चलेगी। वे आगामी लोकसभा चुनाव तक साथ मिलकर काम कर सकते हैं, लेकिन उसके बाद क्या होगा यह अनिश्चित है। भारतीय जनता पार्टी केवल लोकसभा चुनावों तक नीतीश का समर्थन कर सकती है और उसके बाद उनका समर्थन समाप्त हो सकता है। कुछ लोग सवाल करते हैं कि क्या गठबंधन 2025 के बिहार विधानसभा चुनावों तक जारी रहेगा?

रविवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार में सत्तारूढ़ महागठबंधन को छोड़कर एनडीए में वापसी का बम फोड़ दिया। उन्होंने इंडिया विपक्षी गठबंधन भी छोड़ दिया, जिसे उन्होंने आठ महीने पहले बनाने की पहल की थी। इससे इंडिया गठबंधन को एक बड़ा महत्वपूर्ण झटका लगा है। राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया ब्लॉक ने भाजपा को आगामी लोकसभा चुनाव में हराने का एक मौका गंवा दिया लगता है।

यह तलाशने लायक है कि बिहार की राजनीति राष्ट्रीय परिदृश्य को कैसे प्रभावित कर सकती है। कुमार के एन. डी.ए. में लौटने के निर्णय से भाजपा को राजनीतिक लाभ हो सकता है और इससे बिहार में राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) और कांग्रेस कमजोर भी हो सकती है। यह अंततः राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी गुट को प्रभावित कर सकता है। यह भाजपा-जद(यू) साझेदारी भाजपा की चुनावी संभावनाओं में सुधार कर सकती है जिससे आगामी 2024 के आम चुनावों में भाजपा और एनडीए को अधिक सीटें मिल सकती हैं और मोदी को जीत की हैट्रिक हासिल करने में भी मदद मिल सकती है।

भाजपा ने स्पष्ट रूप से विपक्षी गठबंधन को तोड़ने और जद(यू) गठबंधन के साथ साझेदारी करने की कोशिश की है। पार्टी बिहार में नीतीश कुमार को एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में देखती है और मानती है कि उनकी साझेदारी 2024 के चुनावों में जीत हासिल करा सकती है। मौजूदा विधानसभा में कुमार के पास केवल 45 सीटें हैं, जबकि राजद और भाजपा के पास क्रमशः 79 और 78 सीटें हैं। इसके बावजूद नीतीश मुख्यमंत्री बने रहने में कामयाब रहे।

क्या नीतीश कुमार के इंडिया गठबंधन छोड़ने में कांग्रेस पार्टी का हाथ था? इस झटके के पीछे की वजह नीतीश को किनारे करने और कांग्रेस को आगे बढ़ाने का फैसला था। कुमार ने कांग्रेस पार्टी पर इंडिया गठबंधन के असफल होने के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाया और तर्क दिया कि संवादहीनता की स्थिति के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई।

जनता दल-यूनाइटेड (जद-यू) के प्रवक्ता के सी त्यागी ने कांग्रेस पार्टी पर विपक्षी गुट पर हावी होने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। 13 जनवरी को मुंबई में सीपीआई (एम) महासचिव सीताराम येचुरी ने नीतीश कुमार को ब्लॉक के संयोजक के रूप में प्रस्तावित किया। इस सुझाव का उपस्थित अधिकांश अन्य नेताओं ने समर्थन किया। हालांकि, राहुल गांधी ने अपनी असहमति जताई। बाद में ममता बनर्जी ने गठबंधन प्रमुख के रूप में कांग्रेस प्रमुख खड़गे का नाम प्रस्तावित किया, त्यागी का दावा है कि यह एक व्यापक साजिश का हिस्सा था। त्यागी ने कहा कि नीतीश कुमार ने एक गठबंधन बनाया जो सभी गैर-कांग्रेसी दलों को एकजुट करता है। हालांकि, अब यह विघटित हो रहा है। पंजाब और बिहार में स्थिति खराब होने की कगार पर है और पश्चिम बंगाल में भी इंडिया गुट टूट रहा है।

नीतीश कुमार ने पुष्टि की कि उन्होंने इंडिया गठबंधन छोड़ दिया है क्योंकि यह गठबंधन उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। उन्हें लगा कि गठबंधन के लक्ष्यों की दिशा में काम करने वाले वे एकमात्र व्यक्ति हैं। हालांकि इस साझेदारी ने सभी गैर-कांग्रेसी दलों को एक साथ ला दिया, लेकिन गठबंधन बिहार में बिखर गया और पंजाब और बंगाल में लगभग ध्वस्त हो गया।

एक अनकही कहानी भी है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता लालू यादव ने नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के लक्ष्य के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक विपक्षी गठबंधन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस योजना का मकसद लालू यादव के बेटे के लिए बिहार का मुख्यमंत्री बनने का रास्ता साफ करना था। हालांकि, यह योजना तब विफल हो गई जब मल्लिकार्जुन खड़गे को नये गठबंधन के नेता के रूप में चुना गया। नतीजतन, नीतीश कुमार ने बेहतर भविष्य के लिए भाजपा के साथ गठबंधन करने का फैसला किया।

नतीजों की परवाह किये बिना सत्ता पर काबिज रहने की उनकी अटूट इच्छा के कारण कुमार की विश्वसनीयता धूमिल हो गई है। उन्होंने हमेशा अपने फायदे के लिए कई बार राजनीतिक निष्ठाएं बदली हैं और वर्तमान में उनके पास बिहार में सबसे लंबे कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री का खिताब है। नीतीश का ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि 2013 में दूसरे विकल्प तलाशने के बाद नीतीश कुमार ने भाजपा छोड़ दी और राजद तथा कांग्रेस से गठबंधन किया। 2019 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने फिर से भाजपा के साथ गठबंधन किया, और 2020 में फिर मुख्यमंत्री बने। हालांकि, दो साल बाद कुमार ने भाजपा छोड़ दी और राजद के साथ मिलकर नई सरकार बनाई। अब उन्होंने राजद का साथ भी छोड़ दिया है, इसीलिए उन्हें पलटू राम भी कहा जा रहा है। एक अनुभवी राजनेता होने के कारण 72 वर्षीय नीतीश कुमार को विपक्ष की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में देखा जा रहा था, परन्तु बार-बार पलटी मारने की उनकी आदत के कारण उन्हें ऐसा मौका खोना पड़ा है। भाजपा द्वारा इंडिया गठबंधन को खत्म करने से प्रधानमंत्री मोदी को

राजनीति की नहीं रेल की बात भी कीजिये....

राकेश अचल

भारत में आजकल अनुशासन के बजाय दुःशासन पर्व चल रहा है। अनुशासन पर्व आज की पीढ़ी के लिए एक अनजान शब्द है लेकिन जो छठवें -सातवें दशक में जन्मी पीढ़ी है उसे पता है कि अनुशासन पर्व किस चिड़िया का नाम था ? अनुशासन पर्व हालाँकि देश पर थोपे गए आपातकाल का एक नारा था लेकिन इस नारे के फलस्वरूप पूरा देश पटरी पर थ। रेल से लेकर सरकारी दफ्तर तक। आज देश में आपातकाल नहीं है शायद यही वजह है की देश बेपटरी हो रहा है और एक -एक दिन में देश की एक-दो,दस नहीं बल्कि 400 रेलों को रद्द किया जा रहा है। अनुशासन पर्व में पहली बार रेलें घड़ी की सुई का कांटा मिलाकर चलती थीं। दरअसल रेलों के बेपटरी होने की वजह मौसम के अलावा कुप्रबंधन भी है लेकिन कोई इस बारे में बात नहीं करना चाहता,क्योंकि सब राजनीति में उलझे है। सत्तापक्ष तो 365 दिन चुनाव प्रबंधन में उलझा रहता है और विपक्ष अपना वजूद बचने की तैयारी में। बचा-खुचा समय राम जी की स्तुति में निकल रहा है। देश की फिक्र किसी को नहीं है। देश की फिक्र करना आजकल अपराध है। आजकल केवल और केवल कुर्सी की फिक्र करने की छूट है। भारतीय रेल गनीमत है कि आज की सरकार की उपलब्धियों में शामिल नहीं है ये आजादी के बाद और 2014 के पहले कि सरकारों की उपलब्धि है।इसके विकास में सबसे बड़ा योगदान कांग्रेस कि सरकारों का है। भारतीय रेल एक लाख किलोमीटर से कहीं ज्यादा लम्बी पटरियों पर दौड़ते हुए हर दिन कोई ढाई करोड़ लोगों को आवागमन की सुविधा मुहैया करने वाली एक सार्वजनिक परिवहन प्रणाली ह। यानि हमारी रेलें प्रति दिन जीतनीई सवारियां ढोती है उतनी तो ऑस्ट्रेलिया की आबादी भी नहीं है। दुर्भाग्य से एक दशक पहले तक जो रेल आम भारतीय की रेल थी वो अब धीरे-धीरे आम आदमी के लिए अलभ्य होती जा रही है। एक दशक में रेलवे को आधुनिक बनाने की तमाम कोशिशों में एक कोशिश इसके निजीकरण की थी किन्तु इस मोर्चे पर सर्कार कामयाब नहीं हो पायी। सरकार चीन की तर्ज पर बुलट ट्रेने भी नहीं चला पायी किन्तु उसके स्थान पर वन्दे भारत रेलें चलीं जो समय पर नहीं चल पा रहीं। ये वंदे भारत रेलें महंगी हैं सो अलग,लेकिन इस मुद्दे पर कोई बोलने वाला नहीं।

आंदोलन करने वाला नहीं। रेलवे की आधिकारिक जानकारी के मुताबिक 26 जनवरी को जिस दिन देश भारतीय गणतंत्र दिवस की हीरक जनयन्ति मना रहा था उस दिन भारतीय रेलवे ने 372 ट्रेनों को रद्द कर दिया कर दिया है. अगले दिन भी रेलवे ने 304 ट्रेनें रद्द की थी. रद्द होने वाली रेलों में पैसेंजर, मेल और एक्सेप्रेस गाड़ियां शामिल हैं. दुर्गियाना एक्सरप्रेस, लिच्छोवी एक्सहप्रेस, हमसफर एक्सरप्रेस और झारखंड एक्सीप्रेस सहित लंबी दूरी तक करने वाली कई रेलें ही नहीं दिल्ली से राजधानियों के बीएच चलने वाली वनदे भारत रेलें भी इसमें शामिल हैं। कड़ाके की ठंड में ट्रेनों के रद्द होने से यात्रियों की परेशानियां बढ़ गई हैं लेकिन देश की सत्ता बिहार और झारखण्ड को हिलाने में लगी है। देश में इतनी बड़ी संख्या में रेलें रद्द होने का ये नया इतिहास है। रेलें रद्द होने से रेलवे को कुल कितना नुकसान हो रहा है इसका कोई आधिकारिक आंकड़ा हमारे पास नहीं है। लेकिन ये आंकड़े जरूर हैं कि एक ही मंडल में प्रतिदिन 20 हजार से ज्यादा टिकट केंसिल कराये जा रहे हैं और किराया वापस किया जा रहा है।देश में रेल के देश दर्जन से ज्यादा मंडल हैं। ये नुकसान करोड़ों में है लेकिन किसी को कोई फिक्र नहीं। वर्ष 2016 से रेलवे का अपना बजट भी सरकार ने पेश करना बंद कर दिया है। अब आपको पता ही नहीं चल पाता की रेलवे कि सेहत कैसी है ? आप एक दशक पहले जितने किराये में एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक पैसेंजर रेल से जा सकते थे अब उतना पैसा तो प्लेटफार्म टिकिट का है। रेलवे की पार्किंग हवाई अड्डे की पार्किंग की तरह महंगी हो चुकी है।

संक्षिप्त खबरें

सांसद ने दी बधाई

छपरा सदर। महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि मैं महामहिम राष्ट्रपति को संसद के समय उनका पहला संबोधन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामना देता हूं।उन्होंने राष्ट्रपति की अभिभाषण को प्रधानमंत्री मोदी के 10 वर्षों में किए गए जनकल्याणकारी कार्यों, चहुमुखी विकासात्मक कार्यों, सांस्कृतिक पुनर्जागरण के गौरवपूर्ण कार्यों तथा वैश्विक शांति एवं कूटनीति के द्वारा भारत को सर्वोपरि बनाने की दिशा में किए गए कार्यों का सूक्ष्म आईना बताया। राष्ट्रपति के संबोधन को चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आजादी के अमृत काल में भारत को आत्मनिर्भर और वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए किए गए कार्य एवं संकल्पना की दिशा में एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक कदम है। सिग्रीवाल ने राष्ट्रपति उद्बोधन के प्रमुख बिंदुओं को जन-जन तक पहुंचाने की अपील की।

शौच को गयी युवती का अपहरण के मामले में प्राथमिकी दर्ज

बनियापुर (सारण) थाना क्षेत्र के कन्हौलो मनोहर गाव मे शौच को गयी युवती का अपहरण किए जाने का मामला दर्ज कराया गया है,जिसमे अज्ञात के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई गयी है। मामले मे पीड़ित द्वारा बताया गया है कि मेरी 20 वर्षीय पुत्री रात्रि मे शौच को जाने की बात कह घर से बाहर गयी,काफी देर तक जब वापस नही लौटी तो आस पास नाते रिस्तेदार के यहां खोज बीन की गयी,कही पता नही चला,शक है की किसी ने शादी की नियत से अपहरण कर लिया है। मामले मे पुलिस घटना की जाँच मे जुटी है।

जिलाधिकारी ने राजनीतिक दलों के साथ की बैठक

- जिलाधिकारी ने विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त की

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी अमन समीर द्वारा बुधवार को सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की गई, तथा उन्हें संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात मतदाता सूची में नाम जोड़ने एवं विलोपन किए गए अन्य कार्यों के संबंध में जानकारी दी गई। बैठक में आगामी लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के परिप्रेक्ष्य में मतदान प्रक्रिया का संचालन एवं मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर आमजनों के बीच जागरूकता संबंधी की जा रही तैयारियों की भी विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। इस संबंध में जिलाधिकारी ने विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त किए गए। उक्त बैठक में अपर समाहर्त्ता, निदेशक, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, उप समाहर्त्ता भूमि सुधार सोनपुर तथा उप निर्वाचन पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

नीतीश कुमार को एनडीए में आने से विकास का मार्ग होगा प्रशस्त : रंजीत कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। एनडीए घटक दलों के नेताओं द्वारा परिसदन में एक सांझा प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित किया गया। जिसमें राजग गठबंधन के घटक दलों के सभी जिला अध्यक्ष एक साथ एक मंच पर उपस्थित थे। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने कहा कि हम सभी साथ हैं,बिहार और देश के विकास हित में यह गठबंधन होना आवश्यक था , डबल इंजन की सरकार में विकास को और गति मिलेगी। रणजीत कुमार सिह ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि जिला के प्रशासनिक अधिकारियों को जनहित के कार्यों में तेजी लाने के साथ-साथ जनता के हित में कार्य करने की जरूरत है। जबकि जदयू के जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू ने कहा कि राजग गठबंधन अटूट है, हम सभी साथ-साथ हैं। नई सरकार से बिहार के विकास में और तेजी आएगी, सभी गठबंधन के मित्र साथी मिलकर काम करेंगे। प्रेस वार्ता में लोजपा(रा) के जिला अध्यक्ष दीपक कुमार ने कहां कि बिहार के हित में सही गठबंधन है, हम सब साथ हैं, और साथ मिलकर बिहार को आगे बढ़ाएंगें। वहीं आरएलजेडी के जिला अध्यक्ष अशोक कुशवाहा ने कहा कि सामाजिक न्याय का गठबंधन है, अब न्याय के साथ विकास इसी गठबंधन में संभव है। प्रेस वार्ता में हम के जिला अध्यक्ष मनोज महतो भी उपस्थित थे। प्रेस वार्ता का संचालन करते हुए भाजपा महामंत्री विवेक कुमार सिंह ने कहा नीतीश कुमार का घर वापसी हुई है, बिहार और राष्ट्रहित में यह गठबंधन आवश्यक है। प्रेस वार्ता में जदयू जिला महासचिव प्रभास शंकर,प्रवक्ता जदयू मो. फिरोज, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी बलवंत सिंह,जिला मंत्री अधेद्व शेखर, जदयू महासचिव गुड्डू खान, भाजपा किसान मोर्चा राकेश कुमार सिंह, लोजपा (रा) नगर अध्यक्ष आलोक पांडेय, जदयू अनुसूचित जाति जिला अध्यक्ष शंभू माझी तथा सभी एनडीए गठबंधन के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

निगम प्रशासन ने एनएच 19 पथ को किया आतिक्रमण मुक्त

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। नगर आयुक्त सुमित कुमार के निर्देश पर एनएच 19 गुदरी भगार होते बाईपास तक बने पथ पर किये गए अतिक्रमण को नगर प्रशासन द्वारा हटा दिया गया है। बता दें कि इस पथ को अतिक्रमण किए जाने से आवागमन में लोगों को काफी परेशानी हो रही थी।एनएच 19 पथ को जिन व्यक्तियों द्वारा अतिक्रमण किया गया था, उनमें लक्ष्मण चौधरी,सुदर्शन चौधरी,अशोक चौधरी,नागेंद्र ओझा ,भानु कंस्ट्रकशन,संजीत सोनी,नागेंद्र साह, बीरेंद्र चौधरी,कृष्णा कुमार,एस के पाठक,राकेश सिंह,रामबाबू साह,नीरज सिंह,जीतेन्द्र राय तथा मदन पाण्डेय गुदरी आदि का नाम शामिल है। इस भगार रोड पर अतिक्रमण किए जाने के कारण इस सड़क से वाहनों का आवागमन मे काफी परेशानी हो रही थी। अतिक्रमण किए गए लोगों के विरुद्ध मंगलवार को अतिक्रमण हटाओ अभियान में प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी सत्येंद्र कुमार सिंह,अंचल अधिकारी नीरज कुमार झा, नगर प्रबंधक नगर निगम तथा पुलिस अवर निरीक्षक दिनेश शर्मा, पीएस आई जुली कुमारी एवं भगवान बाजार थाना से 10 पुरुष तथा 10 महिला पुलिस बल के अतिरिक्त नगर निगम से स्वछता पदाधिकारी संजीव कुमार मिश्रा,सुमित कुमार एवं नगर प्रबंधक वेद प्रकाश वर्णवाल आदि शामिल थे। नगर आयुक्त सुमित कुमार के आदेश पर छपरा नगर निगम से जेसीबी एवं पर्याप्त मात्रा मे मजदूर लगाकर अतिक्रमण को हटाया गया।

विदाई सह सम्मान समारोह में सम्मानित किए गए शिक्षक-शिक्षिका

प्रात : किरण संवाददाता

जलालपुर प्रखंड के कन्या मध्य विद्यालय जलालपुर मे अवकाश प्राप्त एच एम उमेश तिवारी व शिक्षिका रिता सिन्हा का विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गयोजिसमे शिक्षक द्वय का अंग वस्त्र छाता धार्मिक पुस्तक व अन्य सामग्रियों से सम्मानित किया गया`कार्यक्रम मे बोलते हुए वरिष्ठ समाजसेवी रमेश तिवारी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरूजनो की महत्ता सर्वोपरि हैशिक्षको को समाज का आशीर्वाद प्राप्त है कि वे इस पुनित कार्य को कर रहे हैइस देश का भविष्य भी शिक्षको के हाथों मे हैउन्हें बहुत बड़ी जिम्मेवारी मिलीहै उनके अवकाश लेने के बाद भी समाज मे उनकी भूमिका कम नहीं होती है युवा नेता प्रमोद सिग्रीवाल ने शिक्षक द्वय की कुशलता की कामना करते हुए कहा कि शिक्षक कभी रिटायर नहीं होते हैउनका जीवन सदैव समाज निर्माण के लिए होता हैसभी ने शिक्षक द्वय के स्वस्थ व दीर्घायु जीवन व समाजिक क्षेत्र मे शीर्ष पर पहुंचने की कामना की`कार्यक्रम की अध्यक्षता एच एम प्रशांत कुमार पांडेय व संचालन रामकुमार सिंह ने कियो मौके पर जिला पार्षद प्रियंका सिंह, इंसाफ अली ,शैलेन्द्र सिंह, ढुनमुन सिंह,वीरेंद्र ओझा ,मो इशराफिल अवधेश तिवारी अष्टदेव सिंह मनोज मिश्रा ललनदेव तिवारी मधुसूदन दूबे रामकुमार मिश्रा विनोद तिवारी ,मुखिया उत्तम बैठा, प्रशांत पांडेय, अनिल सिंह धीरज तिवारी, मो मुस्तफा हुसैन, मनोज तिवारी ताराशंकर महतो ,जलेश्वर पंडित, अखिलेश्वर पांडेय ,मणीन्द्र पांडेय,योगेन्द्र तिवारी, कुन्नु दूबे ,उमेश कुमार सिंह, विनय पूरी ,अविनाश तिवारी सहित क ई अन्य भी थे

महोत्सव में सम्मानित हुआ कलाकार

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। इमेजिनेशन संस्था के द्वारा बिहाररंगम बिहार रंग महोत्सव 2024 पांच दिवसीय राष्ट्रीय नाटक महोत्सव के इस आयोजन में आज तीसरा दिन रंग सेतु की अनूठी प्रस्तुति के रूप में गजल एवं भजन गायक बिहार के रतन छपरा निवासी रौनक रतन की प्रस्तुति की गई इस अवसर पर श्री उमेश शर्मा मैनेजिंग डायरेक्टर एरिस्टो फार्मा प्रदेश अध्यक्ष कला सांस्कृति प्रकोष्ठ वरुण कुमार सिंह सुजीत कुमार अरविंद रीजनल डायरेक्टर आरबीआई रंजीत चौधरी डिप्टी जनरल मैनेजर आरबीआई अमित कुमार डिप्टी जनरल मैनेजर आरबीआई श्री मुनाजिर अफीम डिप्टी जनरल मैनेजर आरबीआई इस अवसर पर अरिस्टो फार्मा के मैनेजिंग डायरेक्टर उमेश शर्मा जी ने कहा कि ऐसे होनहार गायक रतन रौनक हमारे बिहार के भविष्य है इन कलाकारों को जब भी जरूरत पड़ेगी हमारे संस्थान भरपूर मदद करेगी एवं कला संस्कृति के अध्यक्ष वरुण सिंह ने कहा इमेजिनेशन एवं रंग सेतु जैसी संस्थान हमेशा वैसे कलाकारों की तलाश करती है जो छोटे शहरों में रहते हुए संस्कृति की घटा बिखरते रहते हैं हम सब मिलकर हमेशा ऐसे कलाकारों को अच्छे मंच प्रदान करने का काम करेगी ताकि कल होकर यह कलाकार हमारे देश की शान बन सके ।

रोगी कल्याण समिति को परिवर्तित कर जन आरोग्य समिति के रूप में मिल रहा है बेहतर परिणाम

- कायाकल्प के बाद एनक्वास को लेकर तैयारी शुरू: डीपीएम

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मासुमगंज और बड़ा तेलपा में जन आरोग्य समिति की बैठक सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल सिन्हा के अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर डीपीएम अरविंद कुमार, डीपीसी रमेश चंद्र कुमार, सदर पीएचसी के एमओआईसी सह उपाध्यक्ष डॉ श्याम सुंदर प्रसाद, मासुमगंज स्थित यूपीएचसी के एमओआईसी सह सचिव डॉ हरि नारायण प्रसाद, महिला पर्यवेक्षिका पूनम कुमारी, एलडीसी नीरज कुमार, जीविका समूह की स्वीटी कुमारी और कुमारी सिमा उपस्थित थी। वहीं बड़ा तेलपा स्थित यूपीएचसी में जन अरोग्य समिति की बैठक के दौरान स्थानीय एमओआईसी सह सचिव डॉ नवनीत कुमार, एमओ डॉ अनु सिंह, पीएसआई के राजीव कुमार, यूनिसेफ के सुबोध पाण्डेय, डीईओ केशव कुमार, जीविका की मीना देवी सहित कई अन्य अधिकारी और कर्मी उपस्थित थे। जन आरोग्य समिति के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को किया जा रहा है मजबूतः सिविल सर्जन समिति की बैठक का अध्यक्षता करते हुए सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल सिन्हा ने कहा कि हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर (आयुष्मान भारत) के तहत जिले में संचालित हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स (एचडब्ल्यूसी) को पहले से भी ज्यादा सुदृढ़ किया जा रहा है। ताकि एचडब्ल्यूसी के अंतर्गत आने वाले सभी लाभार्थियों को बेहतर चिकित्सीय सुविधाएं मिल सके। इसके लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले के सभी एचडब्ल्यूसी पर आयुष्मान भारत-जन आरोग्य समिति का गठन किया गया है। जिसके माध्यम से स्थानीय पंचायतों के जनप्रतिनिधि, शहरी क्षेत्र के वार्ड पार्षद और पोषक क्षेत्रों के ग्रामीणों को जोड़कर सुविधाओं के अंतर्गत आने वाली समस्याओं का निराकरण किया जा सके। कायाकल्प के बाद एनक्वास को लेकर तैयारी शुरू: डीपीएम - वहीं जिला स्वास्थ्य समिति के डीपीएम अरविंद कुमार ने बताया कि कायाकल्प योजना के तहत नामित होने वाले शहरी स्वास्थ्य केंद्र बड़ा तेलपा और मासूमगंज के एमओआईसी सहित अन्य सभी कर्मियों को स्वास्थ्य विभाग द्वारा सम्मानित किया गया। हालांकि अभी भी इन लोगों को बेहतरीन प्रदर्शन करने का मौका मिला है। क्योंकि कायाकल्प के बाद अब राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (एनक्वास) से प्रमाणीकरण के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए सामान्य अस्पतालों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए विभाग द्वारा मुख्य रूप से 12 तरह की सुविधाओं पर फोकस किया जाता है। रोगी कल्याण समिति को परिवर्तित कर जन आरोग्य समिति का हुआ गठनः डीपीसी जिला योजना समन्वयक सह डीसीक्यूए रमेश चंद्र कुमार ने जन अरोग्य समिति की बैठक के दौरान उपस्थित पदाधिकारी और सदस्यों को बताया कि राज्य स्वास्थ्य समिति के कार्यपालक निदेशक संजय कुमार सिंह के दिशा निर्देश और सिविल सर्जन के मार्गदर्शन में जिले के सभी एचडब्ल्यूसी पर स्वास्थ्य सेवाओं व सुविधाओं के प्रावधान के संबंध में इसके संचालन, प्रबंधन, उपभोग और जवाबदेही सुनिश्चित कराने में संबंधित जन प्रतिनिधियों की सक्रिय भागेदारी के लिए आयुष्मान भारत-जन आरोग्य समिति के रूप में एक मंच उपलब्ध कराया गया है। क्योंकि जिला स्वास्थ्य समिति के घटक के रूप में कार्य करने में सहयोग मिलता है। शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में रोगी कल्याण समिति को परिवर्तित कर जन आरोग्य समिति (जैस) के रूप में गठन किया गया है।

सेक्टर मजिस्ट्रेट और टैग पुलिस पदाधिकारी नियुक्ति के साथ ही सीधे चुनाव आयोग के अधीन हो : डीएम

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। सेक्टर मजिस्ट्रेट और उनके साथ टैग पुलिस पदाधिकारी नियुक्ति के साथ ही सीधे चुनाव आयोग के अधीन हो जाते हैं। उनका कार्य अति महत्वपूर्ण है। जो सबसे पहले शुरू होता है और अंत तक चलता है. उक्त बातें जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी अमन समीर ने प्रेक्षा गृह में आयोजित सेक्टर मजिस्ट्रेट और पुलिस पदाधिकारियों के प्रशिक्षण में कहीं. उन्होंने कहा कि इस बार का चुनाव थोड़ा यूनिक होने वाला है. क्यूंकि पीसीसीपी का पद समाप्त कर दिया गया है. ऐसे में सेक्टर की जवाबदेही पहले से बढ़ जाएगी. सेक्टर को संबोधित करते हुए डीएम ने कहा कि फिल्ड में आप सभी ही चुनाव आयोग के आंख और कान हैं. आपकी रिपोर्ट पर ही कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं. इसलिए अपने कर्तव्य और दायित्व के प्रति गंभीर रहने के साथ आचार और व्यावहार को बिल्कुल निष्पक्ष रखने की जरूरत है. उन्होंने सेक्टर पदाधिकारियों के कार्य को चार भागों में बांटते हुए बहुत ही सरल तरीके से समझाया. उन्होंने बताया कि प्रथम भाग में आपको अपने क्षेत्र के अधीन आने वाले सभी बूथों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए. तभी भेद्यता मैपिंग हो सकेगी. इसके तहत वलनरेबुल क्षेत्र और बूथ की संवेदनशीलता को चिन्हित किया जा सकता है. उन्होंने इसके लिए विगत दो चुनाव में हुए घटना-दुर्घटना, कम वोट प्रतिशत आदि को भी आधार बनाने का टिप्स दिया. साथ ही भ्रमण के दौरान कमजोर तबके के टोलों और इलाकों को आक्षादित करने और कॉन्फिडेंस बिल्डिंग करने का सतत प्रयास करने का टास्क दिया. दूसरे भाग में उपलब्ध न्यूनतम संसाधन का आंकलन करने और उसे पूरा कराने का फॉलोअप करने की बात कही. तीसरे चरण में मतदान प्रक्रिया की पूर्ण जानकारी होने की बात कही. इसके तहत मतदान के पूर्व, मतदान के दिन और पश्चात किए जाने वाले कार्य की जानकारी दी. इसके लिए इवीएम संचालन की पूर्ण जानकारी रखने को कहा. डीएम श्री समीर ने बताया कि सेक्टर की अहम जिम्मेवारियों में आदर्श आचार संहिता का अनुपालन भी शामिल है. उन्होंने दस दिन के भीतर नजरी नक्शा, कम्युनिकेशन प्लान और विहित प्रपत्र में अचूक रूप से रिपोर्ट जमा करने की हिदायत दी ताकि समय पर अग्रेतर कार्रवाई की जा सके. उन्होंने रिपोर्ट को बिल्कुल गोपनीय रखने का निर्देश देते हुए सभी बीडीओ को साप्ताहिक बैठक कर फॉलोअप करने की बात कही. डीएम ने कहा कि समय-समय पर मेरे स्तर पर भी समीक्षा की जाएगी. पुलिस अधीक्षक डॉ गौरव मंगला ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि प्रशासन के लिए स्वच्छ और निष्पक्ष चुनाव कराना बड़ा और गम्भीर कार्य है. इस कार्य में लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी. ऐसा पाए जाने पर सख्त कार्रवाई निश्चित होगी. उप निर्वाचन पदाधिकारी जावेद एकबाल ने पीपीटी के माध्यम से बिन्दुवार हर कार्य को समझाया. पूर्व में दीप प्रज्वलित कर विधिवत उद्घाटन किया गया. मौके पर नगर आयुक्त सुमित कुमार, सहायक जिला पदाधिकारी सुश्री श्रेया सिंह, एडीएम मो मुमताज आलम, निदेशक डीआरडीए कैयूम अंसारी, एसडीएम सोनपुर कुमार निशांत विवेक, डीआईओ तारणी कुमार, अवर निर्वाचन पदाधिकारी एखलाक अंसारी, डीसीसीएलआर सदर गौरव शंकर, डीसीएलआर सोनपुर सुश्री सुनंदा कुमारी, ओएसडी मनीष कुमार और सभी बीडीओ आदि उपस्थित थे।

सांसद प्रतिनिधि ने उपमुख्यमंत्री का किया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

बिहार मे एनडीए गठबंधन की सरकार बनने पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी जी को उप मुख्यमंत्री बनने पर उनको बाबा हरिहरनाथ मंदिर का प्रसाद खिलाकर मुँह मीठा कराया और बुके शाल देकर उनके आवास पर भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह ने बधाई और शुभकामनायें दिया और कहा की अब फिर से इनके कार्यकाल मे बिहार मे कानून का राज चले गा और विकास होगा और कहा की इससे पहले भी उनको जो जिम्मेदारी मिली है वह बखूबी निभाए है और बिहार मे उनके कार्य की चर्चा होती है सभी लोग कार्य की सराहना करते है विरोधी मे अभी से ही चर्चा हो रहा है इस अवसर पर प्रदेश भाजपा नेता मित्युंनजय झा युवा नेता राहुल सिंह विकास सिंह मोनू सहित अनेक लोग उपस्थित थे ।

अवकाश प्राप्त शिक्षक धीरेंद्र कुमार का विदाई सह सम्मान समारोह आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मशरख प्रखंड क्षेत्र के कन्या मध्य विद्यालय मशरक में आज बुधवार को विदाई सह सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता अवकाश प्राप्त शिक्षक ललन पांडेय तथा संचालन अनुलाल ने की । समारोह को विद्यालय की शिक्षिका गिरजा कुमारी द्वारा अभिनंदन पत्र पढ़ करके शुरूआत किया गयासमारोह को संबोधित करते हुए शिक्षकों ने सेवानिवृत्ति शिक्षक सह डी डी यो धीरेंद्र कुमार को अंग वस्त्र देखकर सम्मानित किया गया। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार रूप से चर्चा किया लोगों ने कहा कि इनके शिक्षक कल में शिक्षकों को सभी कामों में सहयोग मिला है और आशा करते हैं कि आगे भी का सहयोग मिलता रहेगा इस अवसर पर प्राथमिक शिक्षक संघ के सचिव अनीमेश मोहन संजीव कुमार सिंह शैलेंद्र कुमार उर्फ मंटू विनय कुमार तिवारी इरशाद खान सरोज कुमार सिंह अरुण कुमार सिंह उपेंद्र कुमार , धर्मेंद्र कुमार कुशवाहा, अरुण कुमार पांडेय मुख्य रूप से शामिल थे। आएं हुए आगंतुको का स्वागत विद्यालय के शिक्षक कुमार प्रमोद एवं नरेंद्र कुमार सिंह नेकी का उधर उधर मसरख डी डी ओ का प्रभार अब्दुल रहीम को दिया गया।

प्रधानाध्यापक हुए सेवानिवृत विदाई सह सम्मान समारोह आयोजित

- बड़ी संख्या में विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं सहित पूर्व में सेवानिवृत प्रधानाध्यापक एवं शिक्षिकाएं तथा शिक्षक प्रतिनिधियों एवं आगंतुक गणमान्यों ने श्री आलम के 36 वर्षों के लंबे कार्यकाल की सराहना की

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा नगर के प्राथमिक विद्यालय पाठक टोली के प्रधानाध्यापक शहूद आलम बुधवार को सेवानिवृत हो गए. विद्यालय परिवार की तरफ से उनका विदाई सह सम्मान समारोह आयोजित किया गया. इस अवसर पर बड़ी संख्या में विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं सहित पूर्व में सेवानिवृत प्रधानाध्यापक एवं शिक्षिकाएं तथा शिक्षक प्रतिनिधियों एवं आगंतुक गणमान्यों ने श्री आलम के 36 वर्षों के लंबे कार्यकाल की सराहना की तथा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला. सभी ने श्री आलम के शैक्षणिक यात्रा तथा उनके कुशल नेतृत्वक्षमता के बारे में विस्तार से बताया. उन्होंने शिक्षक की गरिमा को सर्वोपरि बताते हुए उन्हें कर्तव्य पथ पर अविचलित हो चलने की सीख दी. इस अवसर पर शिक्षक शिक्षिकाओं ने अंग वस्त्र, बुके और शॉल भेंट कर श्री आलम को सम्मानित किया. स्वागत संबोधन करते हुए शिक्षक एहतेशाम आलम ने अपनी ओज पूर्ण वाणी से प्रधानाध्यापक का गुणगान किया. उन्होंने बताया कि वे अपने प्रधान के कभी शिष्य भी रहे है. सम्मान समारोह को प्राथमिक शिक्षक संघ सारण के अध्यक्ष ब्रजेश कुमार सिंह, उप महा सचिव, बिहार दिनेश सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष अभय कुमार सिंह, प्रोफेसर योगेंद्र यादव आदि ने संबोधित किया. कार्यक्रम में विमलेंदु शेखर, अनूप कुमार मिश्रा, अनिल शर्मा, कमलेश सिंह, विजय किशोर सिंह, अमीरूल हक, बलराम पांडे, नीलम कुमारी गुप्ता, शकुंतला श्रीवास्तव, धीरज कुमार सहित अनेक शिक्षाविद और छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

45वीं जूनियर बालिका हैंडबॉल का विजेता दिल्ली जबकि उपविजेता बिहार हुआ

- गुजरात एवम हिमाचल प्रदेश को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान की ट्रॉफी मिली
- सारण के संत जलेश्वर एकेडमी में 27 से 31 जनवरी तक हुई प्रतियोगिता

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। हैंडबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में आयोजित 45 वी जूनियर बालिका राष्ट्रीय हैंडबॉल प्रतियोगिता का समापन सह परितोषिक वितरण समारोह बुधवार को दिल्ली और बिहार के बीच फाइनल मुकाबले के साथ संपन्न हुआ । जिसमें 29 - 22 गोल के अंतर से दिल्ली विजेता हुई । संघर्ष के बावजूद बिहार उपविजेता ट्रॉफी के साथ रजत पदक प्राप्त किया । पिछले पांच दिन से प्रतियोगिता में शामिल होने आए 27 राज्य के पांच सौ खिलाड़ी एवम तकनीकी पदाधिकारी फ्लड लाइट की दूधिया रोशनी में कोहरे के बीच लगातार मैच में दर्शक बने रहे। बिहार हैंडबॉल एवम सारण जिला हैंडबॉल संघ द्वारा सारण बनियापुर बड़ा लौवा के संत जलेश्वर एकेडमी प्रांगण में आयोजित प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने अपने अपने राज्य की सांस्कृतिक प्रस्तुति आखिरी संध्या किया। समापन समारोह में सारण के नन्हे कलाकार रौनक की प्रस्तुति ने वाहवाही लूटी। प्रतियोगिता के पारितोषिक वितरण समारोह के अतिथि के रूप में बिहार प्लेयर्स एशोसिएसन के अध्यक्ष सह राजद प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी , बिहार ओलंपिक संघ के सचिव मुश्ताक अहमद , हैंडबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया के महासचिव प्रीतपाल सिंह सलूजा , संत जलेश्वर एकेडमी की ट्रस्टी इंदु राय , एन एच आई के इंजीनियर ललित सिंह ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि सारण के ग्रामीण क्षेत्र में सफलता पूर्वक आयोजित यह प्रतियोगिता मील का पत्थर साबित होगा। और इस इलाके के साथ बिहार में हैंडबॉल के ख्याति को नई दिशा मिलेगी। प्रतियोगिता में बेस्ट गोलकीपर का खिताब बिहार टीम से खेल रही सारण की निधि कुमारी जबकि बेस्ट प्लेयर दिल्ली की तमन्ना को मिला। मौके पर विजेता दिल्ली , उपविजेता बिहार एवम तृतीय स्थान पर आई गुजरात एवम हिमाचल प्रदेश के खिलाड़ियों को मेडल के साथ ट्रॉफी दी गई। फेडरेशन के अधिकारी, विभिन्न राज्य से आए सचिव, रेफरी, बिहार एवम सारण हैंडबॉल संघ के पदाधिकारी सहित आयोजन समिति के दर्जनों पदाधिकारी, बिहार दूरदर्शन एवम पत्रकारों को सम्मानित किया गया। जिसमे बिहार हैंडबॉल संघ के अध्यक्ष पंकज कुमार, महासचिव ब्रजकिशोर शर्मा , सारण हैंडबॉल के अध्यक्ष कृष्णमोहन सिंह, चेयरमैन डा हरेंद्र सिंह, जिला सचिव सह प्रतियोगिता के आयोजन सचिव संजय कुमार सिंह, उपाध्यक्ष राकेश कुमार सिंह, ठाकुर विनोद सिंह अप्पू जी, रमेश सिंह , सत्येंद्र तिवारी थे। आगत अतिथियों का स्वागत आयोजन अध्यक्ष विधान पार्षद इंजीनियर सच्चिदानंद राय एवम समारोह का संचालन आयोजन सचिव संजय कुमार सिंह ने किया।

श्री मारुति नंदन हनुमंत प्राण प्रतिष्ठा को किया गया जलभरी

प्रात : किरण संवाददाता

अमनौर। भेल्दी के शेखपुरा पंचायत स्थित ब्रह्मस्थान बलुआरा खेल मैदान में श्री मारुति नंदन हनुमंत प्राण प्रतिष्ठा को लेकर किया गया जलभरी जिसमें सैकड़ो की संख्याओं में महिलाएं एवं बालिकाओं द्वारा हाथों में कलश लेकर जय श्री राम और जय हनुमान के नारे से पूरा शेखपुरा गूंज उठा लाल ध्वज से सुशोभित यह कलश यात्रा एक अद्भुत कलश यात्रा नजर आ रही थी क्योंकि सैकड़ो की संख्या में हाथी घोड़े रथ पर सवार राम सीता लक्ष्मण विराजमान सभी के कला के माध्यम से दशार्या गया वहीं भक्तगणों के मस्तक पर जय श्री राम जय हनुमान के ललाट से चमक रहा था वहीं आज जलभरी के लिए शेखपुरा पंचायत के पकड़ी डीह ब्रह्म स्थान कलश लेकर शेखपुरा पकड़ी मोहम्मद गांव होते हुए शेखपुरा बाजार से गुजर कर बलघटी पोखरा में जलभरी श्री शत्रुघ्न दास बाबा एवम अजय बाबा के द्वारा मंत्र उच्चारण कर जलभरी की गई तथा पुनः दुतहा बाजार होते हुए शेखपुरा डीह गांव के ब्रह्म स्थान के प्रांगण में महिलाओं का जाथा पहुंचा। वही इस कार्यक्रम में शेखपुरा पंचायत के वर्तमान मुखिया इंजीनियर प्रतीक कुमार ने बढ़कर हिस्सा लिया उनके साथ क्षेत्र के कई गण मन व्यक्ति जिला पार्षद आलोक राय उमेश ठाकुर विक्रम ठाकुर नागेश्वर ठाकुर जनसुरजा मुख्य प्रवक्ता कुलदीप महासेठ, तरवार मुखिया पंकज कुमार, नीरज रवि, भेल्दी मुखिया राहुल सिंह, नागेश्वर ठाकुर रविंद्र राय कई लोग उपस्थित रहे थे।

इसुआपुर में आम आदमी पार्टी की कार्यकर्ता बैठक सम्पन्न

प्रात : किरण संवाददाता

इसुआपुर। इसुआपुर में आम आदमी पार्टी की कार्यकर्ता बैठक संपन्न हुई। जिसमें दर्जनों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए पार्टी के जोनल प्रभारी सुशील सिंह ने कहा कि अगर बिहार में आम आदमी पार्टी की सरकार बनती है तो दिल्ली और पंजाब की तरह बिहार में भी हर महीने हर घर को 300 यूनिट बिजली मुफ्त मिलेगी ।स्कूली व्यवस्था ठीक किया जाएगा तथा स्कूलों में सीसी कैमरे लगाए जाएंगे। पीने के लिए साफ पानी दिया जाएगा। 18 वर्ष से ऊपर के महिलाओं को एक हजार रूपए स्त्री भत्ता दिया जाएगा। मुफ्त इलाज, मुफ्त टेस्ट,मोहल्ला क्लीनिक और वर्ल्ड क्लास सरकारी अस्पताल बनाया जाएगा। .बेरोजगार युवाओं को प्रतिमाह 3000 रुपए बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा। वहीं वरिष्ठ नागरिकों के लिए निःशुल्क पसंद की तीर्थ यात्रा कराई जाएगी।. राशन की डोरस्टेप डिलीवरी की जाएगी।.पेंशन 2500 रुपए किया जाएगा। इस अवसर पर जोनल सहप्रभारी आशुतोष सिग्रीवाल जिला प्रभारी अमित कुमार सिंह विधानसभा प्रभारी तरैया मनोरंजन सिंह प्रखंड प्रभारी तरैया जितेंद्र यादव किसान प्रकोष्ठ प्रभारी श्रीकांत सिंह प्रखंड प्रभारी मढ़ौरा वीरेंद्र यादव प्रखंड प्रभारी इसुआपुर राजा पेंटर सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक भानु चंद्र का हुआ विदाई समारोह

आराः जंक्शन मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक भानु चंद्र का आज विदाई समारोह किया गया इस अवसर पर बुकिंग के सभी कर्मचारियों ने बुके एवं अंग वस्त्र माला पहनकर उन्हें विदाई किया मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक आरएस 2 अशोक कुमार ने पदभार ग्रहण किया वहीं नए पर्यवेक्षक को भी माला पहनकर स्वागत किया गया भानु चंद्रा ने बताया कि मैं भारतीय रेल को 40 वर्षों से सेवा दे रहा हूं और अंतिम सेवा आज आरा से हम विदा ले रहे हैं आरा में हमारे सभी कर्मचारियों का भरपूर सहयोग मिला और मैं बहुत खुश हूं कि मेरे साथ काम करने वाले लोग मेरा भरपूर सहयोग किया और मैं नए पर्यवेक्षक अशोक कुमार का भी ऐसे ही सहयोग कर्मचारियों का मिलता रहेगा इस अवसर पर सभी मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक भानु प्रताप के बारे में लोगों ने प्रशंसा की मुख्य आरक्षण परवेक्षक जो रिटायर्ड हुए हैं उनका नाम भानु चंद्रा। नया चार्य लिए हैं आर एस 2 अशोक कुमार, आर एस 2 आर के सिंह, नागेंद्र कुमार, सतीश प्रताप, अशोक सिंह सभी लोग मौजूद रहे।

सेवा निवृत तीन शिक्षकों को दी गई विदाई

संझौली (रोहतास) बुधवार को अंचल क्षेत्र के भिन्न भिन्न तीन विद्यालयों से तीन शिक्षक सेवा निवृत हुए। सेवा निवृत्त शिक्षकों को एक विदाई समारोह आयोजित कर, विद्यालय के शिक्षकों ने फूलमाला, अंग वस्त्र सहित अन्य उपहार देकर विदाई किया। सेवा निवृत्त शिक्षकों में उत्क्रमित मध्य विद्यालय सुसाडी के शिक्षक दिनेश्वर प्रसाद, मध्य विद्यालय सियरुआ के शिक्षक महेंद्र सिंह व उत्क्रमित मध्य विद्यालय खैरा के शिक्षिका मालती कुमारी को विद्यालय के शिक्षक, शिक्षिकाओं ने फूलमाला, अंग वस्त्र व अन्य उपहार देकर विदाई किया। विदाई समारोह में सेवा निवृत शिक्षक दिनेश्वर प्रसाद को बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर व भगवान बुद्ध का चित्र देकर लोगों ने सम्मानित किया। समारोह में प्रखंड विकास पदाधिकारी सैयद सरफराजुद्दीन अहमद, शिक्षक कृष्ण प्रसाद, मनोज कुमार, आस पूजन चौधरी, सुनील कुमार, मुरलीधर प्रसाद, पुष्पा देवी, संजय कुमार सहित कई अन्य शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थी। वही बीड़ीओ ने डॉ० भीमराव अंबेडकर एवं भगवान बुद्ध का फोटो प्रतिमा देकर उन्हें सम्मानित किया।

जिले के 35 अनुकम्पा आश्रितों को नियुक्ति पत्र वितरण किया गया

प्रातः किरण संवाददाता

आराः विद्या भवन के सभागार में मृतक शिक्षक और कर्मियों के आश्रित परिवार के सदस्यों को अनुकम्पा पर नियुक्ति पत्र वितरण किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला परिषद की वर्तमान अध्यक्ष आशा देवी ने किया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उप विकास आयुक्त श्री विक्रम विरकर और जिला परिषद के उपाध्यक्ष लाबिहारी सिंह और जिला परिषद के कई समानित सदस्य उपस्थित रहे । जिला परिषद अध्यक्ष ने बताया कि आज का दिन हमारे कार्यकाल का सबसे ऐतिहासिक दिनों में एक है, उम्मीद नहीं थी कि हम सब मिलकर इतनी जल्दी इस पुनीत और नेक कार्य को कर पाएंगे इसके लिए मैं जिला परिषद के उन सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूं जो इस कार्य को वरीयता से लेते हुए अपना बहुमूल्य समय दिया मैं सबसे ज्यादा आभार इस जिले के उप विकास आयुक्त श्री विक्रम विरकर जी को देती हु जो इस कार्य में हम सभी को गति प्रदान करने में हर समय कम से कदम मिलाकर खड़े रहे। आज जिन परिवारों को यह नियुक्ति पत्र प्राप्त हो रहे हैं मैं उनके दर्द को समझ रही हूं मैं जानती हूं कि किसी परिवार पर क्या गुजरता है जब उसके घर का कोई ऐसा सदस्य छोड़ कर चला जाता है जिसके बल पर पूरा परिवार का पालन पोषण निर्भर रहता है। उप विकास आयुक्त भोजपुर ने बताया कि आज जो यह नियुक्ति पत्र वृत्त किया जा रहा है वह लगभग 17 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद हो रहा है जो अपने आप में एक मिसाल है धन्यवाद देना चाहता हूं कि जिला परिषद के वर्तमान समय में सभी पदों पर असिन सदस्यों का जिन्होंने इस कार्य में तनमेता दिखाते हुए अपनी सहभागिता प्रदान की मृत शिक्षक और कर्मियों के आश्रित को ये नियुक्ति पत्र मृतकों के मृत्यु तिथि के आरोही क्रम तथा दिव्यांग एवं महिलाओं अभ्यर्थियों के प्राथमिकता के आधार पर तैयार किया गया है जिसमे कुल 35 जिसमे 15 प्रिचारी 20 सहायक को नियुक्ति पत्र वितरण किया गया है। मृतक शिक्षा एवं कर्मियों के अस्तित्व के देखभाल की जिम्मेवारी चयनित अभ्यर्थियों की होगी भरण पोषण नहीं करने पर सेवा समाप्ति की कार्रवाई भी की जाएगी।हम लोग आगे भी इस कार्यों को करते रहेंगे। मौके पर जिले के कई जिला परिषद के सदस्य उपस्थित रहे सभी ने इस कार्य को सारा और कहा कि यह कार्य काफी सराहनीय और सार्थक प्रयास हैं। अनभावती देवी ने कहा की का परिवार एकदम रोड पर आकर खड़ा हो गया था मेरे पति स्वर्गीय बाबूधन राम के जाने के बाद परिवार चलाना काफी मुश्किल हो गया था मैं भगवान को नहीं देखा है लेकिन आज जिन लोगों ने यह नियुक्ति पत्र प्रदान किया है वह हमारे परिवार के लिए भगवान से काम नहीं है।

लूट कांड के इनामी अपराधी को पुलिस ने दबोचा

प्रात : किरण संवाददाता

कारकाट (रोहतास) थाना क्षेत्र के गोड़ारी पेट्रोल पंप के पास से हुई पिकअप वैन लूट कांड के सरगना, 25 हजार रुपए के इनामी मोस्ट वांटेड अपराधी धर्मराज सिंह को कारकाट पुलिस ने सासाराम नगर थाना के बौलिया रोड से सासाराम पुलिस और एसटीएफ टीम की मदद से गिरफ्तार कर लिया है। एसपी विनीत कुमार ने बताया कि अपराधी सासाराम मुफस्सिल थाना क्षेत्र के अहरांव निवासी बबन सिंह का पुत्र है। जिस पर विभिन्न थाना में दर्ज भर लूट, अपहरण हत्या का आरोपी हैं। पुलिस इस पर 25 हजार रुपए का इनाम रखी है। एसपी ने बताया कि 25 सितंबर को कारकाट पेट्रोल पंप के पास से पिकअप वैन लूट कांड को गंभीरता से लेते हुए एक टीम गठित की गई। इस टीम में पुलिस अधिकारी के साथ एसटीएफ की टीम को लगाया गया। लूट का पिकअप वैन पूर्व में हीं बरामद कर लिया गया था। छापेमारी के दौरान अपराधी धर्मराज सिंह के सासाराम नगर थाना के बोलियां रोड में छिपे होने की सूचना पर छापेमारी कर गिरफ्तार कर लिया है। तथा घटना में प्रयुक्त बुलेट को भी बरामद कर लिया गया है। पूछताछ के दौरान उक्त घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार किया है। पूछताछ के बाद इसे जेल भेज दिया गया है।

भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आराः पंचायत सरकार भवन में भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर जन्म शताब्दी समारोह के अध्यक्षता पंचायत समिति के प्रतिनिधि हरेन्द्र कुमार गुप्ता उद्घाटन करता माननीय राणा प्रताप सिंह निर्देशक सेंन्ट्रल कॉआपरेटिव बैंक आरा मनसंचालन बाबू जान अली ने की पूर्व जिला परिषद उपाध्यक्ष नन्जी यादव पूर्व जिला परिषद सदस्य गोरख यादव वर्तमान जिला परिषद सदस्य इमामुद्दीन अंसारी डॉक्टर महावीर प्रसाद गुप्ता हड्डी जोड़ एवं नस रोग के विशेषज्ञ चिकित्सा पदाधिकारी सदर अस्पताल आरा उनके साथ कौरा पंचायत के पूर्व मुखिया मदन शाह युवा राजद नेता श्याम बाबू सिंह हरिगॉव पंचायत के सरपंच संजय यादव उपस्थित लोगों ने जननायक कपूर्री ठाकुर की सादगी जीवन विनम्रता समाजवादी चेतना के जनक महान स्वतंत्रता सेनानी कपूर्री ठाकुर के जीवन से प्रेरणा लेने का संकल्प लिया सभा के स्वागत करता माननीय मुखिया विजय शंकर चौबे उर्फ टुना चौबे वार्ड प्रतिनिधि चंदन कुमार वार्ड प्रतिनिधि अमित कुमार कुशवाहा प्रतिनिधि संतोष कुमार समाजसेवी निर्मल सिंह कुशवाहा बबन ठाकुर बूटन ठाकुर दसई ठाकुर शिक्षक प्रभुनाथ ठाकुर शिक्षक आशुतोष कुमार सिंह मदन ठाकुर विशाल गुप्ता कृष ठाकुर समाजसेवी देवेंद्र कुमार कुशवाहा अभिषेक कुमार मुखिया प्रत्याशी शिभूषण ठाकुर पिंटू डॉक्टर सुनील ठाकुर अन्य गन्नेमान उपस्थित थे

संदिग्धावस्था में बैठी एक लड़की पर शक होने पर रेसुब पोस्ट आरा ने किया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

आरा : आरा जंक्शन पर संदिग्धावस्था में बैठी एक लड़की पर शक होने पर रेसुब पोस्ट आरा गिरफ्तार किया उनि-चेतराम मीणा साथ आरक्षी इन्द्रदेव यादव रेसुब पोस्ट आरा एवं प्र० आ० विरेन्द्र कुमार गुप्ता, सी०आई०बी०/दानापुर आरा स्टेशन पर ज्यादा भीड़ होने के कारण आने-जाने वाली गाडियों को पार करा रहे थे. इसी दौरान समय करीब 08:30 बजे प्लेटफार्म सं०:-03 पर स्थित पूर्वी उपरगामी पुल के नीचे संदिग्धावस्था में बैठी एक लड़की पर शक होने पर रेसुब पोस्ट आरा पर टी०ए० ड्यूटी में तैनात महिला प्र०आ० बिभा कुमारी को फोन कर बुलाया गया, तभी हमलोग को देख कर उक्त महिला तेजी से भागने का प्रयास करने लगी। जिसे मेरे और महिला बल सदस्य के द्वारा उसे रुकने को कहा गया परन्तु वह घबडा कर और तेजी से भागने लगीं उपस्थित महिला बल सदस्य के मदद से उसे घेर कर वही पकड लिया गया तथा भागने का कारण पूछने पर संतोषजनक जवाब नहीं दिया। पूछने पर अपना नाम पूनम पासी उर्फ संजना उम्र-20 वर्ष, पिता-डब्बू पासी, सा०+थाना-कतरास, जिला-धनवाद (झारखंड) बतायी। आस पास बैठी महिला यात्रियों से पकड़ी गयी लड़की की तलाशी लेने व स्वतंत्र गवाह बनने के अनुरोध किया गया तो कोई तैयार नहीं हुआ। तब मौके से उपलब्ध महिला बल सदस्य के द्वारा नियमानुसार कार्यवाही करते हुए अपनी तलाशी देते हुए उक्त पकडी गयी लड़की का तलाशी ली गयी तो उसके पास से पहने हुए हल्का काले रंग का जैकेट के बायें पॉकेट से कथी कलर की डिब्बी के अन्दर में रखे एक जोड़ी (02) अदद कान के झुमके एवं एक अदद हाथ की अंगूठी पीला रंग का सोने जैसा प्रतित होने वाला धातु जिसका वजन लगभग क्रमशः 3.240 ग्राम, 2.980 ग्राम कुल वजन लगभग 6.22 ग्राम तथा उक्त जैकेट के दाहिने पॉकेट में रखे सफेद रंग के डिब्बी के अन्दर रखा एक जोड़ी (02) अदद पायल सफेद रंग का चाँदी जैसा प्रतीत होने वाला धातु जिसका वजन लगभग 62.00 ग्राम, बरामद किया गया। सभी बरामद वस्तुओं को तराजू उपलब्ध कराकर वजन किया गया। बरामद वस्तुओं के संबंध में पुछने पर बताया कि किसी अज्ञात यात्रीयों का था जिसे मैंने चुरा लिया है` मौके पर ही उक्त बरामद वस्तुओं को जब्ती सूची बना कर जब्त किया गया घटना को देख कर कुछ यात्री एकत्रित हो गए जिनसे जब्ती सूची पर हस्ताक्षर करने को कहने पर वे लोग स्वतंत्र गवाह बनने को तैयार नहीं हुए` इस कारण मौके से उपस्थित रेसुब कर्मी महिला प्र०आ० विभा कुमारी, रेसुब/पोस्ट/आरा व प्र०आ० विरेन्द्र कुमार गुप्ता, सी०आई०वी०/दानापुर के समक्ष ही जब्त किया गया। उक्त पकडे गए लड़की को उसका जुर्म बता कर नियमानुसार कार्यवाही करते हुए गिरफ्तार किया गया तथा गिरफ्तारी की सूचना लड़की के मम्मी को मो.न.-7033256461 पर फोन कर सूचित किया गया। बाद अभियुक्त पूनम पासी उर्फ संजना, उम्र-20 वर्ष, पिता-डब्बू पासी, सा०+थाना-कतरास, जिला-धनबाद (झारखंड) को जब्तशुदा चोरी के वस्तुओं, प्रतिवेदन तलाशी सह जब्ती सूची, गिरफ्तारी मेमों के साथ अग्रिम कानूनी कार्यवाही हेतु एक टंकित आवेदन के साथ रारेपु/आरा को सुपुर्द किया गया` बाद उक्त अभियुक्त के विरुद्ध रारेपु/आरा पर काण्ड स0-17/24 दिनांक-30/01/24 अंतर्गत धारा -414 भा0द0स0 दर्ज किया गया

प्रधानाध्यापक के अवकाश प्राप्त होने के पश्चात विदाई : सह-सम्मान समारोह हुआ आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

आरा : उत्क्रमित मध्य विद्यालय शुक्लपुरा (बालक) आरा मुफ्फसिल उत्तरी, भोजपुर में गणेश साह प्रधानाध्यापक के अवकाश प्राप्त होने के पश्चात विदाई - सह - सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता सुरेश नंदन प्रसाद एवं संचालन अजीत कुमार सिंह ने किया। उक्त समारोह में चंदन प्रभाकर , प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी, आरा मुफ्फसिल उत्तरी - सह - जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (प्रारंभिक एवं समग्र शिक्षा अभियान) भोजपुर की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के छात्राओं (चंदा कुमारी ,प्रीति कुमारी , खुशी कुमारी , रिशु कुमारी , नंदनी कुमारी) ने स्वागत गीत पर नृत्य प्रस्तुत कर की। इएड ने अपने संबोधन में गणेश साह के कार्यों को सराहते हुए कहा कि आपके सभी कार्यों को विभागीय स्तर से ससमय संपादित किया जाएगा। आगत अतिथियों का स्वागत विद्यालय परिवार की ओर से अंग वस्त्र एवं पुष्प की माला से किया गया। विद्यालय के शिक्षक अरविंद कुमार की ओर से भारतीय संविधान एवं शॉल देकर सम्मानित किया गया। शिक्षक , बच्चे, गणमान्य लोगों ने अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक को विभिन्न उपहारों से सम्मानित किया। राजाराम, उमाशंकर, कमलेश कुमार, राज्य सचिव, इफ्टरर (गोपगुट) एवं विद्यालय की बच्चियों ने गीत - संगीत के माध्यम से बीच - बीच में सम्मान समारोह का शोभा बढ़ाया। उक्त समारोह को संबोधित करते हुए मुकेश प्रसाद श्रीवास्तव, उप प्रधान सचिव प्राथमिक शिक्षक संघ, सुनील, दिनेश नंदन , रमेश, हरिश्चंद्र, मुखिया समीर कुमार सिंह , बाघीपाकड़ पंचायत एवं रामकुमार शुक्ल ने गणेश साह के उत्कृष्ट कार्य को पूरा करने के लिए सराहा। धर्म कुमार राम, जिला सचिव, केदार नाथ सिंह, जिला उपाध्यक्ष, BRPSS (गोपगुट) ने अपने संबोधन में कहा कि श्री साह के कृति से सीख लेनी की जरूरत है। अपने विद्यालय में नियमित संचालन के बतौर आमूल चूल परिवर्तन से विद्यालय का नाम रौशन किया है। अपने सम्मान समारोह में श्री गणेश साह ने कहा कि हम अपने जीवन काल में किसी भी कार्य को टालने का काम नहीं किया है बल्कि ससमय संपादित किया हूं। यही मेरी पहचान रही है। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुकेश कुमार, अरविंद कुमार, मनोज प्रसाद गुप्ता, दिनेश प्रसाद निराला , प्रतिमा उपाध्याय, अनु गुप्ता, रंजिता पांडेय्, प्रिया कुमारी ने अहम भूमिका निभाया। अंत में अध्यक्ष के संबोधन से कार्यक्रम को समाप्त किया गया।

ग्राम भारती महाविद्यालय में कर्मचारियों का भव्य विदाई समारोह आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

कैमूर : जिलें के रामगढ़ प्रखंड के ग्राम भारती महाविद्यालय के सभागार में शिक्षक प्रोफेसर डा. उदय प्रताप सिंह वाणिज्य विभाग के साथ साथ शिक्षकेत्तर कर्मचारी सुरेन्द्र खरवार आदेशपाल का भव्य विदाई समारोह का आयोजन महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ राधेश्याम सिंह की अध्यक्षता में किया सम्पन्न हुआ। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य ने विदाई समारोह को सम्मिलित करते हुए कहा कि सभी कर्मचारियों के सहयोग से महाविद्यालय का नाम बिहार में रोशन हो रहा है आज मेरे महाविद्यालय से कर्मचारी सेवा निवृत्त हो रहे हैं ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हमारा अंग भंग हो रहा है। समय ऐसा होता है कि समय अवधि के अनुसार सभी को सेवा निवृत्त होना पड़ता है। आप लोगों के महाविद्यालय में योगदान सराहनीय रहा है। विदाई समारोह मे डॉ दिनेश कुमार सिंह ,डॉ बिमल कुमार सिंह, डॉ राधा मोहन सिंह, प्रोफेसर आमोद प्रकाश चतुर्वेदी, डॉ शोभनाथ सिंह, डॉ गजानंद सिंह, डॉ मधुलता शुक्ला, डॉ प्रियदर्शनी सिंह, डॉ प्रेम शंकर सिन्हा, डॉ यादवेंद्र दुबे, डॉ विकाश कुमार, डॉ चंद्रभूषण सिंह, सहित शिक्षकेत्तर कर्मचारी में धनंजय कुमार सिंह अध्यक्ष, डॉ आलोक कुमार सिंह, भोला सिंह बड़ा बाबू, छोटेलाल त्रिपाठी लेखापाल, संतोष कुमार सिंह, प्यारे राम, उमेश यादव, अमित कुमार सिंह, नरेंद्र कुमार सिंह, अतुलेश त्रिपाठी, अरशद अंसारी, शिवाजी पाण्डेय, सहेंद्र कुमार सिंह, राजेंद्र उपाध्याय, आशुतोष राज, मानवेंद्र सिंह, हरिशंकर यादव, और मिथलेश पाण्डेय शामिल हुए।

ए एस महाविद्यालय में नैक एक्रीडिशन हेतु आईआईक्यूए अपलोड

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) शहर के एकमात्र अंगीभूत इकाई अंजबीत सिंह महाविद्यालय ने नैक एक्रीडिशन की दिशा में सकारात्मक पहल करते हुए आईआईक्यूए नैक के पोर्टल पर अपलोड कर दिया है। आईआईक्यूए अपलोड करने के दौरान इस कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि विश्विद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. सीएस चौधरी ने एसएसआर के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य ने प्रति कुलपति के सुझाव को दृढ़ता से लागू करने का निर्देश उक्त महाविद्यालय के व्याख्याता को दिया। अपने संबोधन में प्राचार्य ने प्रति कुलपति के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करते हुए महाविद्यालय के सभी कर्मियों की प्रशंसा की तथा आगे भी इसी जज्बे के साथ कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया । कार्यक्रम का संचालन अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ प्रभात कुमार ने किया। आईक्यूएसी समन्वयक ने उक्त अवसर पर नैक एक्रीडिशन की सम्पूर्ण प्रक्रिया अर्थात आईआईक्यूए अपलोड से लेकर पीयर टीम के भ्रमण तक की गतिविधि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए भविष्य में आनेवाली चुनौतियों के सम्बन्ध में बताया। उन्होंने प्राचार्य के मार्गदर्शन की भूरी-भूरी प्रशंसा की ।जिनके निर्देशन में महाविद्यालय चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर है। जो नैक की दिशा में एक्रीडिशन हेतु कृत संकल्पित है। उल्लेखनीय है कि यूजीसी ने हाल ही में यह स्पष्ट किया है कि महाविद्यालयों को किसी भी तरह के अनुदान प्राप्त करने हेतु नैक एक्रीडिशन आवश्यक है । यूरोप के अधिकांश देशों में वैसे भारतीय छात्र जिनकी डिग्री नैक एक्रीडेटेड संस्थान होने पर उन्हें एक परीक्षा कम देनी पड़ती है । स्पष्ट है कि नैक एक्रीडिशन की महता राष्ट्रीय ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय है। कार्यक्रम के अंतिम औपचारिकता भौतिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ रमेश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उक्त अवसर पर विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष , शिक्षक एवं गैर-शैक्षिक कर्मी लोग उपस्थित थे। मौके पर डॉ.संतोष कुमार सिंह, अनिल कुमार, डॉ कन्हैया सिंह, विशाल कुमार, डॉ सुफिया परवीन, चंद्रशेखर कुमार,फजल अहमद,अतिथि शिक्षक सुकेश्वर सिंह, डॉ.अशोक कुमार सिंह, डॉ धीरेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ अमजद अली, डॉ शशि भूषण सिंह , डॉ विजय गौर, मुनमुन चौधरी, डॉ सरिता कुमारी, गजाला शाहीना, डॉ. प्रिया कुमारी आदि शैक्षणिक कर्मी के अतिरिक्त प्रशाखा पदाधिकारी डॉ संतोष कुमार पाण्डेय, विनोद कुमार सिंह , अक्षय प्यारे, अरविन्द कुमार , मदन वैश्य, संतोष पाण्डेय, मनोज कुमार,दीपक कुमार एवं धर्मशिला कुमारी के अतिरिक्त कंप्यूटर ऑपरेटर कामेंद्र कुमार एवं अजित कुमार उपस्थित थे।

एक अपराधी अवैध आग्नेयास्त्र एवं जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

आरा : भोजपुर पुलिस अधीक्षक प्रमोद कुमार यादव ने अपने कार्यालय में प्रेस वार्ता कर दी जानकारी रात्रि में गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि आरा मुफस्सिल थाना क्षेत्र के ग्राम जगवलिया में कुछ अपराधकर्मी हथियार के साथ इकठ्ठा हुये हैं, जो किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की फिराक में हैं। उक्त आसूचना का सत्यापन, अवैध आग्नेयास्त्र की बरामदगी तथा अपराधकर्मी की गिरफ्तारी हेतु पु०नि० संजीव कुमार सिन्हा, पु०नि०-सह-थानाध्यक्ष, आरा मुफस्सिल थाना के नेतृत्व में स०अ०नि० राजकुमार यादव, आरा मुफस्सिल थाना एवं थाना के सशस्त्र बलों के साथ एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए ग्राम जगवलिया में रेड /छापामारी कर 01 अपराधकर्मी को गिरफ्तार किया गया ।

ओम साई हॉस्पिटल को स्वास्थ्य विभाग द्वारा किया गया सील

प्रात : किरण संवाददाता

रामपुर (कैमूर): प्रखंड सीएस के निर्देश पर बेलांव के ओम साईं क्लीनिक में बुधवार को स्वास्थ्य विभाग द्वारा पुलिस प्रशासन के उपस्थित में शील किया गया। जिसका रिपोर्ट सीएम को दिया जाएगा। पीएचसी प्रभारी डॉक्टर रमेश कुमार ने बताया कि हॉस्पिटल शील से पहले अस्पताल के अंदर कई बिंदुओं पर जांच पड़ताल किया गया। जांच पड़ताल के दौरान कई प्रकार के कई मरीजों के नाम के पर्ची,कई प्रकार की दवा व अल्ट्रासाउंड मशीन पाए गए।। जिसका सूची तैयार कर कैमूर सीएस को दिया जाएगा। इसके बाद जैसा निर्देश होगा वैसा कार्रवाई किया जाएगा। आप को बता दे कि सोमवार को बेलांव ओम साईं हॉस्पिटल में ऑपरेशन के दौरान ओरा गांव के सच्चा बच्चा की मौत हो गई थी। इस बात की जानकारी मिलने के बाद कैमूर सीएस के निर्देश पर ओम साईं हॉस्पिटल को सील किया गया है। मौके पर डॉ चन्दन कुमार, स्वास्थ्य प्रबंधक मोहम्मद इमरान, थाना अध्यक्ष अनीश कुमार थे। स्थानीय प्रखंड क्षेत्र में संचालित निजी अस्पतालों का स्वास्थ्य विभाग द्वारा जांच किया जाएगा। जांच के दौरान संबंधित अस्पताल में विभागीय गाइड लाइन के अनुसार नहीं पाया जाता है तो उस पर विभागीय कार्रवाई भी किया जाएगा। इस बात की जानकारी देते हुए पीएचसी प्रभारी डॉक्टर रमेश कुमार ने बताया कि सूत्रों से जानकारी मिल रही है कि क्षेत्र में बिना निबंध के कई अस्पताल संचालित हो रहे हैं।

अनिश्चितकालीन धरना में शामिल हुए जिला परिषद सदस्य एवं बसपा नेता, भरी हूंकार

- बुधवार को 30 वें दिन अनिश्चितकालीन धरना में शामिल हुए दर्जनों किसान

प्रात : किरण संवाददाता

कैमूर चांद : भूमि अधिग्रहण में कम मुआवजा को लेकर पिछले 30 दिनों से किसान पीएनसी इंफ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के कैम्प कार्यालय पर धरना दे रहे किसानों को जिला परिषद सदस्य कमलेश चौरसिया युवा समाजसेवी मनोज सिंह एवं बसपा नेता सत्येन्द्र सिंह का साथ मिला। अनिश्चितकालीन धरना दे रहे किसानों की अधिकारियों एवं बिहार सरकार के उपेक्षा से आहत हैं। किसानों ने अधिकारियों एवं बिहार सरकार पर एनएचएआई से मिलकर किसानों के मुआवजे राशि हड़पने का आरोप लगाया। अनिश्चितकालीन धरना में चैनपुर रामपुर भभुआ एवं चांद प्रखंड के दर्जनों किसान शामिल हुए। किसानों की मांग के समर्थन में दोपहर अनिश्चितकालीन धरना में शामिल हुए जिला परिषद सदस्य कमलेश चौरसिया ने कहा किसानों की मांग जायज है। उन्होंने ने कहा किसानों भूमि अधिग्रहण में बहुत ही कम मुआवजा दिया जा रहा। कमलेश चौरसिया ने कहा कैमूर जिला खेती पर निर्भर है। किसानों की भूमि अधिग्रहण एक्सप्रेस-वे निर्माण एवं एन एच 219 निर्माण के लिए अधिग्रहित की जा रही है तो उन्हें उचित मुआवजा मिलना चाहिए। उन्होंने ने कहा इस समस्या को जिला परिषद की बैठक में उठाउंगा। धरना में शामिल हुए बसपा नेता सत्येन्द्र सिंह ने कहा किसानों के एतिहासिक अनिश्चितकालीन धरना का हम समर्थन करते हैं। उन्होंने ने कहा सरकार उचित मुआवजा किसानों को नहीं मिलेगा आंदोलन होता रहेगा। सत्येंद्र सिंह ने कहा मैं किसान आंदोलन को तन मन धन से समर्थन कर रहा हूं। उन्होंने ने कहा बसपा की बैठक में किसानों की समस्या उठाई जाएगी। धरना में युवा समाजसेवी जन सुराज पार्टी के मनोज सिंह ने किसान आंदोलन कि पुरी तरह समर्थन किया। उन्होंने ने किसानों को कम मुआवजा एवं जबरदस्ती भूमि अधिग्रहण करने के लिए अधिकारियों एवं बिहार सरकार की आलोचना की।मनोज सिंह ने कहा समस्या को पीके के सामने रखा जाएगा। अनिश्चितकालीन धरना के 30 वें दिन किसान कैम्प स्थल मसोई में बुधवार को भी जमे रहे। अनिश्चितकालीन धरना में पशुपति नाथ सिंह महासचिव किसान संघर्ष मोर्चा कैमूर पशुपति नाथ सिंह राजू सिंह अध्यक्ष जद यू किसान प्रकोष्ठ कैमूर श्याम सुन्दर सिंह सत्येन्द्र सिंह आदि दर्जनों किसानों ने भाग लिया।

सेवानिवृत शिक्षक आचार्य लक्ष्मीचंद्र अवस्थी को दी गई भावभीनी विदाई

प्रात : किरण संवाददाता

आराःबिहार के भोजपुर जिले के आरा कायमनगर स्थित रामस्वरूप रामलहर त्रिपाठी संस्कृत हाई स्कूल आरा में सेवानिवृत शिक्षक आचार्य लक्ष्मीचंद्र अवस्थी को भावभीनी विदाई दी गई ! विदाई समारोह के पश्चात स्कूल शिक्षिका रिंकी मिश्रा ने स्वागत और विदाई गीत प्रस्तुत किया ! राजेश कुमार तिवारी प्रधानाध्यापक द्वारा अतिथियों का स्वागत किया और सेवानिवृत शिक्षक आचार्य लक्ष्मीचंद्र अवस्थी को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया ! वही उन्होने कहा कि श्री अवस्थी का सेवा काल बहुत ही सराहनीय एवं शिक्षणीक गति विधि बहुत ही प्रशणीय रहा है, इस विदाई समारोह में नवल किशोर तिवारी,उदय कुमार तिवारी, प्रशांत शांडिल्य, योगिंद्र तिवारी, विकास गुप्ता, रोहित कुमार, शंकर सिंह, दिलीप कुमार तिवारी, जय किशोर तिवारी, मदन भगत, सत्य नारायण त्रिपाठी, सहित अन्य शिक्षक और ग्रामीण उपस्थित रहे !

योजना कार्य को लेकर नगर परिषद में हुई बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) प्रखंड मुख्यालय के सभागार में प्रखंड उप प्रमुख कैलाश पासवान के अध्यक्षता में योजनाओं को लेकर बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में उपस्थित नोखा वीडियो अतुल कुमार गुप्ता पंचायती राज पदाधिकारी सुनील कुमार सिंह स्वास्थ्य प्रबंधक मुकेश कुमार मुखिया संघ के अध्यक्ष मुखिया दयानंद सिंह, मुखिया प्रतिनिधि राकेश कुमार, बीडीसी गुड्डू चंद्रवंशी, अरविंद चंद्रवंशी, प्रतिनिधि राकेश कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे।

राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण

पटना, गुरुवार, 1 फरवरी, 2024

संक्षिप्त खबरें

एनसीसी सर्टिफिकेट परीक्षा का आयोजन

औरंगाबाद। औरंगाबाद के राम लखन सिंह यादव महाविद्यालय में किया गया। इस परीक्षा 5 विद्यालयों के 117 कैडेट्स शामिल हुए। फिजिकल एवम लिखित जांच परीक्षा आयोजित हुई बताया गया की परीक्षा का परिणाम बाद में घोषित किया जाएगा। कर्नल राज कुमार सिंह के नेतृत्व में यह परीक्षा आयोजित की गई। कमान अधिकारी कर्नल राज कुमार सिंह ने परीक्षा में कैडेटों को बताते हुए कहा कि ड्रिल, हथियार, कंपास और दिशाओं से संबंधित प्रश्न पूछे गए। एनसीसी के ए, बी और सी प्रमाणपत्र फोर्स में जाने वाले कैडेट को काफी मददगार साबित होते हैं। इन प्रमाणपत्रों के आधार पर कैडेटों को नंबर मिलते हैं, जो उनको मेरिट बढ़ाने में मददगार साबित होते हैं और परीक्षा में 350 अंक के लिखित व वस्तुनिष्ट प्रश्न थे इसके अलावा ड्रिल 80, डब्लू टी 25, कंपास 10, एफएसबीसी 15, और एम आर 20 अंक का था बारी बारी से क्रमानुसार टेस्ट लिया गया। इस दौरान ए एन ओ लेफ्टिनेंट विवेक कुमार ने बताया कि इन विद्यालयों में औरंगाबाद के अनुग्रह इंटर स्कूल, डी ए वी पब्लिक स्कूल, जे एन वी बारून, पवई स्कूल, कुटुंबा हाई स्कूल शामिल हैं। दो वर्ष के प्रशिक्षण के बाद एनसीसी ए सर्टिफिकेट के लिए परीक्षा आयोजित होती है। सूबेदार मिको प्रसाद, बी एच एम संजय कुमार, हवलदार झाग बहादुर सिंह, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विजय रजक, ए एन ओ लेफ्टिनेंट विवेक कुमार, एस यू ओ आर्यन कुमार, विशाल कुमार, यू ओ विवेक कुमार, यू ओ अनु प्रिया, कैडेट्स, मनीष, दिव्यांश राज, विक्रम, किरण, सुमन, कृतिका, सहित अन्य कैडेट्स उपस्थित थे।

पर्यावरण अवमूल्यन विषय पर सेमिनार का आयोजन

औरंगाबाद। सच्चिदानन्द सिन्हा महाविद्यालय के भूगोल विभाग में स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर सत्र 2020-22 के छात्रों के लिए पर्यावरण अवमूल्यन विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों छात्र छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर डॉक्टर सत्येंद्र कुमार सिंह विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय मेदीनगर (झारखंड) शामिल हुए ' वे अपने संबोधन में पर्यावरण अवमूल्यन विषय पर विस्तार से बात रखी साथ ही महाविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉक्टर रामाधार सिंह ने भी पर्यावरण अवमूल्यन विषय पर धार्मिक पक्ष के द्वारा समझाएं ' उक्त विषय पर विभागाध्यक्ष श्री विभीषण कुमार एवं सहायक प्राध्यापक विजय कुमार ने भी विस्तार से चर्चा की ' विभाग के छात्र-छात्राओं ने भी अपने अपने बातों को रखा जिसमें अदिति कुमारी, राजू कुमार, उज्जवल कुमार आदी शामिल हुए। आपको बताते चलें कि यह सेमिनार महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ सुधीर कुमार मिश्र के अध्यक्षता में कराया गया जो कि प्रत्येक विभाग को कराने का आदेश प्राप्त हैं। प्राचार्य ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से छात्र छात्राओं में शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ता है।

बाइक के आमने सामने टक्कर में एक व्यक्ति घायल

शेरघाटी। शहर के कठार मुहल्ला में दो बाईक के बीच हुई आमने-सामने टक्कर में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे इलाज के लिए शहर के निजी क्लीनिक में भर्ती कराया गया जहां उसका इलाज चल रहा है। घायल की पहचान संतोष सिंह के रूप में हुई है। घटना को लेकर घायल के पुत्र अविनाश कुमार ने अरविंद सिंह के खिलाफ थाने में मुकदमा दर्ज किया है। जानकारी के अनुसार घटना उसे वक्त हुई जब संतोष सिंह बाइक पर सवार होकर बाजार की ओर से घर जा रहे थे, तभी विपरीत दिशा से आ रही बाइक के साथ उनके बाइक की भीड़त हो गई। जिसमें उन्हें गंभीर रूप से चोट लगी है। इधर थाने में तैनात एक अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने घटना की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दिया है।

डॉ मनीष पंकज ने मंत्री संतोष सुमन का किया स्वागत

गया।हम के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह बिहार सरकार के मंत्री संतोष कुमार सुमन जी के बिहार मंत्रिमंडल में शामिल होने के बाद पहली बार गया आगमन पर भारतीय जनता पार्टी के नेता डॉ मनीष पंकज मिश्रा के द्वारा फूलों का गुलदस्ता अंगवस्त्र देकर स्वागत किया है इस अवसर पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने कहा की गया जिला से दो-दो मंत्री रहते हुए गया जिला विकास जो पिछड़ गया था पुनः एनडीए सरकार बनने पर विकास की रफ्तार तेजी गति से बढ़ेगा। स्वागत करने वालों में राणा रणजीत सिंह महेश यादव बबलू गुप्ता हीरा यादव सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

नीतीश मंत्रिमंडल के मंत्री डॉ. प्रेम कुमार एवं डॉ. संतोष कुमार सुमन का हुआ जोरदार स्वागत

● श्री रामचरितमानस नवाह पारायण यज्ञ समिति के अध्यक्ष सह समाजसेवी शिव कैलाश डालमिया उर्फ मुन्ना बाबू, शिवचरण डालमिया एवं बादशाह डालमिया ने दोनों मंत्रियों को शॉल, पुष्प गुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर अभिनंदन किया

प्रात: किरण संवाददाता

गया। रेड क्रॉस के सामने स्थित राधे-राधे हाउस में नवगठित नीतीश मंत्रिमंडल में नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार एवं हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह विधान पार्षद डॉ संतोष कुमार सुमन को मंत्री बनाये जाने पर अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। इस बीच श्री रामचरितमानस नवाह पारायण यज्ञ समिति के अध्यक्ष सह समाजसेवी शिव कैलाश डालमिया उर्फ मुन्ना बाबू, शिवचरण डालमिया एवं बादशाह डालमिया ने दोनों मंत्रियों को शॉल, पुष्प गुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर अभिनंदन किया है। इसके साथ ही डालमिया परिवार की ओर से प्रसन्नता व्यक्त करते हुए समाजसेवी शिव कैलाश डालमिया ने बधाई देते हुए आशा व्यक्त किया कि जिले से दो मंत्रियों के मनोनयन से जिले का विकास होगा। शहर में जाम की समस्या से निजात दिलाने, गया जिले का विकास एवं योजनाओं को केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं को धरातल पर लाने का आश्वासन मंत्री ने दिया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय भाजपा नेता अनिल स्वामी,विनोद जसरपुरिया, वार्ड पार्षद सारिका वर्मा, रामावतार धानुका, प्राण मित्तल, राजेश झुनझुनवाला, भाजपा नेता ,अनंतधीश अमन, विनय जैन, नीरू जैन सहित बड़ी संख्या में शहर के व्यवसायी और बुद्धिजीवी वर्ग उपस्थित थे।

महापुरुषों के कदमों पर चलने की जरूरत : मनोज शर्मा

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री बिहार केसरी श्रीकृष्ण सिंह की 63वीं पुण्यतिथि धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गोह के पूर्व विधायक सह प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता मनोज शर्मा समेत अन्य अतिथि डॉ नागेंद्र शर्मा, डॉ रविरंजन, डॉ शोभा रानी, डॉ चन्द्रशेखर, डॉ धनंजय कुमार, शम्भूनाथ पांडेय आदि ने श्रीकृष्ण सिंह स्मृति भवन स्थित श्री बाबू की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। इस अवसर पर समाज के प्रबुद्ध लोगों ने श्रीबाबू के व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा कर उनके बताए रास्ते पर चलकर समृद्ध और सशक्त बिहार बनाने की बात कही। मनोज शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के बिहार को श्रीबाबू के बिहार बनाने की आवश्यकता है, उन्होंने जिस बिहार का सपना संजोया था उसे साकार करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष सह मगध इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक संजय मौआर के द्वारा समाज मे महिला सशक्तिकरण की दिशा में पहल करते हुए महिलाओं के बीच 25 सिलाई मशीन वितरित किया। संचालन सुनील शर्मा ने किया। डॉ नागेंद्र शर्मा, डॉ शोभा रानी ने कहा कि हम जिस क्षेत्र में हो पूरी तन्मयता और ईमानदारी से कर्म करे तभी बिहार का नवनिर्माण संभव होगा। ट्रस्ट के सदस्यों ने आगत अतिथियों को माल्यार्पण और अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष उदय गुप्ता, नगर पार्षद मंजरी देवी, सुशील कुमार, अशोक सिंह, सुरेंद्र मिश्र, शिवनारायण सिंह, सुरेंद्र यादव, भाजपा पूर्व जिलाध्यक्ष पुरुषोतम कुमार सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में समाज के लिए विशिष्ट योगदान दे रहे लोगों को सम्मानित किया गया। सचिव नीलमणि कुमार ने कहा कि विविध कार्यक्रम के द्वारा ट्रस्ट समाज उत्थान में लगा रहता है। ट्रस्ट के सदस्य मंटू शर्मा, अमित कुमार, रविन्द्र शर्मा, राकेश कुमार, पप्पू पांडेय आदि ने कार्यक्रम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अनुमंडल अस्पताल के उपाधीक्षक राजेन्द्र सिंह हुए सेवानिवृत्त

शेरघाटी। अनुमंडल अस्पताल शेरघाटी के उपाधीक्षक के डॉ राजेंद्र प्रसाद सिंह का कार्यकाल पूर्ण होने के बाद बुधवार को अस्पताल के कर्मियों द्वारा भावभीनी विदाई दी गई। आयोजित विदाई समारोह में कार्यरत चिकित्सा डॉक्टर उदय प्रसाद सिंह डॉ राजेश सिंह डॉक्टर भास्कर डॉक्टर अमित कुमार डॉक्टर विद्या ज्योति आदि के द्वारा उनके कुशल कार्य संगठन का विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए उनके सुखद जीवन की कामना की गई। इस मौके पर शहर के गनमैन और बुद्धिजीवी भी मौजूद रहे। इनर व्हील संस्था के सदस्यों ने भी सिंह के कार्यकाल का संस्मरण सुनाते हुए शेरघाटी के लिए स्वर्णिम अध्याय बताया। समाज सेवी वह रोगी कल्याण समिति के सदस्य कमल किशोर ने कहा कि अस्पताल की चिकित्सीय व्यवस्था में सिंह ने बेहतर प्रयास किया जिसके कारण शेरघाटी वासियों को सरकारी अस्पताल के प्रति विश्वास बढ़ा। प्रसव के मामले में शेरघाटी अस्पताल जिले में अब्बल आ चुका है। इनके कार्यकाल में जहां अस्पताल को अनुमंडल अस्पताल के रूप में अपग्रेड किया गया वहीं ट्रॉमा सेंटर की भी शुरूआत हो गई है। विधायक श्री सिंह ने कहा कि हमने अस्पताल में जब से योगदान दिया चिकित्सीय व्यवस्था सुधारने में पहला प्रयास किया। हमारे चिकित्सक साथी स्वास्थ्य कर्मी सफाई कर्मी और महिला स्वास्थ्य कर्मियों ने कम से कदम मिलाकर हमें सहयोग किया जिसका प्रतिफल है कि अनुमंडल अस्पताल को उत्क्रमित करते हुए ट्रामा सेंटर को भी की भी स्थापना कर दी गई है। अनुमंडल वीडियो को बेहतर चिकित्सा व्यवस्था मिले इसका हर संभव प्रयास किया। उन्होंने कहा कि हमारे सेजर्ड चिकित्सा अनुभवी हैं अपेक्षा करते हैं कि अस्पताल की व्यवस्था लगातार अपनी ऊंचाइयों की ओर आगे बढ़ेगा। समझ में आए तमाम अतिथियों ने विधायक डॉक्टर सिंह को माल्यार्पण कर उन्हें बधाई देते हुए

सिविल सर्जन कार्यालय पर चूड़ी लेकर पहुंचे कांग्रेसी नेता

औरंगाबाद। कांग्रेस नेता शाहनवाज उर्फ सल्लू खान, बबन सिंह, पोस्टमार्टम रिपोर्ट मामले को सिविल सर्जन से जल्द जांच कर कार्रवाई की मांग की है। अखिल भारतीय राहुल गांधी यूथ बिग्रेड के सदसों के द्वारा मंगलवार को बिहार प्रदेश अध्यक्ष मो शहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान के नेतव्व में पार्टी के कार्यकताओं के द्वारा सदर अस्पताल में बबन सिंह हत्या मामले में सदर अस्पताल के तत्कालीन उप अधीक्षक डा. सुनील कुमार के साथ कार्यकताओं के द्वारा सदर अस्पताल में बबन सिंह हत्या मामले में सदर अस्पताल के तत्कालीन उप अधीक्षक डा. सुनील कुमार के साथ कई अन्य पोस्टमार्टम से संबंधित स्वास्थ कर्मी के द्वारा अभियुक्त से पैसा लेकर पोस्टमार्टम रिपोर्ट को बदल देने के साथ-साथ लास के नाम मोटी रकम लेकर तत्कालीन के सदर अस्पताल उपाधीक्षक को डीएम के आदेश के तीन महीने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं करना दोषी को बचा जाने पर भी अभी तक जांच रिपोट डीएम को नहीं सौंपने पर बहुत मजबूर होकर आज पार्टी के कार्यकताओं के द्वारा अस्पताल स्थित सिविल सर्जन डा. रवि भूषण श्रीवास्तव, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. किशोर कुमार, डीआइओ डियो मिथिलेश कुमार सिंह के पोस्टमार्टम से संबंधित अधिकारियों के लिए सिविल सर्जन कार्यालय चूड़ियां लेकर पहुंच गए और सिविल सर्जन कार्यालय के स्वस्थ कर्मियों को बोले की चूड़ियां खुद भी आप लोग पहन और सिविल सर्जन के साथ अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डीआईओ को भी हाथ में पहना दे। कांग्रेस नेता सल्लू खान ने कहा कि डीएम ने तीन महीना पूर्व सिविल सर्जन को जांच कमेटी गठित कर रिपोर्ट मांगी थी। सिविल सर्जन के द्वारा टीम गठित किए हुए तीन महीना बीत गए मगर तत्कालीन सदर अस्पताल के उपाधीक्षक सुनील कुमार को बचाने के लिए बोर्ड में गठित सदस्य लगे हुए हैं और स्वास्थ्य विभाग के दो चिकित्सक के साथ एक पोस्टमार्टम ऑफिस के कर्मी ने तत्कालीन उप अधीक्षक पर पैसा लेकर पोस्टमार्टम रिपोर्ट बदल देने का लिखित रूप से दिया है। मगर अपनी जांच रिपोर्ट में सिविल सर्जन कार्यालय के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी के साथ जिला प्रशिक्षण अधिकारी बचाने का तत्कालीन प्रशिक्षण को कर रहे हैं। यदि इन लोगों का मोबाइल का नंबर डीआर की जांच कराई जाएगी तो और मामला आगे तहकीकात सच्चाई सामने आ जाएगा। आजकल करके इन लोग सिर्फ जांच रिपोर्ट को अविलंब कर रहे हैं ताकि लोग भूल जाएंकांग्रेस नेताओ ने किया बबन सिंह पोस्टमार्टम मामले में तत्कालीन सदर अस्पताल के उप अधीक्षक को बचाने के मामले में अभी तक नहीं सौंपा। कई दिनों से लटका है। पोस्टमार्टम जांच का मामला टीम गठित होने के बाद भी नहीं दिया जा रहा है। राहुल कुमार, मो. फिरोज, रबी कुमार, धीरज कुमार, मो. बरकत, परकश कुमार, राम प्रसाद राय, पासवान राहुल कुमार, रोशन कुमार, धीरज कुमार सहित मौजूद रहे।

नीति आयोग, भारत सरकार ने ली एमडीए राउंड की तैयारियों का जायजा

गया। नीति आयोग, भारत सरकार द्वारा गुरुवार को समाहरणालय के अपर समाहर्ता कक्ष में वर्चुअल मीटिंग की गयी. इस मीटिंग में फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर पर आवश्यक निर्देश दिये गये। ज्ञात हो कि 10 फरवरी से होने वाले सर्वजन दवा सेवन अभियान का अनुश्रवण नीति आयोग द्वारा किया जा रहा है।अभियान की तैयारियों को लेकर गुरुवार को नीति आयोग के स्वास्थ्य तथा पोषण नोडल पदाधिकारी ने वर्चअल मीटिंग कर सभी आकांक्षी जिलों के जिलाधिकारियों से जरूरी जानकारी ली है इस दौरान अपर समाहर्ता अंजनी कुमार ने वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम की तैयारियों की अद्यतन जानकारी दी गई है।इस मौके पर सिविल सर्जन डॉ रंजन कुमार सिंह, जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी डॉ एमई हक, विश्व स्वास्थ्य संगठन के सर्विलांस मेडिकल आफिसर डॉ कुणाल, पीरामल फाउंडेशन के प्रोजेक्ट डायरेक्टर अभिनव तथा चंदन कुमार मिश्रा, मलेरिया निरीक्षक अजय कुमार, सीफार स्टेट कॉर्डिनेटर शिकोह अलबदर, पीसीआई से अमित कुमार तथा सरकारी महकमे के अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे हैं। शतप्रतिशत लक्ष्य पूरा किया जायेगाःअपर समाहर्ता ने कहा कि सर्वजन दवा सेवन अभियान का लक्ष्य शतप्रतिशत पूरा किया जायेगा। अभियान की सफलता को लेकर स्वास्थ्य विभाग द्वारा नगर निगम, शिक्षा, पंचायती राज विभाग, जीविका, समेकित बाल विकास विभाग तथा दूसरे विभागों के साथ समन्वय स्थापित किया जा रहा है। हर प्रकार से इस अभियान के बारे में जन जागरूकता लायी जा रही है ।सभी जगहों पर रैली तथा जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।सर्वजन दवा सेवन के लिए 16 प्रखंड चयनित है सिविल सर्जन ने बताया कि जिला में फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर चलाये गये नाइट ब्लड सर्वे अभियान की रिपोर्ट में माइक्रो फाइलेरिया परजीवी ग्रसित 129 नये रोगी मिले हैं। 16 प्रखंडों एवं तीन शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में माइक्रो फाइलेरिया प्रसार दर एक या एक प्रतिशत से अधिक आया है। इसे लेकर इन प्रखंडों में एमडीए अभियान चलाया जायेगा।इस दौरान अल्बेंडाजोल और डीईसी के साथ आइवरमेक्टिन दवा भी दी जायेगी और सभी विभागों के साथ समन्वय स्थापित किया जा रहा है। अभियान में सभी की सहभागिता आवश्यक है। डीवीबी डीसीओ ने बताया कि यह दवा स्वास्थ्यकर्मियों, आशा अथवा आंगनबाड़ी सेविका के सामने ही करना है।दवा सेवन को लेकर किसी प्रकार की कोताही नहीं करनी है। दवा पूरी तरह सुरक्षित है और अन्य जिलों में भी इसका सेवन कराया जा रहा है।

दिल्ली पब्लिक स्कूल में छात्र-छात्राओं के सम्मान में फेयरवेल सेलिब्रेशन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

अरवल: दिल्ली पब्लिक स्कूल में 10वीं के छात्र-छात्राओं के सम्मान में फेयरवेल सेलिब्रेशन का आयोजन किया गया, इसको लेकर विद्यालय परिसर में छात्र-छात्राओं के साथ-साथ विद्यालय परिवार का स्नेह का प्रवाह होता रहा अपने वरीय छात्र-छात्राओं को सम्मान देने के लिए विद्यालय परिसर में ही कई प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक धर्मेंद्र कुमार ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि जिस समय आपके माता-पिता उंगली पड़कर इस विद्यालय में नामांकन करने के लिए आए थे उन्होंने अपनी सारी जिम्मेवारी मुझे दे दी थी आप सभी हमारे पुत्र और पुत्री के समान हैं आप लोगों की खुशियां इस विद्यालय की खुशियां हैं इस विद्यालय से कई छात्र-छात्रा शिक्षा ग्रहण कर राज्य और देश के कोने-कोने में अपना परचम लहरा रहे हैं और देश की सेवा दे रहे हैं इस महत्वपूर्ण कार्य में केवल मेरा ही सहयोग नहीं बल्कि विद्यालय परिवार के साथ-साथ अभिभावकों का सहयोग भी सराहनीय रहा है विद्यालय के बच्चों को उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए एडवांस क्लासेस के तहत छठी से 10 वां के बचे के लिए मार्च माह में परीक्षा आयोजित की जाएगी इन्होंने विद्यालय के द्वारा घोषित एडवांस क्लास और टैलेंट हंट की जानकारी अपने विद्यालय के बच्चों को अन्य लोगों से साझा करने का भी आह्वान किया इन्होंने कहा कि विद्यालय के सभी बच्चों के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए रात दिन विद्यालय प्रबंधन द्वारा कार्य किया जा रहा है

यही कारण है कि विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र छात्रा अरवल जिले के लिए एक मिसाल कायम किया है आने वाले समय में भी इस विद्यालय के बच्चे मिसाल कायम करेंगे आने वाले समय में अरवल जिले के अभिभावकों को इसका लाभ अवश्य मिलेगा इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा अपने वरीय साथियों के सम्मान में कार्यक्रम भी आयोजित किया गया इसके तहत बच्चों ने स्टेज शो के माध्यम से सामान्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जिसके कारण विद्यालय परिसर में हर्ष उल्लास का वातावरण कायम रहा इस मौके पर निदेशक धर्मेंद्र कुमार छात्रों को सम्मानित किया, इस मौके पर उपस्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल के शारीरिक शिक्षक, अविनाश कुमार, रोशन कुमार ,विवेक अजय कुमार, अमीषा कुमारी आशीर, यीशु कुमारी इत्यादि।

शिक्षक सह विदाई समारोह का आयोजन गया कॉलेज में किया गया

गया।गया कॉलेज गया में शिक्षक सम्मान सह विदाई समारोह का आयोजन किया गया है इस अवसर था अंग्रेजी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रोफेसर अरविंद कुमार सुनील की सेवानिवृत्ति हुए , पिछले 25 वर्षों से डॉक्टर सुनील गया कॉलेज गया में निर्बाध रूप से अपनी सेवाएं देते आ रहे हैं। अंग्रेजी साहित्य जगत में डॉक्टर सुनील की अपनी एक पहचान है. साथ ही साथ वह कल के भी मर्मज्ञ है. अपने कार्यकाल में कला भारती को भी उन्होंने नई ऊंचाई देने का प्रयास किया है इस मौके पर कुलसचिव मगध विश्वविद्यालय बोधगया प्रोफेसर समीर कुमार शर्मा ने कहा कि गया कॉलेज एवं मगध विश्वविद्यालय में डॉ सुनील के योगदान को सदैव याद किया जाएगा अपने कार्यकाल में मैंने कार्यालय दायित्वों का निर्वहन करते हुए प्रोफेसर सुनील के सेवानिवृत्ति से संबंधित कागजात आदि इस अवसर पर उनको समर्पित कर रहा हूं।प्राचार्य गया कॉलेज गया डॉक्टर सतीश सिंह चंद्र ने कहा है कि शिक्षक कभी भविष्यवा निवृत्त नहीं होते हैं हो आजीवन शिक्षा का प्रकाश समाज में फैलाते रहते हैं। जिससे उनकी यश और कीर्ति दोनों समाज में अमर रहती है।डा सुनील ने कहा की आज मेरे लिए भावुक छन है और महाविद्यालय के इतिहास मे यह पहला अवसर है जब सेवनिवृत्ति लाभ के दस्टवेज अंतिम कार्य दिवस पर मिले हो।इस मौके पर कुलानुशासक मगध विश्वविद्यालय बोधगया डा यूपी डर कुमार एवं विभिन्न विभागों के विभाग अध्यक्ष एवं शिक्षक मौजूद थे।महाविद्यालय में आज शिक्षाकेतर कर्मचारियों की भी सेवा निवृत्ति के अवसर पर विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है।सेवानिवृत होने वाले कर्मियों में लेखपाल निरंजन प्रसाद प्रशाखा पदाधिकारी अशोक कुमार. मंगल प्रसाद सिंह, कालिंदी देवी, हरेंद्र कुमार, प्रतिमा कुमारी,नरेश प्रसाद व बिरजू प्रसाद ने आज सब सेवानिवृत्ति प्राप्त की है इस मौके पर प्राचार्य प्रोफेसर सतीश सिंह चंद्र ने कहा कि अपने छोटे से कार्यकाल में मैं जिस प्रकार से कर्मचारियों से स्नेह और प्रेम पाया है उसे में आजीवन नहीं भूल पाऊंगा मैं आपसे आज यह भी साझा करना चाहता हूं कि यदि सेवा निवृत्ति के बाद भी आपको महाविद्यालय से किसी भी चीज की आवश्यकता पड़े तो आप मुझे मिल सकते हैं। वास्तव में शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारी महाविद्यालय परिवार को. अपने कार्य कुशलता और तालमेल से ही नहीं ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं।

सेवा निवरित हुए राजस्व शाखा के निम्न वर्गीय लिपिक

गया। जिला राजस्व कार्यालय, गया में पदस्थापित कार्यालय परिचारी वर्तमान पदोन्नति उदय शर्मा, जो दिनांक 31 जनवरी को सेवानिवृत हो रहे हैं। अपर समाहर्ता राजस्व गया ने उदय शर्मा, का विदाई समारोह का आयोजन किया गया है।जिसमें अपर समाहर्ता राजस्व सहित राजस्व कार्यालय के सभी अन्य कर्मी शामिल हुए हैं। विदाई समारोह में अपर समाहर्ता ने कहा कि उदय शर्मा का कार्यकाल बेहद ही अच्छा रहा। उनके द्वारा कार्यालय के सभी कार्य ईमानदारी तथा कर्मठता के साथ ससमय किया गया है। इनके बेहतर स्वास्थ्य की कामना करता हूं। उन्होंने यह भी कहा कि सरकारी सेवक जिस दिन सेवा में आता है उसे दिन ही उनका रिटायरमेंट का तिथि निर्धारित हो जाती है। उन्होंने कहा कि रिटायरमेंट के बाद अब अपने शेष बचे जीवन काल को पूरी अच्छी तरीके से जिए। स्वास्थ्य के प्रति हमेशा सहज रहे। उन्होंने बताया कि इन्होंने 27 साल से ऊपर अपनी सेवा दिए हैं। संविदा के लिए भी विभाग को पत्र समर्पित किया गया है। इसके अलावा सेवानिवृत्ति के पश्चात मिलने वाले विभिन्न लाभ यथा जीपीएफ, ग्रुप बीमा, पेंशन इत्यादि के सभी कागजातों को पूर्ण कर दी गई है। आने वाले 10 दिनों के अंदर सेवानिवृत्ति के पश्चात जो भी लाभ दिए जाने से संबंधित हैं, इन्हें मिल जाएगा।

मोबाइल फोन के निर्माण में उपयोग के लिए वस्तुओं पर सीमा शुल्क घटाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

हाजीपुर। केंद्र सरकार ने सीमा शुल्क में एक अधिसूचना के माध्यम से 3 श्रेणियों में बदलाव पेश किए हैं। मोबाइल फोन के निर्माण में उपयोग के लिए वस्तुओं पर लागू अवशिष्ट श्रेणी/अन्य पर लगने वाले सीमा शुल्क को 15 प्रतिशतसे घटाकर 10 प्रतिशत कर दिया गया है। मोबाइल फोन के निर्माण में उपयोग की जाने वाली कई वस्तुएं जिन्हें पहले अन्य माना जाता था और उन पर 15 प्रतिशत शुल्क लगता था, अब 10 प्रतिशत शुल्क लिया जाएगा। उदाहरण स्वयरूप - बैटरी कवर, फ्रंट कवर, मिडिल कवर, मेन लेंस, बैक कवर, जीएसएम एंटीना, पीयू केस, सीलिंग गैस्केट, सिम सॉकेट, स्क्रू, प्लास्टिक और धातु के अन्य यांत्रिक आइटम। इन अधिसूचनाओं द्वारा 3 श्रेणियों में परिवर्तन किए गए हैं जिनका विवरण निम्न है :- मोबाइल फोन के निर्माण में उपयोग के लिए वस्तुओं पर लागू अवशिष्ट श्रेणी/अन्य पर लगने वाले सीमा शुल्क को 15 प्रतिशत से घटाकर 10 प्रतिशत कर दिया गया है. मोबाइल के निर्माण में उपयोग की जाने वाली कई वस्तुएं जिनको पहले अन्य माना जाता था और उन पर 15 प्रतिशत शुल्क लगता था, उन पर अब 10 प्रतिशत शुल्क लगेगा। उदाहरणः बैटरी कवर, फ्रंट कवर, मध्य कवर, मुख्य लेंस, पिछला कवर, जीएसएम एंटीना, पीयू केस , सीलिंग गैस्केट, सिम सॉकेट, स्क्रू, प्लास्टिक और धातु के अन्य यांत्रिक आइटम. विनिर्माण में उपयोग के लिए इनपुट या भागों पर सीमा शुल्क इन अधिसूचनाओं में विशेष रूप से सूचीबद्ध वस्तुओं को घटाकर शून्य कर दिया गया है। मोबाइल उद्योग ने सीमा शुल्क कम करने के सरकार के कदम का जबरदस्त स्वागत किया है। यह संशोधन निर्यात-आधारित विकास, नीतिगत स्थिरता सुनिश्चित करने और विनिर्माण में प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव है, जो भारत में मोबाइल फोन विनिर्माण उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। आईसीईए के अध्यक्ष, पंकज मोहिन्द्रू ने कहा, यह भारत में मोबाइल विनिर्माण को प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण और स्वागत योग्य नीतिगत फैसला है। बिल्डिंग स्केल, कम इनपुट की टैरिफ भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए एक वैश्विक केंद्र में बदलने और निर्यात के लिए महत्वपूर्ण कदम है । मोबाइल फोन उद्योग प्रधान मंत्री कार्यालय, वित्त मंत्रालय और टी३ के प्रति अपनी हार्दिक धन्यकवाद करता है। उन्होंने यह भी कहा कि मोबाइल फोन एवं मैकेनिक्स तथा डाई-कट पार्ट्स के हिस्सों पर बीसीडी का 10 प्रतिशत और मैकेनिक्स के इनपुट पर 0% का समायोजन निर्यात-आधारित विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता की दिशा में सरकार की पॉलिसी ओरिएंटेशन में एक आदर्श बदलाव की शुरूआत का प्रतिनिधित्व करता है।

महिलाओं द्वारा ओ री चिरैया का नाटक मंचन किया गया

गया। गांधी मैदान में चल रहे मगध महोत्सव पुस्तक मेला -सह- सांस्कृतिक उत्सव पांचवे दिन मगध मेधा कंपटीशन के अंतर्गत विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इस प्रतियोगिता का शुभारंभ 11 बजे से हुआ जिसमें विभिन्न विद्यालयों के सौ से अधिक स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लेते हुए अपनी तूलिका से से पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अपनी भावनाओं को पन्नों पर दशार्या गया है। कक्षाओं के आधार पर स्कूलीय स्तरीय प्रतियोगिता को तीन भागों में बांटा गया था। इस उपस्थित जनसमूह द्वारा विद्यार्थियों के रचनात्मक कला की प्रशंसा की गई और उनके उत्साहवर्धन के लिए अपने उद्गार भी व्यक्त किये है। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में नैन्सी एवं अन्य ने प्रतिभागियों की प्रशंसा करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया गया है।

महाविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता मैं ड्रामा एक्टिंग प्रतियोगिता के अंतर्गत महाविद्यालयी छात्र कलाकारों ने विभिन्न प्रासंगिक विषयों पर एक से बढ़कर एक नाटक की प्रस्तुति दी। स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार विषय पर

दिव्या भारती द्वारा हृदय को झकझोर देने वाली नाट्य प्रस्तुति दी गई जिसे दर्शकों का भावपूर्ण समर्थन भी मिला है।संध्याकालीन सत्र में महिलाओं को समर्पित आज का दिवस पूरी आबादी शीर्षक के साथ प्रस्तुत किया गया जिसके अंतर्गत महिलाओं से जुड़ी समस्याओं पर संगोष्ठी, महिला सशक्तिकरण से जुड़े हुए कई रचनात्मक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी पूरी आबादी को सम्मान प्रस्तुत किया गया है। इस सत्र में विभिन्न नृत्य अकादमी के विद्यार्थी कलाकारों ने भाग लेते हुए समा बांध दिया है।रात्रि कालीन सत्र में ओ वोमनिया ग्रुप, पटना द्वारा ह्लओ री चिरैयाह्व का नाटक मंचन किया गया जिसका निर्देशन राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध कलाकार सुश्री रूबी खातून ने कर रही थी। इस नाटक के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक स्थिति से रूबरू कराते हुए कलाकारों ने जन समूह को प्रासंगिक संदेश देते हुए इसे एक यादगार पल बना दिया है। अतिथि के रूप में उपस्थित प्रोफेसर डॉक्टर निधि त्रिपाठी एवं प्रोफेसर डॉक्टर रन्नु रवि ने कलाकारों को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आज की किसी भी चुनौती से लड़ने के लिए सक्षम और सबल है उन्हें दया की नहीं बल्कि कंधे से कंधा मिलाकर साथ लेकर चलने की जरूरत है तभी हम इस समाज को एक सकारात्मक माहौल देते हुए आदर्श बना पाएंगे। मगध महोत्सव में महिला को समर्पित कार्यक्रम के अनुरूप महिलाओं की अच्छी खासी भीड रही साथी महिलाओं ने पुस्तकों और मेला में बिक रहे अन्य सामग्रियों के साथ-साथ खाने-पीने का भी जमकर लुफ्त उठाया है। मगध मेधा कंपटीशन के अंतर्गत विद्यालय स्तरीय भाषण,एक्टेंपोरे प्रतियोगिता का आयोजन सुबह 10 बजे से किया जाएगा ।

नई सरकार मे वैश्य नेता ललन सराफ को मंत्री बनाने की उठी मांग

गया ।नई सरकार की गठन पर हर्ष व्यक्त करते हुए गया जिला जद (यू) व्यवसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष प्रकाश राम पटवा, एवं प्रदेश नेता नीरज वर्मा ने मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को नई सरकार बनाने पर बधाई व सुभकामनाएं दी है की उन्होंने सही समय पर सही निर्णय लिया जिससे व्यवसायिक वर्ग मे व्याप्त हर्ष है ।श्री पटवा ने आगे कहा मुख मंत्री नीतिश कुमार न्याय के साथ विकाश की बात करते है ।मुख्य मंत्री का एक नारा सबका साथ सबका विकाश। डबल इंजन की सरकार मे विकाश की रफतार तेज होगी एवं जन समान्य की सुरक्षा भी सुनिश्चित होगी। पटवा ने कहा प्रदेश के व्यवसाईयों व उधमियों के सम्पूर्ण समर्थन के लिए जद (यू) के विधान पार्षद सह संयोजक वैश्य नेता ललन सरफ को नई मंत्री मंडल मे अवश्य स्थान दिया जाय ताकि व्यवसाईओ और उधमियों का सम्पूर्ण समर्थन वर्त्तमान सरकार को मिल सके।

संक्षिप्त खबरें

शिक्षक का सम्मान पूर्वक किया गया विदाई समारोह

रक्सौल। शहर के रेलवे परिसर स्थित रेलवे मिडल स्कूल में शिक्षक अवधेश प्रसाद यादव के विदाई सह सम्मान समारोह का उद्घाटन बुधवार को बीईओ रंजना कुमारी, शिक्षक छोटेलाल राय, अशोक शर्मा, हृदयेश कुमार एवं विजय कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बीईओ रंजना कुमारी ने कहा कि एक कर्मचारी या अधिकारी के जीवन का प्रत्येक क्षण समाज और परिवार के लिए होता है। जब हम नौकरी करते है तो महज एक संस्था के प्रति जिम्मेदार हो जाते है, लेकिन जब हमारी सेवा निवृत्ति होती है तो हमारा बहुमूल्य समय अपने परिवार और समाज के बीच योगदान देने के लिए व्यापक हो जाता है, जिसे हम सजाने और संवारने के लिए व्यतीत करते है। यूं तो शिक्षक कभी रिटायर्ड नही होते, उनका दायित्व बढ़ जाता है। उन्होंने रेलवे मध्य विद्यालय के वरीय शिक्षक अवधेश प्रसाद यादव के सेवानिवृत होने पर उन्हें दोशाला ओढ़ाकर सम्मानित किया तथा जीवन के शेष क्षण स्वस्थता व प्रसन्नता के साथ सामाजिक दायित्वों के कुशलतापूर्वक निर्वहन की अपेक्षा जताई। विदाई की बेला में शिक्षक के योगदानों और मिलनसार स्वभाव की चर्चा ए दौरान कई शिक्षक और विद्यालय के बच्चे काफी भावुक हो गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के एचएम गोपाल प्रसाद व संचालन राजेश कुमार ने किया तथा इस मौके पर विद्यालय परिवार व शिक्षकों ने उन्हे अंगवस्त्र व डायरी आदि सामग्री देकर सम्मानित किया। वही राजद के वरीय नेता प्रमोद कुमार राय, वरीय शिक्षक विजय कुमार, छोटेलाल राय, राजेश कुमार, प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, सुधीर कुमार यादव, इंद्रदेव प्रसाद, हृदयेश प्रसाद, नीतू कुमारी, सुभाष प्रसाद यादव, मधुकर जी, आकाश दयाल, मुनेश राम ने उन्हें फूलमाला पहना स्वागत किया, जबकि शिक्षिका वंदना कुमारी, निधि कुमारी, नसीमा खातून, मीना कुमारी, विनीता कुमारी अनिता कुमारी, अब्दुल कादिर, फिरोज आलम, प्रमोद मधुकर, प्रणय राज, विनोद कुमार ठाकुर, सोनाली रंजय, अभिलाषा सहित दर्जनों शिक्षकों उन्हे सम्मानित किया।

पांच दिवसीय युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम कल से होगा प्रारंभः प्राचार्य

नवगछिया (भागलपुर)। आर्ट ऑफ लिविंग और अर्जुन कॉलेज के बीच एमओयू होने के बाद युवा सशक्तीकरण योजना पर प्रथम पांच दिवसीय 1 फरवरी से 5 फरवरी तक कार्यक्रम का शुभारंभ होगा। कार्यक्रम का उद्घाटन जिलाधिकारी भागलपुर, पुलिस अधीक्षक नवगछिया, अनुमंडल पदाधिकारी नवगछिया एवं पुलिस उपाधीक्षक नवगछिया संयुक्त रूप से करेंगे। आर्ट ऑफ लिविंग के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बेंगलुरु से वरीय युवा प्रशिक्षक अर्जुन कॉलेज के ऑडिटोरियम हॉल में सैकड़ो छात्र-छात्राओं को निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रशिक्षित करेंगे। उक्त आशय की जानकारी कॉलेज के प्राचार्य सह अध्यक्ष नीलम ने दी है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण को लेकर छात्र छात्राओं के बीच निम्न विषय बिंदू पर प्रशिक्षित किया जाएगा। 1- मानसिक तनाव एवं भावनात्मक संतुलन हेतु मन पर नियंत्रण की विधि 2- एकाग्रचित्तता, आत्मविश्वास प्रेरणा एवं मानवीय मूल्य, 3- जिम्मेदारी पहल एवं नेतृत्व कौशल, 4- समय प्रबंधन एवं टीमवर्क, 5- स्वस्थ आदतें एवं पर्यावरण, 6- सामाजिक जिम्मेदारी एवं वैश्विक दृष्टिकोण, 7- सकारात्मक सोच, व्यवहार आत्म जागरूकता एवं सुनने की प्रभावी क्षमता, 8- प्रभावी कम्युनिकेशन स्किल एवं निर्णय लेने की क्षमता। इस कार्यक्रम में अर्जुन कॉलेज के छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त भागलपुर जिला के सभी महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएं आमंत्रित हैं।

विद्यालय के बंद कमरे से आवंटित मध्यान भोजन की ग्यारह बोरी चावल चोरों ने उड़ाये

प्रात : किरण संवाददाता

नवगछिया (भागलपुर)। नवगछिया पुलिस जिला परिक्षेत्र के भवानीपुर ओपी क्षेत्र अंतर्गत नवटोलिया गांव इलाके में इन दिनों चोरों का तांडव मचा हुआ है। इलाके में चोर गिरोह सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभा रहा है क्षेत्र इलाके में कही भी बेखौफ होकर चोरी की घटना को अंजाम दे खुलेआम स्थानीय पुलिस को चुनौती दे घटना को बड़ी सफाई के साथ घटना को अंजाम दे मौके से निकल जाता है। इसी कड़ी में विगत देर रात स्थानीय इलाके में अवस्थित मध्य विद्यालय नवटोलिया के प्रांगण में चोरों ने स्कूल भवन के बंद कमरे में रखा एक ड्रम में से ग्यारह बोरियां चावल की चोरी कर उड़ा ले गया है। वही उक्त घटना की जानकारी विद्यालय एचएम शंभु मंडल को सुबह सुबह विद्यालय पहुंचने के बाद मिली तो वही घटना के संबंध में स्थानीय विद्यालय के एचएम शंभु मंडल से बात की गई तो एचएम ने बताया कि तीन माह में चोरों ने चोरी की घटना को तीसरी बार अंजाम दिया है। घटना को लेकर अज्ञात चोरों के विरुद्ध स्थानीय पुलिस प्रशासन को अवगत कराते हुए घटना की लिखित शिकायत करने की बात कही है। मिली जानकारी के मुताबिक पूर्व में भी दो बार विद्यालय प्रांगण में चोरी की घटना को अंजाम दिया गया था। वही घटना को लेकर विद्यालय प्रबंधन के द्वारा दोनो बार स्थानीय भवानीपुर ओपी थाना पुलिस को अज्ञात के विरुद्ध आवेंदन दिया था, लेकिन पुलिस के द्वारा किसी प्रकार की कानूनी कार्यवाई किये जाने को लेकर स्थानीय लोगों के बीच आक्रोश व्याप्त है। वही मामले को लेकर एचएम ने भवानीपुर ओपी पुलिस पर आरोप लगाते हुए कहा कि विगत वर्ष सितंबर माह से अक्टूबर माह में लगातार दो बार चोरी की घटना हुई है जिसमें चोरों ने विद्यालय के बच्चों के लिए आवंटित मध्यान भोजन के खाद्य सामग्री के कुल 26 बोरी चावल, दाल, रिफाइन, मोटर, कुर्सी, दरी सहित अन्य सामान की चोरी की घटना घटित हुई है। वही स्थानीय पुलिस को आवेंदन देने के बाद भी अज्ञात चोर गिरोह के विरुद्ध पुलिस कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। वही पुलिस द्वारा विद्यालय के एचएम व शिक्षकों पर ही आरोप लगातें हुए दिखाई दे रही हैं। गौरतलब हो कि इस बार चोर ने बिना ताला काटे या खोले बिना ही विद्यालय के बंद कमरे में चोरी की घटना को अंजाम दिया है।

जमीनी विवाद के मामले में दबंगो ने खपरैल के घर को किया क्षतिग्रस्त

- थाने में मामला दर्ज नहीं किया तो पीड़ित महिला न्याय की गुहार ले पहुँची एसएसपी कार्यालय

प्रात : किरण संवाददाता

भागलपुर। जिला परिक्षेत्र इलाके में इन दिनों जमीन विवाद का मामला तूल पकड़ता दिख रहा है। जमीन विवाद मामले के निष्पादन हेतू सरकार व स्थानीय जिला प्रशासन की तमाम कोशिशों के बावजूद अनगिनत मामले कई थाना क्षेत्र इलाके से सामने आते दिख रहे हैं इसी कड़ी में एक और मामला औधोगिक थाना क्षेत्र अंतर्गत गोपालपुर गांव इलाके से सामने आया है।

जहां एक पीड़ित पिंकी देवी नामक महिला ने अपने दबंग पड़ोसी अश्विनी यादव और उसके परिवार के समर्थकों के खिलाफ पुलिस आरक्षी अधीक्षक को एक लिखित शिकायत दे न्याय की गुहार लगाई है। उसने अपने लिखित शिकायत पत्र में अपने दबंग पड़ोसी पर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके खपरैल के बने घर को अपने समर्थकों के साथ मिलकर तहस नहस कर मेरे व परिवार के साथ मारपीट करने का गम्भीर आरोप लगाया हैं। वहीं दूसरे पक्ष की महिलाओं ने इस आरोप को बेबुनियाद व निराधार बताया हैं। सूत्रों की माने तो यह विवाद जमीन से जुड़ा हुआ है जो लंबे समय से दोनों पक्षों के बीच चल रहा है। बहरहाल एसपी ने जाँच किये जाने को लेकर संबंधित थाना पुलिस पदाधिकारी को निर्देश दिये हैं।

अब यह देखना दिलचस्प होगा कि इस महिला के शिकायत पर वरीय पुलिस पदाधिकारी क्या संज्ञान लेते हुए कौन से हथकण्डे अपनी है ये सबसे सवाल पुलिसिंग कार्यशैली पर खड़े कर दिये हैं।

अवैध कब्जा के उद्देश्य ले पड़ोसी ने झूठा मुकदमा कराया दर्ज

- वादी ने डकैती, लूटपाट व गोलीबारी करने का पीड़ित पर लगाया झूठा आरोप
- सैकड़ो ग्रामीणों के हस्ताक्षरयुक्त आवेंदन को स्थानीय मुखिया व सरपंच को सौंप, पीड़ित ने लगाई न्याय की गुहार

प्रात : किरण संवाददाता

नवगछिया (भागलपुर)। पुलिस जिलांतर्गत भवानीपुर ओपी क्षेत्र के नवटोलिया गांव इलाके में अजीबो गरीब मामला सामने आया है। वही मिली जानकारी के मुताबिक मामले को लेकर बताया जा रहा है कि स्थानीय ग्रामीण कुणाल चौधरी पिता सुधीर चौधरी ने अपने हिस्सेदार विजय चौधरी उर्फ माटो चौधरी पिता स्व. नागेश्वर चौधरी पर न्यायालय में झूठा मुकदमा दर्ज कराकर बेवजह फंसाने का आरोप लगाया है, उन्होंने अपने पक्ष में सैकड़ो ग्रामीणों के हस्ताक्षरयुक्त आवेंदन को स्थानीय पंचायत के मुखिया व सरपंच को देकर मामले की जांच किये जाने की मांग को लेकर न्याय की गुहार लगाई है। वही आवेंदनकर्ता कुणाल चौधरी ने अपने आवेदन पत्र में लिखा है कि मेरे हिस्सेदार विजय चौधरी उर्फ माटो चौधरी ने नारायणपुर स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग 31 सटे 2 बीघा पुस्तैनी जमीन को जबरन हथियाने के उद्देश्य से विगत 5 जनवरी को नवगछिया व्यवहार न्यायालय में नालसी वाद का मुकदमा दर्ज कराया है। वही उनके द्वारा मेरे परिवार के 5 लोगों पर भी हथियार के बल पर घर मे घुसकर मारपीट, डकैती, लूट, तोड़फोड़ व गोलीबारी करने का झूठा आरोप लगाया है।

नालसी वाद मामले में दिये आवेदन पत्र में वादी माटो ने लिखा है कि विगत 26 दिसंबर की रात्रि करीब आठ बजे कुणाल चौधरी और उनके परिवार वालों ने आग्नेयास्त्र से लैस होकर अचानक घर घुस गया और लूटपाट, डकैती, गोलीबारी, मारपीट व तोड़फोड़ करने का बेहद ही गंभीर आरोप लगाते हुए मामला दर्ज किया है। गौरतलब हो कि कुणाल चौधरी के पिता पटना में वेटेनरी डॉक्टर थे, सपरिवार बचपन से ही पटना में पलेबढ़े हुए हैं। वही पिता के सेवानिवृत्त होने के बाद वर्ष 2017 में नारायणपुर के नवटोलिया स्थित अपने पैतृक गांव में अस्थाई रूप से निवास कर चल रहे हैं। पीड़ित कुणाल अधिकांश अपने ससुराल लखीसराय में रहते है। घर पर माता-पिता के साथ कुणाल के बड़े भाई डॉ. सुमित कुमार चौधरी रहते हैं।

घर पर ही रहकर डॉ. सुमित अपना डेंटल क्लिनिक चलाते हैं। वही उनके दो भाई बाहर रहते चल रहे हैं। वही पीड़ित कुणाल ने कहा है कि उनके व उनके परिवार वालों के ऊपर लगाए गए सभी आरोप पूरी तरह झूठी, मनगढ़ंत व कहानी बनाकर एक साजिश के तहत दर्ज कराया गया है। आवेंदन में वर्णित विगत 26 दिसंबर 2023 को हम लखीसराय में थे। वही विगत 3 वर्ष से अपने ससुराल में सपरिवार अपने बच्चे के साथ रहते हैं। विशेष आयोजन पर ही अपने पुश्तेनी घर नवटोलिया आते हैं, वही उनके परिवार सहित बच्चे के साथ लखीसराय ससुराल में रहकर पढ़ते हैं। वही दूसरी तरफ कुणाल की पत्नी का गंभीर बीमारी का ईलाज दिल्ली अपोलो से चल रहा है। वही ग्रामीणों ने कहा है कि कुणाल चौधरी और उनके परिवार वालों का कोई आपराधिक छवि नही रहा है, सभी परिवार समाज में मिल जुलकर रहते हैं। किसी तरह की किसी के साथ मारपीट या डकैती गोलीबारी जैसी घटना घटित नही हुई हैं। वही नवटोलिया के ग्रामीणों ने प्रशासन से गुहार लगाते हुए कहा है कि आरोपो की निष्पक्ष जांच कर न्यायोचित कार्यवाई की मांग रखी है। वही ग्रामीणों का कहना है कि विगत 26 दिसंबर की देर रात नवटोलिया गांव में कोई भी डकैती व गोलीबारी जैसी घटना घटित नही हुई है। वही वादी विजय चौधरी उर्फ माटो के विरुद्ध न्यायालय व प्रशासन को दिग्भ्रमित करने हेतू समाज में अकारण अशांति फैलाने व मानहानि का मुकदमा दर्ज करने की मांग की है।

बता दें कि विजय चौधरी ने सिर्फ झूठा केस ही नही बल्कि चार गवाहों के नाम के साथ भवानीपुर थानाध्यक्ष पर मुकदमा नही लेने का आरोप भी लगाया है, जो जांच का विषय बनता दिख रहा है। पीड़ित कुणाल ने कहा कि हमलोग कुछ वर्षों से ही इस गांव में निवास कर रहे हैं। वही विजय चौधरी उर्फ माटो के कब्जे वाली अपनी पुस्तैनी दो बीघा की जमीन में हिस्सेदारी के लिए गांव में पंचायत हुई थी जिससे इलाके के जन प्रतिनिधियों व समाजसेवी के बीच फैसला हुआ था, लेकिन विजय चौधरी ने पंचायत के फैसले को नही माना और एक साजिश के तहत न्यायालय में झूठा नालसी का मुकदमा दर्ज करा दिया है। ग्रामीण कुणाल ने स्थानीय प्रशासन से उन्हें व उनके परिवार वालो की सुरक्षा की मांग गुहार लगाई है।

शराब के साथ कारोबारी चढ़ा पुलिस के हत्थे

नवगछिया (भागलपुर)। झंड़ापुर ओपी पुलिस ने एलटीएफ बिहपुर के सहयोग से विगत देर शाम गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के हरियो प्लांट के समीप दबिश देकर एक शराब कारोबारी को धर दबोचा है। गिरफ्तार कारोबारी की पहचान सेंपुल कुमार पिता सुकराती पासवान के रूप में की गई है। वही पुलिस ने उसके पास से 5 लीटर देशी शराब की बरामदगी करने के साथ ही एसआई उदय कुमार साही एवं एलटीएफ बिहपुर प्रभारी हरिशंकर कश्यप के द्वारा कानूनी प्रक्रिया के तहत गिरफ्तार कर थाना लेजाया गया। वही मामले को लेकर झंड़ापुर थानाध्यक्ष अजित कुमार ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्त पूर्व में भी शराब बरामदगी मामले में जेल काट चुका है। मामले को लेकर झंड़ापुर ओपी में मद्ध निषेध एवं उत्पाद अधिनियम के तहत कांड दर्ज कर मेडिकल जांच के साथ ही न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

विदाई सह सम्मान समारोह का किया भव्य आयोजन

- शिक्षकेत्तर कर्मी को उनके सकर्मी व सहयोगियों ने दी भावभीनी विदाई

प्रात : किरण संवाददाता

नवगछिया (भागलपुर)। जीबी कॉलेज नवगछिया के शिक्षकेत्तर कर्मी प्रमोद कुमार रंजन के सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य पर महाविद्यालय प्रांगण में विदाई सह सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

इस मौके पर महाविद्यालय परिवार के सदस्यों द्वारा उन्हें पुष्प गुच्छ, अंगवस्त्र एवं अन्य उपहार भेंट से उनके सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मियों ने उनके सरल, मृदुभाषी, अनुशासन प्रिय और हमेशा मुस्कुराते रहने वाले व्यक्तित्व की प्रशंसा की, साथ ही उनके सुखद भविष्य की कामना करते हुए बेहतर स्वास्थ्य रहने की ईश्वर से दुवा मांग की। वही इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य प्रो./डॉ. शिवशंकर मंडल, डॉ. मनोज कुमार, डॉ. राजेन्द्र सिंह, डॉ. दिव्य प्रियदर्शी, प्रो. मो. मोसर्रत हुसैन, प्रो. अमित कुमार आलोक, प्रो. राजीव रंजन, डॉ. मोहिनी कुमारी, डॉ. चंदा कुमारी, डॉ. ममता कुमारी, डॉ. अभयकांत सिंह, डॉ. रतिकांत ठाकुर, डॉ. प्रवीण प्रकाश, प्रधान सहायक मो रिजवान अली, लेखापाल शेखर कुमार, चेतन कुमार, प्रिंस राज, अब्दुल रज्जाक, मनोज सिंह, अखिलेश पोद्दार, मुकेश पोद्दार, उपेन्द्र यादव, अशोक ठाकुर, चंदा कुमारी, दिवाकर ठाकुर, बिरंची यादव, दिनेश साह, विलास यादव सहित महाविद्यालय के कर्मचारियों की उपस्थिति रही थी।

धूमधाम से विदाई सह सम्मान समारोह का किया आयोजन

भागलपुर। जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय सह अस्पताल के कोरोना वार्ड व टीबी एन्ड चेस्ट विभाग के ओपीडी में कार्यरत स्टाफ नर्स व लैब टेक्नीशियन का सेवा कार्य अवधि समाप्त होने के कारण स्टाफ नर्स सुलोचना कुमारी व लैब टेक्नीशियन स्टाफ शशिभूषण महतो को उनके ही विभाग के चिकित्सकों व सह कर्मियों ने सम्मानित करते हुए भावभीनी विदाई दी। वही कारोना वार्ड में आयोजित समारोह के दौरान उपस्थित विभागीय चिकित्सकों व स्टाफ नर्स ने स्टाफ नर्स सुलोचना कुमारी को पुष्प गुच्छ व सम्मान स्वरूप उपहार भेंट देकर देकर उन्हें भावभीनी विदाई दी। वहीं विदाई सह सम्मान समारोह में अस्पताल अधीक्षक डॉक्टर राकेश कुमार, मेडिसीन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ./प्रो. अभिलेश कुमार, डॉ./प्रो. हेमशंकर शर्मा के अलावे दर्जनों चिकित्सक व कर्मी मौजूद थे। वहीं चिकित्सकौ ने उनके कार्यकाल को बेहतर बताते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

जिले में कृषि विभाग की योजनाएं लागू नहीं हो रही है धरातल पर

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। हवेली खड़गपुर में दर्जनों उर्वरक बीज योजना स्टेट बोरिंग खराब पड़े हैं उसमें लगे ट्रांसफार्मर भी चोरों ने उड़ा ले गए । हवेली खड़गपुर के कई किसानों ने बताया की स्टेट बोरिंग और उद्धव सिंचाई योजना सरकारी अधिकारियों और सरकार की लापरवाही और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई है । सरकार की ओर से इन खराब पड़ी योजनाओं को ठीक करने के लिए किसी भी तरह का आवंटन विभाग को प्राप्त नहीं है। विभागीय अधिकारी यही बराबर रोना रोह रहे हैं, यूं तो मुंगेर जिले के अधिकांश आबादी कृषि कार्यों पर निर्भर है जिले के हवेली खड़गपुर तारापुर संग्रामपुर टेटिया बम्बर असरगंज बरियारपुर मुंगेर सदर जमालपुर धरहरा प्रखंडों के किसानों की माली हालत काफी खराब हो गई है एक बड़ी आबादी वाला इस जिले में 98% जमीन मालिकों ने खेती करने से अपना मुंह मोड़ लिया है सेकंड जमीन मालिकों ने बताया कि किसानों के लागत पूंजी का 70% ही पूंजी वापस आता है इसका मुख्य रूप से कीमती दामों पर बाजारों से बी का खरीदा जाना कालाबाजारी उर्वरक मिलना और फसल की कटनी में मजदूरों द्वारा बोझ पंजा लेने को अलावा अपना मजदूरी लेना बताया जाता है। किसानों ने बताया की फसल का सरकारी मूल्य प्राप्त नहीं होना और बिचौलियों व्यापारियों के द्वारा किसानों का दोहन किया जाना भी एक कारण है जिले के किसानों को सिंचाई की समुचित व्यवस्था सरकार द्वारा नहीं किया जाना भी किसानों के आए को दुगनी नहीं कर पा रही है । जिले के अधिकांश स्टेट बोरिंग और उद्धव सिंचाई योजना सरकारी और अधिकारियों की लापरवाही से बेकार पड़े हुए हैं इन यंत्रों को सरकार और विभाग मरम्मती के लिए कोई पहल नहीं कर रहा है।

विदाई सह सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। थाना प्रभारी रोहित कुमार सिंह का संग्रामपुर थाना से लखीसराय स्थानांतरण हो जाने के बाद मंगलवार की संध्या थाना परिसर में उनके लिए विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। पुलिस कर्मियों एवं थाना क्षेत्र के प्रबुद्ध जनों के द्वारा आयोजित इस समारोह में निवर्तमान थाना अध्यक्ष रोहित कुमार सिंह को अंग वस्त्र बुके इत्यादि देकर उन्हें भावभीनी विदाई दी गई। समझ में पुलिसकर्मियों एवं निवर्तमान थाना अध्यक्ष ने अपनी गायकी से समारोह को यादगार बना दिया। इस मौके पर मौजूद थाना क्षेत्र के लोगों ने निवर्तमान थाना अध्यक्ष को एक बेहतरीन पदाधिकारी बताते हुए कहा की उनकी कार्यशैली पुलिस और पब्लिक के बीच एक बेहतर समन्वय बनाकर कार्य करने की थी। लोगों ने उन्हें एक शानदार व्यक्तित्व का धनी बताया। निवर्तमान थाना अध्यक्ष रोहित कुमार सिंह ने क्षेत्र की जनता को धन्यवाद करते हुए कहा कि यहां पर कुछ दिनों के ही कार्यकाल ने उन्हें लोगों को समझने का मौका दिया। उन्होंने कहा कि यहां की यादें उनके जीवन में हमेशा बनी रहेगी। थाना अध्यक्ष के विदाई समारोह में प्रखंड विकास पदाधिकारी अजेश कुमार, अंचल अधिकारी स्नेहा सत्यम, जमालपुर थाना के निवर्तमान थाना अध्यक्ष सर्वजीत कुमार, पूर्व उप प्रमुख सचिन कुमार, जदयू प्रखंड अध्यक्ष कमलनयन सिंह, मुखिया वीर कुंवर सिंह तथा पत्रकार गण शामिल थे।

अनपरा एवं कृष्णशीला स्टेशनों पर एनआई कार्य के कारण 02 जोड़ी ट्रेनों का आंशिक समापन

प्रात : किरण सवाददाता

हाजीपुर। धनबाद मंडल के कृष्णशीला एवं अनपरा स्टेशनों पर एनआई कार्य के कारण 02 जोड़ी ट्रेनों का आंशिक समापन/प्रारंभ चोपन स्टेशन पर/से किया जायेगा जिनका विवरण निम्नानुसार है - 01 एवं 04 फरवरी को टनकपुर से खुलने वाली गाड़ी संख्या 15076 टनकपुर-शक्तिनगर त्रिवेणी एक्सप्रेस का आंशिक समापन चोपन में किया जायेगा। 02 फरवरी एवं 05.फरवरी को शक्तिनगर से खुलने वाली गाड़ी संख्या 15075 शक्तिनगर-टनकपुर त्रिवेणी एक्सप्रेस का आंशिक प्रारंभ चोपन से किया जायेगा । 01,.02. एवं 03फरवरी को वाराणसी से खुलने वाली गाड़ी संख्या 13343 वाराणसी-शक्तिनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस का आंशिक समापन चोपन में किया जायेगा। 02,03.फरवरी एवं 04 फरवरी को शक्तिनगर से खुलने वाली गाड़ी संख्या 13344 शक्तिनगर-वाराणसी इंटरसिटी एक्सप्रेस का आंशिक प्रारंभ चोपन से किया जायेगा ।

स्नातक की छात्रा ने अपने ही गुरु समान शिक्षिका के साथ की हाथापाई

प्रात : किरण संवाददाता

सबौर (भागलपुर)। इन दिनों राजनीति बयान बाजी का असर शिक्षा के मंदिर में तूल पकड़ता दिख रहा है। इसी कड़ी में सबौर थाना परिक्षेत्र अंतर्गत सबौर महाविद्यालय प्रांगण में विगत दिनों एक छात्रा अपने कॉलेज शिक्षकोत्तर कर्मी पर काफी आक्रोशित हो गई।

जिसके बाद पूरे कॉलेज परिसर में माहौल काफी तनावपूर्ण स्थिति में तब्दील हो गया था। वही मामले को लेकर मिली जानकारी के मुताबिक कॉलेज की शिक्षिका कर्मी द्वारा हिजाब उतारने की बात कहे जाने को लेकर कॉलेज में नामांकित छात्रा उग्र हो गई और वह शिक्षिका के साथ हाथापाई पर उतर आई थी। वहीं मामले को लेकर पीड़ित शिक्षिका डॉ. श्वेता ने बताया की वह सबौर कॉलेज में अर्थशास्त्र की फैकल्टी तौर पर कार्यरत हैं और स्टाफ रूम में जब वह बैठी थी, तभी एक छात्रा अचानक आ पहुंची और उसने क्लास में शिक्षक के अनुपस्तीति की बात कही जिसपर डॉ. श्वेता ने उक्त छात्रा को चेहरे से नकाब हटाने को कहा तभी उक्त छात्रा ने कहा की यह उनके धर्म के विरुद्ध है और वह उक्त बात को लेकर अक्रोशित हो गई और शिक्षकोत्तर कर्मियों के साथ छात्रा के इस रवैए को देख उसे स्टाफ रूम से चले जाने को कहा जिसपर छात्रा ने उनके साथ हाथापाई शूरू कर दी।

इस दौरान कॉलेज के सभी विद्यार्थी एकत्रित हो गए जिस कारण पूरे कॉलेज प्रांगण के भीतर गहमा गहमी का माहौल बन गया था। हालांकि महज कुछ मीटर की दूरी पर सबौर थाना होने के कारण त्वरित पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई और पूरे मामले की जानकारी प्राप्त करने हेतू प्रभारी प्राचार्य से मिलकर जानकारी ली, जिसके बाद पुलिस ने शिक्षिका और छात्रा को थाने में लेजाया गया और उन्होंने घटना की जानकारी सबौर थाना प्रभारी विवेक जायसवाल के समक्ष साझा किया जहां थाना प्रभारी ने शिक्षिका और छात्रा को समझा बूझकर किसी तरह मामला शांत कराया है। हालांकि शिक्षिका के साथ हुई घटना के बाद वह काफी डर गई है, उसने कहा है कि अगर इसी प्रकार से कॉलेज के बच्चे व्यवहार करेंगे तो कॉलेज आना भी मुश्किल हो जाएगा। वहीं उक्त छात्रा ने अपनी गलती का पश्चाताप करते हुए शिक्षिका से हाथ जोड़कर माफी मांगी और वादा किया है कि वह इस तरह की भूल दोबारा नहीं करेगी।

वही शिक्षिका ने भी छात्रा के भविष्य को देखते हुए उसकी भूल को माफ कर दिया है, मिली जानकारी के मुताबिक बता दे की छात्रा स्नातक फाइनल ईयर में पढ़ाई कर रही है।

वही थाना प्रभारी ने दोनों पक्षों से पीआर बॉन्ड भरवाकर उन्हें अपने घर वापस भेज दिया है, जबकि वही कॉलेज के प्रभारी प्राचार्य ने भी इस घटना की निंदा की है और प्रशासन एव कॉलेज प्रबंधन से इस तरह की घटना दुबारा घटित ना हो इसको लेकर विधि व्यवस्था दुरुस्त कराने की स्थानीय पुलिस प्रशासन से गुहार लगाई है।

फरार वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी हेतू एसपी ने शुरू किया छापेमारी अभियान

- बिहपुर थाना पहुंच एसपी ने की चुनाव तैयारी की समीक्षा
- संबंधित पुलिस पदाधिकारी को दिये जरूरी दिशा निर्देश
- चुनाव के पूर्व करें तैयारी, तो नही होगी कोई दिक्कत व परेशानीः एसपी

प्रात : किरण संवाददाता

नवगछिया (भागलपुर)। नवगछिया पुलिस जिला के नए पुलिस कप्तान पूरन झा ने प्रभार लेते ही कई थाना क्षेत्रों में परिभ्रमण कर फरार व वांछित वारंटी व कुख्यात अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी अभियान शुरू कर दिया है। इस दौरान पुलिस अधीक्षक पूरन झा ने बिहपुर थाना क्षेत्र के जयरामपुर में लाइटर फाइटर गिरोह के दो फरार वांछित अपराधी की गिरफ्तारी हेतू इलाके में लगातार दबिश दी जा रही हैं, हालांकि फरार अपराधियों के संबंधित कोई भी सुराग पुलिस के हाथ नही लग पायी है, लेकिन एसपी के द्वारा क्षेत्र इलाके में अपराधियों की धर पकड़ गतिविधियों को लेकर लगातार छापेमारी कर रही हैं। वही क्षेत्र इलाके में इस कार्रवाई की गतिविधियों को देख पूरे जिला परिक्षेत्र इलाके के अपराधियों, असामाजिक तत्वों के साथ साथ उनके मुखबिर के बीच भी हड़कंप मच गया है। वही अपराधी पुलिस की सुगबुगाहट भाप कर अपना ठिकाना बदलते इर्दगिर्द भाग निकल रहे है। ज्ञात हो कि जयरामपुर व बिहपुर परिक्षेत्र इलाके में एक दशक पूर्व लाइटर फाइटर गैंग की तूती बोलती नजर आ रही थी। इस गिरोह के लोग बड़े बड़े आपराधिक कांडों को बेझिझक अंजाम देकर भूमिगत होते चले जा रहे थे। वही पुलिस के अथक प्रयासों के बाद भी इस गिरोह तक नही पहुंच पाती थी। वही पुलिस के कुशल रणनीति से आज इस गिरोह के सभी अपराधी जेल में नजर आ रहे हैं। इस छापेमारी अभियान में इंस्पेक्टर राजकुमार सिंह, इंस्पेक्टर पंकज कुमार, थानाध्यक्ष राजेश रंजन, एएसआई नवीन कुमार सिंह एवं शसस्त्र बल शामिल थे। इस दौरान पुलिस अधीक्षक पूरन झा बिहपुर थाना पहुंचे और आगामी चुनाव की तैयारी को लेकर थानाध्यक्ष एवं अन्य पुलिस पदाधिकारी को जरूरी दिशा निर्देश दिए। एसपी पूरन झा ने कहा, पूर्व से ही लोकसभा चुनाव की तैयारी में लग जाएं। समय पर सभी कार्य पूरा करें। जिससे आगे किसी तरह की दिक्कत नही हो। वही एसपी श्री झा ने बताया कि शराब विनष्टीकरण, शराब बरामदगी, टॉपटेन अपराधियों की सूची तैयार करने को कहा गया। एसपी ने बताया कि पुलिस अधीक्षक कार्यालय में सोशल मीडिया सेल बनाया गया है जिसका प्रभारी सब इंस्पेक्टर अर्चना कुमारी को बनाया गया है। वही डीआईयू में नया प्रभारी सब इंस्पेक्टर मदुसुदन कुमार को तैनात किया गया है। सभी थाना में फिर से केस का रिव्यू शुरू किया जाएगा। सभी को टारगेट दिया जाएगा जिससे कि 75 दिनों में किसी केस का शतप्रतिशत निष्पादन शुनिश्चित हो सके। वही बिहपुर थाना से निकलकर भवानीपुर ओपी क्षेत्र राष्ट्रीय राजमार्ग 31 से रँगरा ओपी तक व बाबा विशुराउत पुल से विक्रमशिला सेतु पुल तक वाहन से भ्रमण कर निगरानी की जा रही हैं।

डीन एल्गर का आरोप -

कोहली ने मुझ पर थूका था

- दो साल बाद डिविलियर्स के कहने के बाद विराट ने माफी मांगी थी

नईदिल्ली (एजेंसी)। साउथ अफ्रीका के पूर्व कप्तान डीन एल्गर ने दावा किया है कि भारत के बल्लेबाज विराट कोहली ने एक टेस्ट मैच के दौरान उन पर थूका था। एल्गर ने भी विराट को मारने की धमकी दी थी। दो साल बाद रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) टीम के साथी एबी डिविलियर्स के कहने के बाद उन्होंने एल्गर से माफी मांगी थी। एल्गर ने एक पोडकास्ट में इस बात का खुलासा किया। एल्गर ने साल नहीं बताया, लेकिन अनुमान लगाया गया कि यह 2015 में साउथ अफ्रीका के भारत दौरे के दौरान यह घटना हुई जब उनकी कोहली और आर अश्विन के साथ झड़प हुई थी।

बल्ले से मार डालूंगा - एल्गर

एल्गर ने कहा कि, जब मैं बल्लेबाजी करने आया और अश्विन गेंदबाजी कर रहे थे। उस दौरान विराट कोहली ने मुझ पर थूका। मैंने उससे कहा कि अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें इसी बल्ले से मार डालूंगा।

एल्गर को दो साल बाद फोन किया और मिलकर माफी मांगी

एल्गर ने खुलासा किया और कहा - जब डिविलियर्स को पता चला कि कोहली ने क्या किया है, तब वह उसके पास गया और पूछा, तुम मेरी टीममेट पर क्यों थूक रहे हो?

दो साल बाद साउथ अफ्रीका में, उन्होंने मुझे फोन किया और कहा कि वह सीरीज के बाद ड्रिंक के लिए मेरे साथ चल सकते हैं।

उन्होंने कहा कि वह इस हरकत के लिए माफी मांगना चाहते हैं। एल्गर ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा, हमने 3 बजे तक ड्रिंक किया और हां, वह कोहली के साथ मेरी पहली मुलाकात थी।

हाल ही में साउथ अफ्रीका और भारत के बीच दूसरे टेस्ट के बाद कोहली और एल्गर मजाक-मस्ती करते नजर आए थे। विराट ने एल्गर को रिटायरमेंट की बधाई दी और उनकी आखिरी पारी के बाद गले भी लगाया था।

भारत के खिलाफ आखिरी सीरीज खेली और संन्यास लिया

एल्गर ने दिसंबर में घरेलू मैदान पर भारत के खिलाफ साउथ अफ्रीका की दो टेस्ट मैचों की सीरीज के बाद कप्तान टेम्बा बावुमा की जगह लेते हुए इंटरेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया।

जय शाह एसीसी के चेयरमैन बने रहेंगे

एक साल के लिए कार्यकाल बढ़ाया गया

एनुअल मीटिंग में हुआ फैसला

बाली (एजेंसी)। जय शाह एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) के अध्यक्ष पद पर बने रहेंगे। उनका कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा दिया गया है। बुधवार को एसीसी की एनुअल जनरल मीटिंग में सर्वसम्मति से जय शाह का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ाया गया। मंगलवार से इंडोनेशिया के बाली में एसीसी की एनुअल जनरल मीटिंग शुरू हुई थी जो खत्म हुई। मीटिंग 2 दिन की थी। जय शाह ने 2021 में बांग्लादेश के नजमुल हसन की जगह यह पद संभाला था।

एसीसी मीडिया राइट्स फिलहाल स्टार के पास- एनुअल मीटिंग में एशिया के सभी क्रिकेट बोर्ड के सदस्यों ने हिस्सा लिए। इसमें एसीसी मीडिया राइट्स पर भी फैसला लिया जाना था, लेकिन फैसला लिया गया या नहीं अब तक इसकी जानकारी नहीं है। जिसके तहत एशिया कप जैसा बड़ा टूर्नामेंट ब्रॉडकास्ट होता है। इसी में अंडर-23, अंडर-19 और विमेंस एशिया कप के मैच भी दिखाए जाते हैं। फिलहाल डिज्नी प्लस हॉटस्टार के पास डिजिटल और स्टार के पास ही टीवी राइट्स हैं। स्टार ने 8 साल पहले राइट्स खरीदे थे। एसीसी ने मीडिया राइट्स नीलामी के लिए सभी टॉप ब्रॉडकास्टर्स को डिनर पर इनवाइट भी किया है।

एशिया कप के वेन्यू पर भी फैसला होगा

मीटिंग में एशिया कप के अगले वेन्यू पर भी फैसला लिया जाना था। अब एशिया कप 2025 में होगा, जो टी-20 फॉर्मेट में कराया जाना है। टूर्नामेंट होस्टिंग के लिए यूएई और ओमान रेस में हैं। 2023 का एशिया कप पाकिस्तान की मेजबानी में श्रीलंका और पाकिस्तान में हुआ था, जिसे भारत ने जीता था। यूएई और ओमान को एशिया कप की होस्टिंग मिलने में एक समस्या और भी है। टूर्नामेंट की मेजबानी फुल मेंबर एशियन बोर्ड को ही मिलती है और दोनों ही देश एसोसिएट नेशन हैं। हालांकि 2018 और 2022 के दौरान टूर्नामेंट यूएई में खेला गया था, लेकिन तब भारत और श्रीलंका के पास होस्टिंग राइट्स थे। ऐसे में होस्टिंग राइट्स किसी फुल मेंबर बोर्ड के पास ही रहेंगे।

1983 में हुई थी एसीसी की स्थापना

एसीसी की स्थापना 1983 में हुई थी। इस संगठन का मकसद एशिया में क्रिकेट के खेल को डेवलप करना है। इसे इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) से मान्यता प्राप्त है। फिलहाल 25 देश एसीसी के सदस्य हैं।

अफगानिस्तान के खिलाफ श्रीलंका ने

टेस्ट टीम की घोषणा की

कोलंबो (एजेंसी)। श्रीलंका ने अफगानिस्तान के खिलाफ होने वाले एकमात्र टेस्ट मैच के लिए अपनी 16 सदस्यीय टीम घोषणा कर दी है। दोनों टीमों के बीच एकमात्र टेस्ट दो से छह फरवरी के बीच कोलंबो में खेला जाएगा। नए टेस्ट कप्तान धनंजय डी सिल्वा टीम की अगुवाई करेंगे जबकि कुसल मेंडिस को उप-कप्तान बनाया गया है। टीम में दिमुथ करुणारत्ने, एंजेलो मैथ्यूज और दिनेश चंडीमल जैसे कई अनुभवी खिलाड़ियों को शामिल किया गया हैं। टेस्ट टीम में तीन नये खिलाड़ियों लाहिरू उदारा, चमिका गुणसेकरा, और मिलन रथनायके को जगह दी गई है। उदारा विकेटकीपर-बल्लेबाज हैं, जबकि गुनासेकरा और रथनायके तेज गेंदबाज हैं।

श्रीलंका टेस्ट टीम

धनंजय डी सिल्वा (कप्तान), कुसल मेंडिस (उप-कप्तान), दिमुथ करुणारत्ने, निशान मदुष्का, एंजेलो मैथ्यूज, दिनेश चंडीमल, सदीरा समरविक्रमा, रमेश मेंडिस, असिथा फर्नांडो, विश्वा फर्नांडो, कासुन राजिथा, कामिंडु मेंडिस, प्रभात जयसूर्या, लाहिरू उदारा, चमिका गुणसेकरा और मिलन रतनायके।

सरफराज या पाटीदार- दूसरे टेस्ट में किसे मिलेगा मौका

● एक का खेलना निश्चित ● शुभमन,सिराज बाहर बैठे तो दोनों कर सकते हैं डेब्यू

नईदिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में टीम इंडिया नए प्लेइंग-11 के साथ उतरेगी। टीम के बैटर केएल राहुल और लेफ्ट आर्म स्पिन ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा चोट की वजह से दूसरे मैच से बाहर हो गए हैं। मैच में सरफराज खान या रजत पाटीदार को मौका मिल सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि दोनों को डेब्यू का मौका मिल जाए, लेकिन ऐसा दो सिनेरियो में ही संभव है।

पाटीदार ने वनडे डेब्यू कर लिया है, लेकिन सरफराज को अब तक किसी फॉर्मेट में मौका नहीं मिला है। पाटीदार को विराट कोहली की जगह टेस्ट स्क्वॉड में शामिल किया गया था। पूर्व कप्तान कोहली निजी कारणों से शुरुआती दो टेस्ट का हिस्सा नहीं हैं। वहीं सरफराज को इंजर्ड राहुल की जगह टीम में चुना गया।

पहला- एक ही फास्ट बॉलर खेले, रजत-सरफराज दोनों को मौका

टीम इंडिया के दो खिलाड़ी चोट की वजह से दूसरे टेस्ट से बाहर हो गए हैं। पिछले मैच की प्लेइंग-11 के 9 खिलाड़ी फिट हैं। ऐसे में टीम इंडिया दूसरे मैच में 7 बैटर्स, 3 स्पिनर्स और एक फास्ट बॉलर के कॉम्बिनेशन के साथ उतर सकती है। इस स्थिति में रजत और सरफराज दोनों को डेब्यू का मौका मिल सकता है।

दूसरा टेस्ट विशाखापट्टनम में खेला जाएगा। जहां स्पिनर्स ज्यादा हावी रहते हैं, ऐसे में टीम किसी एक पेसर और 3 स्पिनर्स के साथ भी उतर सकती है। वहीं मोहम्मद सिराज को बाहर बैठाकर सिर्फ जसप्रीत बुमराह और 3 स्पिनर्स को मौका दिया जा सकता है। जडेजा की कुलदीप यादव खेल सकते हैं, जबकि बाकी 2 स्पिनर्स रविचंद्रन अश्विन और अक्षर पटेल रहेंगे।

सिराज को हैदराबाद टेस्ट में ज्यादा बॉलिंग का मौका नहीं मिला, ऐसे में टीम उन्हें बाहर बैठा सकती है। सिराज 2 पारियों में एक भी विकेट नहीं ले पाए थे। वहीं इंग्लैंड के इकलौते फास्ट बॉलर मार्क वुड भी कुछ खास नहीं कर सके थे। ऐसे में दूसरे टेस्ट में 2 पेसर्स को खिलाने का कोई फायदा नजर नहीं आता।

पॉसिबल प्लेइंग-11 रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल, रजत पाटीदार, श्रेयस अय्यर, सरफराज खान, केएस भरत (विकेटकीपर), रविचंद्रन अश्विन, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव और जसप्रीत बुमराह।

दूसरा- दो फास्ट बॉलर खेले, पाटीदार या सरफराज में किसी एक को मौका

पहले टेस्ट की तरह दूसरे टेस्ट में भी टीम 6 बैटर, 3 स्पिनर्स और 2 पेसर्स के साथ भी जा सकती है। जडेजा की जगह कुलदीप का खेलना लगभग कन्फर्म है क्योंकि वह ही स्पिन कंडीशन में टीम के तीसरे बेस्ट स्पिनर हैं। उनके साथ अश्विन और अक्षर स्पिनर रहेंगे, वहीं पेसर्स में बुमराह और सिराज ही खेलेंगे। इस कंडीशन में राहुल की जगह पाटीदार या सरफराज में से किसी एक को ही मौका मिलेगा। पाटीदार स्क्वॉड में पहले टेस्ट से हैं, जबकि सरफराज दूसरे टेस्ट में शामिल किए गए। ऐसे में पाटीदार को प्राथमिकता दी जा सकती है। हालांकि, देखने वाली बात ये होगी कि क्या टीम इंडिया स्पिन फ्रेंडली पिच पर फिर से 2 पेसर्स को खिलाने की गलती करेगी।

पॉसिबल प्लेइंग-11-

रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल, रजत पाटीदार/सरफराज खान, श्रेयस अय्यर, केएस भरत (विकेटकीपर), रविचंद्रन अश्विन, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज।

विष्णु सरवनन ने सेलिंग में भारत के लिया हासिल किया पेरिस ओलंपिक का पहला कोटा

एडिलेड (एजेंसी)। टोक्यो ओलंपियन विष्णु सरवनन ने बुधवार को आईएलसीए 7 पुरुष विश्व चैंपियनशिप 2024 में पेरिस ओलंपिक के लिए सेलिंग में भारत का पहला कोटा हासिल किया। ऑस्ट्रेलिया के एडिलेड सेलिंग क्लब में आयोजित वन पर्सन डिंगी स्पर्धा में सरवनन ने छह दिनों में 125 नेट अंक हासिल किए और वह ओवऑल लीडरबोर्ड पर 26वें स्थान पर रहे। हालांकि, वह पेरिस 2024 ओलंपिक के लिए कोटा सुरक्षित करने वाले नाविकों में पांचवें स्थान पर रहे।

आईएलसीए 7 पुरुष विश्व चैंपियनशिप पेरिस 2024 के लिए एक क्वालीफाइंग स्पर्धा है जिसमें उन देशों के लिए सात कोटा शामिल थे, जिन्होंने पहले ओलंपिक के लिए क्वालीफाई नहीं किया था। एडिलेड मीट में प्रस्तावित अन्य छह कोटा ग्वाटेमाला, मोंटेनेग्रो, चिली, डेनमार्क, तुर्की और स्वीडन को मिले है। एडिलेड में यह रेस 26 से 31 जनवरी तक आयोजित की गई थी, जिसमें ऑस्ट्रेलिया के कुल 152 आईएलसीए 7 वर्ग (स्मॉल सिंगल-हैंडेड डिंगी) सेलर ने हिस्सा लिया था। भारत के मोहित सैनी 329 नेट अंकों के साथ कुल मिलाकर 136वें स्थान पर रहे।

मौजूदा ओलंपिक चैंपियन ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू वेर्न ने 24.0 नेट अंकों के साथ खिताब जीता। टोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता नॉर्वे के हरमन टॉमसगार्ड 34.0 अंकों के साथ रजत पदक, ब्रिटेन के माइकल बेकेट ने 41.0 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। उल्लेखनीय है कि सेलिंग में कम अंक बेहतर होते हैं। पिछले वर्ष सरवनन ने इसी सेलिंग कैटेगरी में हांगझोऊ में आयोजित एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीता था। उन्होंने टोक्यो 2020 में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया था, जहां वह फील्ड ऑफ 35 में 20वें स्थान पर रहे थे। पेरिस 2024 में सेलिंग स्पर्धा 28 जुलाई से आठ अगस्त तक आयोजित की जाएगी।

मयंक अग्रवाल ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई

फ्लाइट में बीमार हुए थे, सूरत जाते समय तबीयत बिगड़ी

अगरतला(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेटर मयंक अग्रवाल की तबीयत मंगलवार को अचानक खराब हो गई। अगरतला से सूरत की यात्रा के दौरान फ्लाइट में उन्हें मुंह और गले में जलन होने लगी। इसके बाद उन्हें अगरतला के एक अस्पताल ले जाया गया। मीडिया के मुताबिक, अग्रवाल ने इसकी पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है।

अग्रवाल को आईसीयू में भर्ती कराया गया था। 32 माल के खिलाड़ी अब खतरे से बाहर है। अग्रवाल इस समय में चल रही 2023-24 रणजी ट्रॉफी में कर्नाटक की कप्तानी कर रहे हैं। दरअसल, अग्रवाल ने अपने मैनेजर के जरिए पुलिस में फॉर्मल कंप्लेंट दर्ज कराई थी।

बोतलबंद पानी पीते ही बीमार हुए- मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अग्रवाल को मुंह और गले में जलन की शिकायत हुई। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया। अग्रवाल को बोतल से पानी पीने के तुरंत बाद जलन हुई, जिसमें मिलावटी पदार्थ होने का संदेह है। कर्नाटक के कप्तान के साथ ही टीम मैनेजर रमेश भी विमान से उतर गए।

अगला रणजी मैच नहीं खेलेंगे- अग्रवाल की टीम कर्नाटक ने 26-29 जनवरी को अगरतला के महाराज बीर बिक्रम स्टेडियम में त्रिपुरा पर 29 रन से जीत हासिल की। कर्नाटक शुक्रवार (2 फरवरी) से सूरत के लालभाई कॉन्ट्रैक्टर स्टेडियम में रेलवे के खिलाफ मैच खेलना है। इसके लिए ही अग्रवाल सूरत जा रहे थे। वे सौराष्ट्र के खिलाफ होने वाले इस मैच में नहीं खेल सकेंगे।

अग्रवाल ने 4 मैच में 460 रन बनाए- अग्रवाल मौजूदा रणजी ट्रॉफी सीजन में अब तक जबरदस्त फॉर्म में हैं, उन्होंने चार मैचों में 460 रन बनाए हैं। इसमें दो शतक उनके नाम हैं। कर्नाटक रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप के ग्रुप सी में चार मैचों में 15 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर है, उसने दो मैच जीते हैं और एक मैच हारा है।

भारत के लिए 21 टेस्ट खेले- अग्रवाल ने 2018 में डेब्यू के बाद से भारत के लिए करियर में कुल 21 टेस्ट मैच खेले हैं। उन्होंने 21 मैचों में 41.3 की औसत से 1488 रन बनाए, जिसमें उनके नाम चार शतक शामिल हैं। भारत के लिए उनकी आखिरी पारी मार्च 2022 में श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट मैच में थी। अग्रवाल ने 5 वनडे भी खेले हैं।

आईपीएल में हैदराबाद का हिस्सा हैं अग्रवाल

अग्रवाल 2023 में शामिल होने के बाद 2024 सीजन के लिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में सनराइजर्स हैदराबाद का हिस्सा हैं। अग्रवाल ने लीग के 2022 सीजन में पंजाब किंग्स की कप्तानी भी की थी।

साक्षी मलिक ने संजय सिंह पर उठाए सवाल,बोलीं-

डब्ल्यूएफआई से सस्पेंड होने के बाद खिलाड़ियों को बांट रहे फर्जी सर्टिफिकेट, कार्रवाई करे सरकार

रोहतक (एजेंसी)। डब्ल्यूएफआई विवाद के बीच पहलवान साक्षी मलिक ने सोशल मीडिया एक्स पर एक खिलाड़ी का सर्टिफिकेट साझा कर भाजपा सांसद बृजभूषण के करीबी संजय सिंह पर सवाल उठाए। कहा कि सरकार द्वारा गतिविधियों से सस्पेंड करने के बाद भी संजय सिंह खिलाड़ियों को फर्जी सर्टिफिकेट बांट रहे हैं। जब खिलाड़ी नौकरी लेने जाएंगे तो उन पर सरकार कार्रवाई करेगी, इससे पहले अभी सरकार

संजय सिंह पर कार्रवाई करे।

साक्षी मलिक ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि भारत सरकार ने बृजभूषण के साथी संजय सिंह की गतिविधियों को सस्पेंड कर दिया था। उसके बावजूद संजय सिंह अपनी मनमर्जी चला नेशनल रेसलिंग चैंपियनशिप करवा रहे हैं। खिलाड़ियों को फर्जी सर्टिफिकेट बांट रहे हैं, जोकि गैरकानूनी है।

खेल मंत्री से अपील- खिलाड़ियों का भविष्य खराब न होने दें

डब्ल्यूएफए से सस्पेंड आदमी कैसे संस्था के पैसे का दुरुपयोग कर सकता है। कल जब खिलाड़ी इन सर्टिफिकेट को लेकर नौकरी मांगने जाएंगे तो उन पर कार्रवाई होगी। जबकि, खिलाड़ियों की कोई गलती नहीं है। कार्रवाई तो ऐसा फ्रॉड करने वाले संजय सिंह पर अभी से होनी चाहिए। जिसकी गतिविधियों पर रोक लगाए जाने के बावजूद फर्जीवाड़ा कर रहा है। मैं खेलमंत्री अनुराग ठाकुर से अपील करती हूं कि आप इस मसले को देखें और खिलाड़ियों का भविष्य खराब होने से बचाएं।

संक्षिप्त समाचार

महाविकास अघाड़ी में शामिल हो गई प्रकाश आंबेडकर की पार्टी

मुंबई, एजेंसी। प्रकाश आंबेडकर की वंचित बहुजन अघाड़ी भी अब महाराष्ट्र के महाविकास अघाड़ी गठबंधन का हिस्सा बन गई है। सोमवार को एमवीए ने पत्र जारी कर कहा कि तीनों पार्टियां (एनसीपी, शिवसेना यूबीडी और कांग्रेस) वीबीए को गठबंधन में शामिल करने पर सहमत हैं। ऐसे में इंडिया गठबंधन को लगातार मिल रहे कई झटकों के बीच थोड़ी राहत मिलती दिख रही है। महाविकास अघाड़ी ने गठबंधन की 30 जनवरी को हुई बैठक में प्रकाश आंबेडकर को आमंत्रित किया था। वहीं आंबेडकर ने अपने प्रतिनिधि और पार्टी के उपाध्यक्ष धैर्यवान पुंडेकर को मीटिंग में भेजा था। पुंडेकर ने कहा कि अगर एमवीए के नेता चाहते हैं कि उनकी पार्टी सीट शेयरिंग में शामिल हो तो उन्हें एक पत्र देकर स्पष्ट कर देना चाहिए कि अब एमवीए भी महाविकास अघाड़ी का हिस्सा है। इसके बाद ही एमवीए की तरफ से पत्र जारी कर कहा गया कि तीनों ही पार्टियां गठबंधन के लिए तैयार हैं। बता दें कि महाराष्ट्र में आंबेडकर की पार्टी के साथ गठबंधन महाविकास अघाड़ी के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। पिछले विधानसभा चुनाव में वीबीए उम्मीदवारों को भी काफी वोट मिले थे। कई जगह पर तो वीबीए ही दिग्गज नेताओं के हार की वजह बन गई। इसमें अशोक चव्हाण और सुशील कुमार शिंदे भी शामिल थे।

चुनाव अधिकारी ने गड़बड़ी से किया इनकार, पार्षदों पर लगाए आरोप

चंडीगढ़, एजेंसी। मंगलवार को चंडीगढ़ में हुए मेयर का चुनाव विवादों में घिर गया है। बीजेपी की जीत पर विपक्ष ने सवाल उठाते हुए बेईमानी का आरोप लगाया है। मतपत्रों में छेड़छाड़ के आरोपों के बाद विवाद के केंद्र में रहे पीठासीन अधिकारी अनिल मसीह का बयान सामने आया है। उन्होंने मतगणना के दौरान अपने कार्यों का बचाव करते हुए दावा किया कि आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के सदस्यों ने निशानों और धब्बों के कारण 11 मतपत्रों को बदलने का अनुरोध किया था। उन्होंने बताया, कुल 36 वोट पड़े। जब हम मतपत्र जारी कर रहे थे, तो कुछ आप और कांग्रेस पार्षद चिंतित थे कि कागजात पर धब्बे और निशान थे। उन्होंने मुझसे लगभग 11 मतपत्र बदलने के लिए कहा। मैंने उनके अनुरोध का सम्मान किया और विचाराधीन मतपत्रों को एक तरफ रख दिया और उन्हें नए मतपत्र जारी किए। मसीह के अनुसार, जब परिणाम घोषित होने वाले थे तो अराजकता फैल गई। भाजपा उम्मीदवार मनोज सोनकर को 16 वोट मिले, आप के कुलदीप कुमार को 12 वोट मिले और आठ वोट अवैध घोषित कर दिए गए। मसीह ने आरोप लगाया कि मतपत्रों को सत्यापित करने के बजाय आप और कुछ कांग्रेस पार्षदों ने व्यवधान पैदा किया। उन्होंने कहा, मैंने आप -कांग्रेस उम्मीदवार के पोलिंग एजेंट से मतपत्र की जांच करने के लिए कहा, लेकिन ऐसा करने के बजाय आप और कुछ कांग्रेस पार्षद प्रक्रिया को बाधित करने के लिए मेज पर कूद गए। उन्होंने मतपत्रों पर कब्जा कर लिया और उन्हें फाड़ दिया। आप और कांग्रेस ने चुनाव प्रक्रिया को पटरी से उतारने की साजिश साजिश रची।

हिमाचल प्रदेश में 2 महीने का सूखा खत्म, शिमला और कुफरी में बर्फबारी

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश में लंबे अरसे से पड़ा सूखा बीती रात से हो रही बर्फबारी और बारिश से समाप्त हो गया है। राज्य के पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी और मैदानी भागों में तेज हवाओं के साथ बारिश हो रही है। लाहौल-स्पीति, कुल्लू, किन्नौर, चम्बा और शिमला जिला के ऊपरी इलाकों में ताजा हिमपात हुआ है। शिमला के निकटवर्ती पर्यटक स्थलों कुफरी, नारकंडा और खड़ापत्थर बर्फबारी से सफेद हो गए हैं। पर्यटन नगरी डल्हौजी में भी बर्फ गिर रही है। लाहौल-स्पीति के प्रवेश द्वार अटल टनल रोहतांग में भारी बर्फबारी हुई है। बीती रात बर्फबारी के बीच टनल के साउथ पोर्टल में हिमाचल पथ परिवहन की एक बस और लगभग 50 वाहन फंस गए।

एमसीडी ने शुरू की बजट की तैयारी, विपक्ष ने थमाई मांगों की लिस्ट, मेयर ने किया पलटवार

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली नगर निगम के नए वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया मंगलवार से शुरू हो गई। नेता विपक्ष राजा इकबाल सिंह ने संशोधित बजट अनुमान 2023-24 और बजट अनुमान 2024-25 पर अपना अभिभाषण देते हुए चर्चा शुरू की। उन्होंने बजट पर विभिन्न सुझाव भी दिए। अब बजट पर फैसला करने के लिए 5 से 7 फरवरी के दौरान भी सदन की बैठक होगी। इसके बाद नेता सदन मुकेश गोयल 8 फरवरी को विभिन्न विभागों के लिए तय किए गए फंड और प्रोजेक्ट पर संशोधन करते हुए अंतिम बजट प्रस्तुत करेंगे। इससे पहले दिसंबर में आयुक्त ज्ञानेश भारती ने नए वित्तीय वर्ष के तहत 16,683 करोड़ रुपये का बजट पेश किया था।

बजट के संबंध में महापौर डॉ शैली ओबरॉय ने उपमहापौर आलो मोहम्मद इकबाल और नेता सदन के प्रेसवार्ता भी की। उन्होंने कहा कि दिल्ली की कई आरडब्ल्यूए और बाजार संघों के प्रतिनिधियों के साथ पार्षदों ने बैठकें की हैं। उनके सुझावों को भी बजट पर अंतिम फैसला लेते हुए शामिल करेंगे। बजट की विशेष बैठक के दौरान नेता विपक्ष ने अपने अभिभाषण में सत्ता पक्ष पर निशाना साधते हुए कई आरोप भी लगाए। इन आरोपों पर सत्ता पक्ष ने भी पलटवार किया। नेता विपक्ष ने दो घंटे

से ज्यादा समय तक बजट पर अभिभाषण दिया। इस दौरान उन्होंने शायरी के तहत सत्ता पक्ष पर निशाना साधा। उन्होंने प्रेसवार्ता में आरोप लगाते हुए कहा कि निगम की सत्ता में आम आदमी पार्टी को काबिज हुए एक वर्ष हो गया है। लेकिन उन्होंने जनता से निगम चुनाव के दौरान किए गए वादों को पूरा नहीं किया है। दिल्ली में विकास का कोई नया कार्य शुरू नहीं हुआ है। कर्मचारियों के मुद्दों का समाधान नहीं हुआ है। एक नया निगम का स्कूल नहीं खोला गया है। दस गारंटी को पूरा करने में सत्ता पक्ष विफल हुआ है। कूड़े के पहाड़ को 1 जनवरी 2024 तक खत्म करने का लक्ष्य रखा था। लेकिन यह नहीं किया गया।

नेता विपक्ष ने अपने अभिभाषण में सुझाव देते हुए कहा कि निगम के इंजीनियरिंग विभाग को सुचारू रूप से चलाने के लिए नई भर्तियों की जरूरत है। सभी पार्षदों को वार्ड में मरम्मत कार्यों के लिए पूरा सामान जैसे सीमेंट, बदरपुर, केच, जाली, मैनहोल के ढक्कन, पार्कों में फुटपाथ के लिए टाइल्स आदि उपलब्ध कराया जाए। जिससे वार्डों में मरम्मत कार्य लगातार चलते रहें। सभी पार्षदों को अपने वार्ड में विकास कार्यों के लिए कम से कम 2 करोड़ रुपये का फंड आवंटित किया जाए। विद्युत विडाग को अलग से बजट दिया जाए। जिससे दिवाली व अन्य त्योहारों के समय अंधेरे वाली जगहों को चिन्हित करें। उन्हें खत्म किया जाए। बिजली के पुराने लगे खंभों पर मरम्मत करें। निगम राजस्व बढ़ाने के उपायों का अध्ययन करें और उसके लिए एक विशेष समिति का गठन का किया जाए। जिसके बाद उस समिति की सिफारिशों पर विचार कर उन्हें लागू करें। संपत्ति कर में आम माफी योजना लाई जाए। फैक्ट्री विभाग में लाइसेंसों का सरलीकरण करें और इंस्पेक्टर राज को खत्म करे। अस्पतालों में मरीजों की सुविधा ठीक प्रकार से हो, उसके लिए अस्पताल प्रशासन के बजट को बढ़ाया जाए। निगम के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को बच्चों को दी जाने वाली छात्रवृति में वर्दी की रकम को 1 हजार से बढ़ाकर 2 हजार किया जाए। महापौर डॉ शैली ओबरॉय ने प्रेसवार्ता में नेता विपक्ष के भाषण पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हमारा मकसद है कि हम ऐसा बजट बनाएं जो दिल्ली की जनता के लिए हो। भाजपा ने सदन का माहौल मंगलवार को विशेष बैठक में शांति पूर्वक रखा क्योंकि नेता विपक्ष को राजनीतिक भाषण देना था। उन्होंने राजनीतिक भाषणबाजी की। निगम की सरकार लोगों के हितों में कार्य कर रही है। भाजपा के 15 वर्षों के शासन में जो भी कमियां रही हैं। उन्हें पूरा कर रहे हैं। इसमें समय लगेगा। महापौर डॉ शैली ओबरॉय ने कहा कि नेता विपक्ष ने अपने भाषण में गंभीरता नहीं दिखाई और शायरी के जरिए बजट पर भाषण दिया। नेता सदन मुकेश गोयल ने कहा कि मंगलवार से बजट सत्र की शुरुआत हुई है। हमें आशा थी कि नेता विपक्ष बजट पर अपने अच्छे सुझाव देंगे और दिल्ली के नागरिकों हितो में अपने सुझाव रखेंगे।

दिल्ली से तड़ीपार बल्लू पहलवान की गोली मारकर हत्या, दो हमलावरों ने चलाई 25 से 26 गोलियां

नईदिल्ली, एजेंसी।
फरीदाबाद में मंगलवार शाम करीब साढ़े छह बजे सेक्टर-11 में जिम करके बाहर निकलते समय सूरजपाल उर्फ बल्लू पहलवान की दो अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी। कार में सवार होकर आए हमलावरों ने करीब 26 गोलियां चलाई। घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। हत्या की वजह अभी पता नही चली है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। सूचना पाकर पुलिस आयुक्त राकेश आर्य भी मौके पर पहुंचे। सूत्रों के मुताबिक बल्लू पहलवान नजफगढ़ दिल्ली का रहने वाला है। वह तड़ीपार बताया गया है। मृतक की उम्र 36 वर्ष थी। वह किसी रिश्तेदार के यहां रहता था।

वह नियमित रूप से जिम करने आता था। बल्लू पहलवान रोजाना की तरह मंगलवार की शाम करीब 5 से 7 बजे जिम करने के लिए सेक्टर-11 डी डीएलएफ स्थित स्पेक्ट्रम जिम में एक्सरसाइज करने आया था। उसने अपनी बुलेट मोटरसाइकिल एचडीएफसी बैंक की पार्किंग में खड़ी की। करीब 6.20 मिनट पर जब वह जिम से अपनी मोटरसाइकिल के पास आया तभी वहां पहले से मौजूद दो लोगों ने उस पर फायरिंग कर दी। हमलावरों ने करीब 25-26 राउंड गोलियां चलाई जिस कारण उसकी मौके पर ही मौत हो गई। एक्सरसाइज करके बाहर निकलने वाली एक महिला ने पूरी घटना देखी और जिम संचालक राहुल को बताया। गोली मारने वाले दो ही लोग थे। हमले के बाद भगदड़ का माहौल हो गया। जिम संचालक राहुल ने बताया कि सूरजपाल उर्फ बल्लू पहलवान ने उनके पास आईडी दिल्ली नजफगढ़ की दे रखी थी। वह फिलहाल वाईएमसीए के पास किराये पर रहते थे। इसके अलावा उन्होंने फरवरी तक जिम करने के बारे में बताया और वह फिर वापस दिल्ली जाने की बात कर रहे थे। घटना एचडीएफसी बैंक के सीसीटीवी कैमरे की रिकॉर्डिंग हो चुकी है। पुलिस ने इसे अपने कब्जे मे लेकर जांच शुरू कर दी है।सेक्टर-11 डी डीएलएफ क्षेत्र में हुई बल्लू की हत्या की खबर सुनने के बाद पुलिस अधीक्षक राकेश आर्य सहित डीसीपी बल्लभगढ़ सहित क्राइम ब्रांच की टीमें और जांच टीम मौके पर पहुंच गई। जिन्होंने जांच पड़ताल का काम शुरू कर दिया। सेक्टर-11 के बाजार में सरेआम गोली मारकर हत्या करने की घटना के बाद लोगों में दहशत का माहौल है। जहां बदमाशों ने वारदात को अंजाम दिया, वहां काफी दुकाने हैं। एचडीएफसी बैंक के ठीक सामने यह घटना हुई है।

पास केवल 41 रुपये, फिर भी महिला ने लक्जरी होटल में बिताए 15 दिन, 6 लाख का बिल चुकाए बिना फरार

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली पुलिस ने 6 लाख रुपये की धोखाधड़ी के आरोप में आंध्र प्रदेश की एक महिला को गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस ने मंगलवार को बताया महिला दिल्ली के एयरोसिटी स्थित एक लक्जरी होटल में 15 दिन तक ठहरी और इस दौरान उस पर लगभग 6 लाख रुपये का बिल बन गया। हैरान करने वाली बात यह कि महिला के खाते में केवल 41 रुपये थे। महिला होटल स्टाफ को मूर्ख बनाकर फरार हो गई। होटल की ओर से शिकायत दर्ज कराए जाने के बाद दिल्ली पुलिस ने महिला की खोजबीन शुरू की और उसे गिरफ्तार कर लिया।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के अनुसार, झांसी रानी सैमुअल नाम की महिला को दिल्ली के एयरोसिटी के एक लक्जरी होटल में लगभग 6 लाख रुपये की धोखाधड़ी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। आंध्र प्रदेश की इस महिला के हवाईअड्डे के पास रुकने के पीछे के मकसद का अब तक पता नहीं चल सका है। दिल्ली पुलिस ने आंध्र प्रदेश पुलिस को यह जानने के लिए लिखा है कि क्या वे उसका वास्तविक पता और उसके परिवार के सदस्यों के बारे में विवरण प्रदान कर सकते हैं। एक अधिकारी ने बताया कि महिला से पूछताछ करने की कोशिश की गई है। महिला पुलिस को सहयोग नहीं कर रही है। पुलिस ने उससे बैंक खाते का विवरण दिखाने के लिए कहा, लेकिन वह ऐसा करने में विफल रही। पुलिस ने उसके पिछले खाते की जांच की तो पाया कि उसमें शेष राशि के रूप में केवल 41 रुपये थे। महिला की पहचान झांसी रानी सैमुअल के रूप में की गई है। महिला एयरपोर्ट के पास एयरोसिटी में स्थित पुलमैन होटल में 15 दिनों तक रुकी थी। उसने लगभग 5,88,176 रुपये का फर्जी लेनदेन किया था।

होटल के कर्मचारियों ने पुलिस को बताया कि महिला ने होटल की स्पा सुविधा में ईशा दवे नाम का एक फर्जी पहचान पत्र बनाया और 2,11,708 रुपये की सेवाओं का लाभ उठाया था। सैमुअल ने होटल के कर्मचारियों को दिखाया कि वह आईसीआईसीआई बैंक यूपीआई ऐप पर लेनदेन कर रही थी, लेकिन भुगतान मिलान के बाद पता चला कि बैंक को कोई भुगतान नहीं मिला है। पुलिस को शक है कि उसने जिस ऐप का इस्तेमाल किया वह संदिग्ध था। महिला ने बताया कि वह और उसका पति दोनों डॉक्टर हैं और न्यूयॉर्क में रहते हैं। आरोपी सैमुअल की ओर से साझा की गई जानकारी की अभी तक पुष्टि नहीं हो पाई है। सैमुअल को दिल्ली पुलिस ने 13 जनवरी को होटल स्टाफ की पीसीआर कॉल के बाद गिरफ्तार किया था। अधिकारी ने कहा, शुरुआत में उसे धोखाधड़ी के लिए गिरफ्तार किया गया था, लेकिन बाद में आईपीसी की धारा 419, 468 (धोखाधड़ी के उद्देश्य से जालसाजी) और 471 (जाली दस्तावेज का इस्तेमाल करना) को एफआईआर में जोड़ा गया। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

सीएम भजनलाल शर्मा ने पीएम सम्मान निधि और सामाजिक सुरक्षा पेंशन बढ़ाई

जयपुर, एजेंसी।
16वीं विधानसभा सत्र में मंगलवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश की आम आवाम को कई बड़ी सौगात दी। सीएम ने राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के जरिए करीब 2 घंटे 8 मिनट तक जवाब दिया। इस दौरान सीएम ने मासिक सुरक्षा पेंशन बढ़ाने, गेहूं की फसल पर एमएसपी पर बोनस, सम्मान निधि बढ़ाने की घोषणा के साथ पाक विस्थापित के आवास को लेकर महत्वपूर्ण घोषणा की।राजस्थान ने सीएम भजनलाल शर्मा ने पीएम सम्मान निधि और सामाजिक सुरक्षा पेंशन बढ़ाने की घोषणा की है। राज्यपाल के अभिभाषण पर विधानसभा में जवाब देते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 4 बड़ी घोषणाएं की हैं। राज्य सरकार ने किसानों को दी जाने वाली पीएम सम्मान निधि, सामाजिक सुरक्षा पेंशन और गेहूं पर बोनस में बढ़ोतरी की है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने किसानों को बड़ी सौगात देते हुए कहा

कि गेहूं की फसल पर एमएसपी पर 2700 रुपए बोनस करने की घोषणा की थी। इसे पहले चरण में हम 125 रुपए बढ़ाकर 2275 रुपए से 2400 रुपए करने की घोषणा करते हैं। सीएम ने कहा कि इससे सरकार पर 250 करोड़ का भार आएगा। 15 दिन बाद रबी की फसल आ रही हैं। उसमें किसान को फायदा मिलेगा। सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा कि पीएम सम्मान निधि में 6000 की राशि को बढ़ाकर 8 हजार रुपए करने की घोषणा की।

संकल्प पत्र में 12 हजार करने की घोषणा की थी

उन्होंने कहा कि हमने संकल्प पत्र में 12 हजार करने की घोषणा की थी, पहले चरण में हम इसे 8000 किया है। इससे सरकार पर 1300 करोड़ रुपए का अतिरिक्त भार पड़ेगा. हमने किसान से वायदा पूरा किया है। पहली किस्त में 2 हजार रुपए बढ़कर मिलेंगे। इसके बाद सीएम ने मासिक सुरक्षा पेंशन को लेकर घोषणा करते हुए कि हमने 1500 रुपए करने की घोषणा की थी, अभी 1000 रुपए मिल रहे है। पहले चरण में अप्रैल से इसमें 150 रुपए बढ़ाने की घोषणा है। अब यह 1150 रुपए मिलेगी। इससे 1800 करोड़ का भार आएगा। इसके बाद सीएम भजनलाल सरकार ने पाक विस्थापित परिवारों को लेकर बड़ी घोषणा करते हुए कि पाक विस्थापितों परिवारों को आवास सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाएगी, उनके लिए सरकार विशेष योजना लेकर आएगी।

मेक्सिको में बस व ट्रेलर की टक्कर में 19 लोगों की मौत

मेक्सिको सिटी, एजेंसी। उत्तरी मेक्सिको में माजातलान-कुलियाकन राजमार्ग पर एक डबल डेकर यात्री बस के ट्रेलर से टकरा जाने से कम से कम 19 लोगों की मौत हो गई। सिनालोआ राज्य की अटॉर्नी जनरल सारा ब्रूना क्विनोनेज़ एस्ट्राडा ने इसकी पुष्टि की। अटॉर्नी जनरल सारा ब्रूना क्विनोनेज़ एस्ट्राडा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि दुर्घटना स्थल एलोटा नगर पालिका में है। बस से अब तक 19 शव निकाल जा चुके हैं। शिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के हवाले से उन्होंने कहा, अभी भी हमारे पास यात्रा करने वाले लोगों की कुल संख्या नहीं है। बस में आग लग गई।

तालिबान शासित अफगानिस्तान के राजदूत को मान्यता देने वाला चीन पहला देश बना

बीजिंग, एजेंसी। तालिबान शासित अफगानिस्तान के राजदूत को मान्यता देने वाला चीन पहला देश बन गया है। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने मंगलवार को पड़ोसी अफगानिस्तान समेत 41 देशों के राजदूतों के परिचय पत्र प्राप्त किए, जो किसी प्रमुख राष्ट्र द्वारा अंतरिम तालिबान सरकार की पहली आधिकारिक मान्यता है। चीनी राष्ट्रपति ने क्यूबा, पाकिस्तान, ईरान और 38 अन्य देशों के राजदूतों के साथ ग्रेट हॉल ऑफ द पीपल में एक औपचारिक समारोह में तालिबान शासन द्वारा नियुक्त अफगान राजदूत बिलाल करीमी का रेड कार्पेट पर स्वागत किया और उनका परिचय पत्र प्राप्त किया। तालिबान के मुख्य प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने मंगलवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, चीन ने वह समझ लिया है जो बाकी दुनिया नहीं समझ पाई है। मुजाहिद ने अब रूस, ईरान और अन्य देशों से इसी तरह के कदम उठाने और काबुल के साथ द्विपक्षीय राजनयिक संबंधों को उन्नत करने का आह्वान करते हुए कहा, हम एकध्रुवीय दुनिया में नहीं हैं। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, शी ने नए राजदूतों से कहा कि चीन उनके देशों के साथ गहरी दोस्ती और पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग चाहता है। बता दें कि रूस और ईरान अमेरिका के कट्टर दुश्मन और चीन के सहयोगी देश रहे हैं। इधर, अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा है कि बीजिंग ने तालिबान शासन को आधिकारिक तौर पर मान्यता दी है या नहीं। यह चीनी अधिकारियों को स्पष्ट करना चाहिए। मिलर ने मंगलवार को कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ तालिबान का संबंध उनके कार्यों पर निर्भर करता है। बता दें कि अगस्त 2021 में अफगानिस्तान पर तालिबान का शासन शुरू होने के बाद दुनियाभर के देशों ने उससे संपर्क तोड़ लिए थे। किसी भी देश ने तालिबान शासन को मान्यता नहीं दी लेकिन अब चीन ने सबसे पहले तालिबान शासन को मान्यता दी है।

ऑस्ट्रेलिया को कोकीन निर्यात के मामले में ब्रिटिश-भारतीय जोड़े को 33 साल की जेल

लंदन, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया को आधा टन से अधिक कोकीन निर्यात करने पर भारतीय मूल के एक जोड़े को 33-33 साल जेल की सजा सुनाई गई है। 59 वर्षीय आरती धीर और 35 वर्षीय कवलजीतसिंह रायजादा, जिनके प्रत्यर्पण की मांग भारत ने गुजरात में उनके दत्तक पुत्र की हत्या के आरोप में की थी, को सोमवार को कोकीन निर्यात के 12 मामलों और मनी लॉन्ड्रिंग के 18 मामलों में दोषी ठहराया गया था। सोमवार को साउथवार्क क्राउन कोर्ट में एक सुनवाई के दौरान, अभियोजक ह्यू फ्रेंच ने दंपति की कार्यप्रणाली की तुलना अपराध नाटक ओज़ार्क और ब्रेकिंग बैड से की। फ्रेंच ने निर्दयी और लालची जोड़ी को औसत विवाहित जोड़े से बहुत अलग बताया। स्काई न्यूज ने उनके हवाले से कहा, यह 25 साल की उम्र का अंतर नहीं है, जो अलग ळै, यह तथ्य है कि वे अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध की दुनिया में काम करते थे। मई 2021 में सिडनी पहुंचने पर ऑस्ट्रेलियाई सीमा बल द्वारा कोकीन पकड़े जाने के बाद राष्ट्रीय अपराध एजेंसी (एनसीए) के जांचकर्ताओं ने धीर और रायजादा की पहचान की थी। ड्रग्स को यूके से एक वाणिज्यिक उड़ान के माध्यम से भेजा गया था। धातु के छह टूलबॉक्स में 514 किलो कोकीन पाई गई। अधिकारियों को पता चला कि यह खेप धीर और रायजादा के पास थी, जिन्होंने ड्रग्स की तस्करी के एकमात्र उद्देश्य से विफ्लाई फ्रेट सर्विसेज नामक एक कंपनी की स्थापना की थी। एनसीए ने सोमवार को जारी एक बयान में कहा कि दोनों प्रतिवादी जून 2015 में कंपनी के गठन के बाद से अलग-अलग समय पर कंपनी के निदेशक रहे हैं। जब्त की गई ड्रग्स वाले धातु टूलबॉक्स के प्लास्टिक रैपिंग पर रायजादा की उंगलियों के निशान पाए गए।

अमेरिका में 5000 से अधिक अभिभावकों ने टिकटॉक पर मुकदमा किया

न्यूयार्क, एजेंसी। अमेरिका में चीन के एप टिकटॉक के खिलाफ हजारों अभिभावक लामबंद हुए हैं। किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर एप के दुष्प्रभाव को लेकर 5000 से अधिक अभिभावकों ने टिकटॉक पर मुकदमा किया है। एक समय में अपने मनोरंजक सामग्रियों के लिए टिकटॉक अमेरिका में बहुत लोकप्रिय था। अभिभावक टिकटॉक को डिजिटल युग का तंबाकू से भी खतरनाक नशा बताया है। एप को किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट के लिए जिम्मेदार ठहराया जा रहा है और उसके खिलाफ जांच भी चल रही है। टिकटॉक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की शुरुआत वेबसाइट क्लेम्सहीरोडॉटआईओ के नेतृत्व में हुई थी जो अब गति पकड़ रही है। हजारों माता-पिता चीनी स्वामित्व वाली दिग्गज कंपनी के खिलाफ जवाबदेही की मांग कर रहे हैं। अमेरिका के कनेक्टिकट प्रांत के हर्टफोर्ड की रहने वाली ब्रिटनी एडवार्ड्स उन माता-पिता में शामिल हैं, जिन्होंने टिकटॉक के खिलाफ मुकदमा किया है।

रिपब्लिकन पार्टी का बाइडेन पर ईरान पर जवाबी हमला करने का दबाव

वाशिंगटन, एजेंसी।
जॉर्डन में टॉवर 22 नामक सैन्य चौकी पर एक ड्रोन हमले में कम से कम तीन अमेरिकी सैनिक मारे गए और 34 से ज्यादा घायल हो गए। इसके बाद रिपब्लिकन पार्टी (जीओपी/ग्रैंड ओल्ड पार्टी) का राष्ट्रपति जो बाइडेन पर ईरान पर जवाबी हमला करने का दबाव है। मध्य पूर्व में अमेरिकी ठिकानों पर अब तक हुए 150 मिसाइल हमलों में से, यह पहली बार है, जब आतंकवादियों ने पेंटागन की रक्षा ढाल को तोड़ दिया और सैन्य कर्मियों को मार डाला।

रिपब्लिकन की प्रतिक्रिया 2024 में सबसे आगे चल रहे जीओपी (ग्रैंड ओल्ड पार्टी के) उम्मीदवार पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा पिछले साल इस्लामिक राज्य के 6 बिलियन डॉलर के तेल राजस्व को स्थिर न करने का हवाला देते हुए, ईरान के सामने आत्मसमर्पण करने की बाइडेन की विदेश नीति की आलोचना करने के एक दिन बाद आई है।

ट्रंप ने आरोप लगाया कि सैन्य उद्देश्यों के लिए धन का दुरुपयोग किया जा रहा है, जबकि बाइडेन ने कहा कि इसके खिलाफ जांच और संतुलन है। भले ही राष्ट्रपति बाइडेन और रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने अपनी पसंद के समय और स्थान पर जवाबी हमला करने की शपथ ली हो, लेकिन हमले पर अपरिहार्य अमेरिकी प्रतिक्रिया ने मध्य पूर्व युद्ध की और बढ़ने की आशंका को बढ़ा दिया है।

क्षेत्र में तनाव पहले से ही बढ़ रहा है क्योंकि इजरायल-हमास के बीच

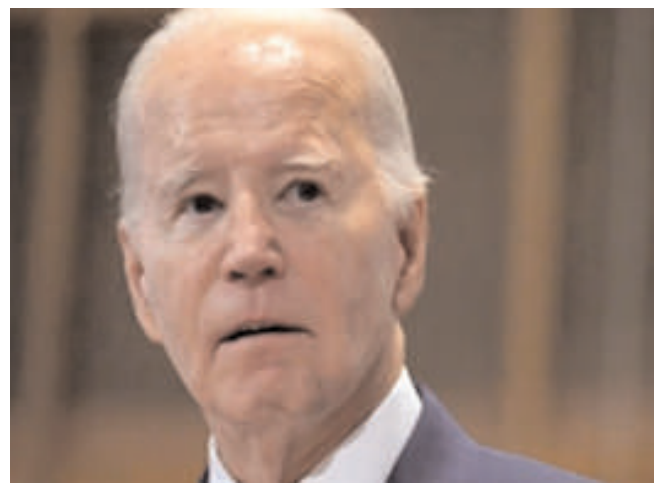

युद्ध जारी है। युद्धविराम अभी हो नहीं पा रहा है। युद्ध शेष बंधकों की वापसी के किसी भी समाधान के बिना लंबा खिंच रहा है। रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने सोमवार को नाटो महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग के साथ बैठक से पहले पेंटागन में कार्रवाई की शपथ ली। मीडिया ने ऑस्टिन के हवाले से कहा, राष्ट्रपति और मैं अमेरिकी सेना पर हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम अमेरिका और हमारे सैनिकों की रक्षा के लिए सभी जरूरी कार्रवाई करेंगे।

राष्ट्रपति बाइडेन ने भी जवाब देने का वादा किया है। लेकिन, जीओपी सांसद निश्चित रूप से राष्ट्रपति के आलोचक होंगे क्योंकि 2024 के चुनाव में बाइडेन और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का दोबारा मुकाबला निकट प्रतीत होता है। यूएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान पर सीधे हमले से कुछ भी कम, कांग्रेस में कुछ रिपब्लिकन को खुश नहीं करेगा।

रिपब्लिकन हाउस के बहुमत नेता स्टीव स्कैलिस ने कहा कि त्रासदी को टाला जा सकता था। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, अब कई वर्षों से बाइडेन ने ईरान को अरबों डॉलर भेजकर और हमारे सैनिकों के खिलाफ उनकी आक्रामकता को सहन करने के लिए प्रोत्साहित किया है। अमेरिका को ताकत दिखानी होगी। दक्षिण कैरोलिना के सीनेटर लिंडसे ग्राहम ने अधिक सीधे तौर पर बाइडेन का मजाक उड़ाया। उन्होंने कहा, मैं बाइडेन प्रशासन से ईरान के अंदर महत्वपूर्ण लक्ष्यों पर हमला करने का आह्वान कर रहा हूं, न केवल हमारी सेना के जवानों की हत्या के प्रतिशोध के रूप में, बल्कि भविष्य की आक्रामकता के खिलाफ निवारक उपाय के रूप में भी।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129